श्रीभगवान प्रासादिक वारकरी सांप्रदायिक ग्रंथमाला

पुष्प पहिले

श्रीज्ञानेश्वर महाराजांच्या समाधीचे अभंग



संत नामदेव महाराज



गीर्वाणज्योति प्रकाशन

श्रीभगवान प्रासादिक वारकरी सांप्रदायिक ग्रंथमाला

पुष्प पहिले

श्रीज्ञानेश्वर महाराजांच्या समाधीचे अभंग

संत नामदेव महाराज



गीर्वाणज्योती प्रकाशन

सातारा पुणे मुंबई

१९४३शके] प्रथमावृत्ती [२०२१ ईसवी

- **श्रीज्ञानेश्वर महाराजांच्या समाधीचे अभंग**

  संत नामदेव महाराज

- **प्रथमावृत्ती** - कार्तिक कृष्ण ११, शके १९४३,

  आळंदी यात्रा ३० नोव्हेंबर, २०२१

- **प्रकाशिका** :

  सौ. सुमित्रा शि. जाधव

  गीर्वाणज्योती प्रकाशन,

  भ्रमणध्वनी - + ९१ ९८२२० ९७५०७

  ईमेल - geerwanjyotiprakashan@gmail.com

  वेबसाईट -

  शाखा:

  १.सातारा :

  गीर्वाणज्योती, कारंजकरनगर, पारशी विहिरीजवळ,

  विलासपूर, सातारा , महाराष्ट्र - ४१५ ००१

  २.पुणे :

  एच् १०३, भास्करा सोसायटी, डीएसके विश्व, धायरी,

  पोष्ट - नांदेड, पुणे, महाराष्ट्र - ४११ ०६८

  ३. मुंबई :

  ४७, उदय को-ऑपरेटिव्ह हौसिंग सोसायटी, आरे रोड,

  अंबा माता मंदिरासमोर, गोरेगांव प.,

  मुंबई, महाराष्ट्र -- ४०० १०४

संतसाहित्य प्रकाशन समिती

- **ह. भ. प. श्री. केदार कृष्णदास महाराज नामदास**,
  संत नामदेव महाराज यांचे १७ वे वंशज, श्रीक्षेत्र पंढरपूर
- **ह. भ. प. श्री. मुरारी मुकुंद महाराज नामदास,**
  संत नामदेव महाराज यांचे १७ वे वंशज, श्रीक्षेत्र पंढरपूर
- **ह. भ. प. श्री. पुष्कर रावसाहेब महाराज गोसावी,**
  संत एकनाथ महाराज यांचे १४ वे वंशज, नाथ संस्थान, श्रीक्षेत्र पैठण
- **ह. भ. प. श्री. मारुती महाराज निगडीकर**, सातारा



श्रीज्ञानेश्वर महाराज


श्री संत ज्ञानेश्वर महाराज संजीवन समाधी आळंदी



संत नामदेव महाराज

विषयानुक्रमणिका

श्रीज्ञानेश्वर महाराजांच्या समाधीचे अभंग

अभंग १ ला

ज्ञानदेव म्हणे विठ्ठलासी | समाधान तूंचि होसी |

परि समाधी हे तुजपासीं | घेईन देवा ||१||

न लगे मज भुक्ति | न लगे मज मुक्ति |

तुझ्या चरणीं आर्ती | थोर आथी ||२||ध्रु.||

विठोजी म्हणे ज्ञानदेवा | ज्ञानसागरा अनुभवा |

वचनेंचि विसांवा | झाला मज ||३||

ऐकें ज्ञानचक्रवर्ती | तूं तंव ज्ञानाचीच मूर्ति |

परि पुससी जे आर्ती | ते कळली मज ||४||

येक येक अनुभव कृपा | पदपदांतरें केला सोपा |

तरी त्यांत माझी कृपा | सकळही वोळली ||५||

ज्ञानदेवें चरणीं मिठी | मनेसीं पडली येकी गांठीं |

दृश्यादृश्य झाली एकदृष्टी | प्रत्यक्ष भेटी विठ्ठलेंसी ||६||

कर ठेऊनी कुरवाळीं | सर्वांग न्याहार न्याहाळी |

म्हणे तुवां घेतली जे आळी | ते सिद्धीतें पावेल ||७||

नामा उभा असे सन्मुख | ऐकतां थोर खेद दुःख |

म्हणे ज्ञानांजन महासुख | समाधि घेतसे ||८||१||

अभंग २ रा

ज्ञानदेव उभा जोडोनि हस्त | भक्त पाहाती समस्त |

विठोजी म्हणे कळला स्वार्थ | या ज्ञानांजनाचा ||१||

कैसें ओळलें त्या ज्ञाना | समाधान तया ध्याना |

मना नाठवें मीतूंपणा | समाधी खुणा ज्ञानासी ||२||ध्रु.||

मग म्हणे विठोजी दातार | समाधी तुज निरंतर |

आतां प्रस्थान करीं साचार | मज निरंतर आठवीं ||३||

कैसे परिपूर्ण वोळले | आपण समाधिरूप झाले |

मनातें मन समरसलें | विठ्ठलस्वरूपीं ||४||

दशमीं प्रस्थानाचा समयो | एकादशीं जागर उत्सावो |

द्वादशीं क्षीरापती महोत्सवो | ज्ञानदेवासी केला ||५||

त्रयोदशी म्हणे पांडुरंग | कांहीं न करीं गा उद्वेग |

अलंकापुरीं समाधी प्रसंग | करीं करीं लवलाह्या ||६||

माता रुक्मिणी वाढी ताटीं | विठोजी म्हणे उघडीं दृष्टी |

तुज मज आहे नित्य भेटी | येईं पंढरीये ||७||

नामा म्हणे ज्ञानउदयो | अलंकापुरीं सिद्ध समयो |

परी विठ्ठलीं मुराला भावो | या ज्ञानदेवाचा ||८||२||

अभंग ३ रा

विठोजी म्हणे ज्ञानदेवा | तुम्ही विश्रांति मन ठेवा |
ते मुराली आमुचिया भावा | निःसंदेहे ||१||
कैसें समाधान ज्ञानदेवा | अलंकापुरीं समाधी ठेवा |
विठ्ठल ओळला वोल्हावा | नित्यरूप समाधी ||२||ध्रु.||
संत करिती महा खेद | म्हणती ज्ञानांजन उद्बोध |
मग चालिले विदग्द | अलंकापुरीसी ||३||
महावल्ली वृक्ष अजान | तो निक्षेपिला पूर्ण धन |
मग म्हणे विठोजी आपण | ज्ञानदेवासी ||४||
धन्य धन्य ज्ञानेश्वरा | पुण्यभूमि समाधिस्थिरा |
कृष्णपक्षीं तुज निर्धारा | भेटी देत जाईन ||५||
कार्तिक मासीं शुद्ध एकादशीं | पंढरी यात्रा होईल सरिसी |
दुसरी कृष्णपक्षीं निर्धारेंसी | तुज दिधली असे ||६||
हें ऐकोनी संतजनीं | जयजयकार केला ध्वनी |
दिंडीपताका मेळ गगनीं । देव सुमनें वर्षताती ॥७॥
नामा म्हणे आले वैष्णव | अलंकापुरीं मिळाले देव |
समाधी सुखें ज्ञानदेव | बैसते जाहले ||८||३||

अभंग ४ था

महाउत्सव त्रयोदशी | केला तया ज्ञानदेवासी |

मग नामा म्हणे विठोबासी | चरण धरूनियां ||१||

समाधिसुख दिधलें देवा | ज्ञानांजन अलंकापुरी ठेवा |

अजानवृक्षीं बीज वोल्हावा | या ज्ञानांजनांसी ||२||धृ.||

कृपा आली विठ्ठलासी | म्हणे ज्ञानदेवा परियेसी |

तीर्थ भागीरथी अहर्निशीं | तुज नित्य स्नानासी दिधलीसे ||३||

इंद्रायणी दक्षिणवाहिनी | भागीरथी मणिकर्णिका दोन्ही |

इया मिळालिया त्रिसंगमी | पुण्यभूमीं तुझिये ||४||

येथें जरी नित्य स्नान घडे | तरी नित्य वैकुंठवास जोडे |

तुज नाहीं नाहीं रे कुवाडें | मी कोडें उभा असे ||५||

जेथें हरिकथा नाम वाचें | जो उच्चारील विठ्ठलाचें |

तयासी पेणें वैकुंठीचें | दिधलें साचें ति अक्षरीं ||६||

आणिक ऐकें रे ज्ञानराजा | जो या सिद्धेश्वरीं करील पूजा |

तो अंतरंग सखा पैं माझा | मुक्ति सहजा झाली त्यासी ||७||

नामा म्हणे ऐसें अंतरंग | कैसा ओळला पांडुरंग |

ज्ञानदेवीं समाधी सांग | हरिपाठ कीर्तनें ||८||४||

अभंग ५ वा

सनकादिकीं मंत्रघोष | केले विधिपूर्वक पांच दिवस |

मग पांडुरंग यथावकाश | भक्ता वास महिवरीं ||१||

धन्य भूमि अलंकापुरी | ज्ञानसमाधी खेचरी |

पूर्ण परिपूर्ण श्रीहरी | आपण उभा असे ||२||ध्रु.||

संत भागवत देव्हडे | अमर उभें चहुंकडें |

नारद तुंबर पुढें | विणे वाजविती ||३||

एकीं केला जयजकार | ज्ञानदेवीं धरुनियां कर |

विठ्ठलचरणासमोर | निकट बैसतें झाले ||४||

करें कुरवाळिलें ज्ञाना | कासवीं अवलोकिला पान्हा |

आसुवें येताती नयना | तया ज्ञानदेवाचिया ||५||

विठोजी म्हणे ज्ञानांजना | तुझेनी कवित्वें हरे दारुणा |

उच्चारितां महाविघ्ना | सकळ पळतील ||६||

तुज आठविल जो भक्त | तो होईल विरक्त |

ऐसें विठोजी बोलत | येरु चरणीं रुळे ||७||

नामा म्हणे सकळ तीर्थराजा |तया कृपा कैसी केली सहजा |

एकादशीस दिधली पूजा | तया ज्ञानदेवासी ||८||५||

अभंग ६ वा

स्नानविधि केलियां भक्ती | नाममंत्राचिया आवृत्ती |

मग प्रत्यक्ष पूजिली मूर्ती | विठोबाची ||१||

धन्य धन्य तो ज्ञान | राजा निवृत्ति निधान |

विठोजी आपण | भक्तां साह्ये ||२||ध्रु.||

मग सकळहि भक्त मेळीं | सहित वनमाळी |

बैसले त्या पाळीं | इंद्रायणीचें ||३||

एकीं केलीं स्तुतिस्तोत्रें | एक जपतातीं नाममंत्रें |

एक गाताती वेदस्तोत्रें | विठोबासी ||४||

तंव पुढारा झाला नारा | तो नामयाचा पुत्र सैरा |

तो पुसतसे विचारा | नामयासी ||५||

ये संत सभेमाजीं | राउळ बैसलें असे सहजीं |

यासी पुसीजो जी कां जी | कोण क्षेत्र म्हणोनी ||६||

उठिला नामा प्रेमें डुले | वंदिलीं विठ्ठलपाऊलें |

मग करद्वय जोडोनि बोले | साशंकित ||७||

नामा म्हणे पूर्ण ब्रह्म | तें कैसें सभासदीं सम |

तें बोलतसे परम | ज्ञानदेवा भाग्य ||८||६||

अभंग ७ वा

मग सकळ प्रेम पुतळे | बैसलें माजीं ब्रह्ममेळें |
तेथें नामा वचन बोले | स्वामीप्रती ||१||

वोळलें चैतन्य सतरावें | पूर्ण नाम ओघ विठ्ठलदेवें |
पव्हे घालूनि ज्ञानदेवें | जग तारिलें कीर्तनें ||२||ध्रु.||

नामा म्हणे स्वामी सर्वज्ञ | चरणरजें पाप भग्न |
परि आमुचें मन निमग्न | पवित्र झालें ||३||

तरी स्वामीराजा विनंती | परियेसी गा माझी पुढती |
हे अलंकापुरी होती | कवणीयें युगीं ||४||

हें सांगिजो जी समर्था | कवण क्षेत्र कवण तीर्था |
येथें क्षेत्रज्ञ हा सर्वथा | कवण धर्म असे ||५||

तूं आत्माराम संपन्न | युगादि जुनाट नारायण |
तुजप्रति हें वचन | न साहे माझें ||६||

कासवीचा तूं सार गाढा | तैसा हा तुझा पवाडा |
हें पुसणें कवणिया चाडा | तें तूंचि जाणता ||७||

नामा उभा तिष्ठत प्रेमें | संत दाटलें सप्रेमें |
तेथें अनुक्रमें | सांगतसे ||८||७||

अभंग ८ वा

देवासी कळलें गौप्यगुज | म्हणे रे नामया हेंचि चोज |

तो निजभाव सहज | प्रगट सांगों आतां ||१||

कृतायुगीं क्षेत्र आदि । ज्ञानदेवा तेथें समाधि |

देव सांगतसे शुद्धि | योगबुद्धि जुनाट ||२||ध्रु.||

ऐकें भक्तजनश्रेष्ठा | भूमिनामें वैकुंठपीठा |

तें हें अलंकापुरीं श्रेष्ठा | आदि वरिष्ठा पीठ आठरा ||३||

आणिक ऐकें रे वचन | हे पंचक्रोशी पुरातन |

यासी युगें सांगतां संपन्न | चतुरानन जाणतसे ||४||

कांहीं एक किंचित सांगों | युगसंख्या मार्गात रिघों |

तरी वैवस्वतु हाचि मागो | पूर्ण वोळंगों यापासुनी ||५||

एक मनु सहस्रयुग संख्या | तैं अलंकापुरीं आदि लक्षा |

कोटी याग असंख्या | सहस्र दक्ष येथें ||६||

आदि क्षेत्र संख्यारहित | ऋषिमुनीं तपती सत्य |

आणि नारदमुनि असे सांगत | हेचि पुरी पुरातन ||७||

नामा म्हणे कैसें दिधलें | हें ज्ञानासी सिद्ध लाधलें |

तेंचि आम्हासी जोडलें | पूर्ण लाधलें पियुष ||८||८||

अभंग ९ वा

देव म्हणे नामया | ऐकें येथें चित्त देउनियां |

एकएक तीर्थ सांगावया| हें तों पुराणीं असे ||१||

न कळे देवाची थोरी | कैसें पुढारिले मुरारी |

गौप्यगुज श्रीहरी | सांगतसे नामया ||२||ध्रु.||

पुराणीं म्हणसी कोण कथा | तरी ऐकें गा तूं सकळार्था |

शैवशास्त्रीं हा ग्रंथ सर्वथा | सिद्‌ध मार्ग असे ||३||

जें जें जुनाट तीर्थक्षेत्र | जें जें ब्रह्मनामें परमार्थ |

तें तें सांगितला हेत | चतुराननें ||४||

ऐसें देवामुखींचें वचन | ऐकतां संतोषले पूर्ण |

मग देताति आलिंगन | एकमेकांसी ||५||

जयजयकाराचा ध्वनी | विठ्ठल नामें गर्जे वाणी |

प्रेम ओसंडत नयनीं | स्फुंदन रोमांचित दाटले ||६||

स्फुंदत नामा नाचे गाये | परिसा म्हणे वोळली मायें |

तो ज्ञानासी पान्हा होये | पूर्ण बोधाचा ||७||

नामा म्हणे सकळ संतमेळीं | कथा सांगितली रसाळीं |

तंव ज्ञानदेवा करतलामळीं | समाधी शेज घातली ||८||९||

अभंग १० वा

मग म्हणे सर्वज्ञ विठ्ठल | न लावावा वाढ वेळ |

मग पातले निर्मळ | सिद्धेश्वरलिंगीं ||१||

धन्य धन्य हरिदिवस | धन्य धन्य हा निवास |

आपण हृषीकेश | भक्ता साह्य ||२||ध्रु.||

वैष्णव मीनले संपन्न | गाती हरिनाम कीर्तन |

तंव पातले सोपान | प्रेमें वोसंडत ||३||

चरणीं घातली मिठी | विठोजी म्हणे उठीं उठीं |

लवलाहे उघडीं दृष्टी | भेटीं ज्ञानदेवा ||४||

येरु म्हणे मी कृतकृत्य | नामस्मरण तुझें नित्य |

तेणें सकळही हित | आमुचें झालें ||५||

तूंचि गा जनकजननी | तूंचि एक त्रिभुवनीं |

पाहतां नित्य उन्मनीं | लागें आम्हां ||६||

समाधी सेज ज्ञानासी | तुंवा घातली अहर्निशीं |

ते कर्णीं परिसत जीवेंसी | चरण धरीत आलों ||७||

नामा म्हणे ज्ञान सोपान | एक झाले जनीं जनार्दन |

समाधी संगें संजीवन | अलंकापुरीसी आले ||८||१०||

अभंग ११ वा

तंव निवृत्तीसी उन्मनी | बैसका होती सप्तदिनी |

ते पालटोनि तत्क्षणीं | श्री मूर्तिते न्याहाळी ||१||

निवृत्ति निधान | सोपान निजधन |

ज्ञानदेव आपण | तिन्ही मूर्ती ||२||ध्रु.||

कोण भाग्याचे संतुष्ट | जेथें प्रगटलें वैकुंठ |

विठ्ठलनामें पूर्ण पाठ | अलंकापुरीसी ||३||

आदिक्षेत्र जुनाट | युगें सांगतां उद्भट |

जे कां पुण्यरूप प्रगट | सांगतसे महिमा ||४||

ऐसा उत्साह गमला | निवृत्ति ध्यानीं निवाला |

सोपान आलिंगिला | ज्ञानराजें ||५||

निवृत्ति पाहे ज्ञानाकडें | येरू धांवे लवडसवडें |

चरणरजामाजीं बुडे | मन निमग्न केलें ||६||

तिन्ही देव एकत्र | सत्वरजतमादि मंत्र |

हें गाताती नर जे स्तोत्र | ते उद्धरती सर्वदा ||७||

नामा म्हणे तिन्ही देव | मिळाले गुणसागर वैभव |

समाधीसेज माधव | देतु ज्ञानदेवा ||८||११||

अभंग १२ वा

हस्त ठेवी माथया | ज्ञानदेव लागे पायां |

विठोजी म्हणे लवलाह्या | समाधीस बैसावें ||१||

इंद्र चंद्र देव येती | ब्रह्मादिक गीतीं गाती |

यमवरुणबृहस्पती | विमानें दाटती अंतरिक्षीं ||२||ध्रु.||

तंव पातले गरुडदेव | रुक्मिणी सत्यभामा भाव |

राही माता गोपी सर्व | समाधी ज्ञानदेव पहावया ||३||

इंद्रचंद्रप्रजापती | सर्व अंतरिक्षीं पाहाती |

अलंकापुरीं ये श्रीपती | हरुष चित्तीं ज्ञानदेवा ||४||

ऋषिमुनी गणगंधर्व | पिशाच गुह्यक सर्व |

ध्रुव अंबऋषि माधव | चित्तीं भाव पहावया ||५||

ऐसीं दाटलीं विमानें | हें संतीं जाणितलें ज्ञानें |

ज्ञानदेव ब्रह्म होणें | हें विंदान विठ्ठलाचें ||६||

जयजय शब्दें ध्वनी गर्जे | तेणें स्वर्गमृत्युपाताळ गाजे |

पाताळीं शेष म्हणे भुंजे | प्रेम फुंजें न समाये ||७||

नामा म्हणे शिवादिक | सिद्धेश्वरीं मिळोनि सकळीक |

पाहती विठ्ठल कौतुक | ज्ञानदेव समाधीचें ||८||१२||

अभंग १३ वा

वेदध्वनी केलीया मुनी | गंधर्व गायनें होती गगनीं |

ब्रह्मादिक इंद्र विमानीं | इंद्रायणी ज्ञानदेवी ||१||

लागलिया मंगळतुरे ध्वनी | तीर्थें असती उभीं कर जोडुनी |

विठ्ठलदेव ज्ञान संजीवनीं | नयनीं न्याहाळिती ||२||ध्रु.||

राही रखुमाई माता | सत्यभामा गोपी समस्ता |

आरतिया ओंवाळिती निभ्रांता | ब्रह्मत्वरिता ज्ञानदेवा ||३||

देवऋषिगण सकळ | जयजयकार ध्वनी मंजुळ |

स्तुतिस्तोत्रें सकळ | नक्षत्रादि गाती ||४||

वरुषती दिव्यसुमनें | निवृत्ति सोपान नारायणें |

संबोखिलें संजीवनें | नित्य पारणें हरिपाठें ||५||

परिसा भागवत डुल्लत | विठ्ठलीं झाला कृतकृत्य |

नामा असे शोकाकुलित | चरणीं रत विठ्ठलाचे ||६||

सेज घालुनी सुमनीं | विठ्ठल पाहे रुक्मिणी |

ज्ञानदेवाचे गुण मनीं | आठवती मनी हरि ||७||

नामा झाला भयभीत चित्तें | ज्ञानासारखें रत्न मागुतें |

न देखों ऐसें विठ्ठलातें | पुसे त्वरित रुक्मिणी ||८||१३||

अभंग १४ वा

देवो म्हणती रुक्मिणी | हाचि एक योगी देखिला नयनीं |
हेंचि ज्ञानसंजीवनी | जाण त्रैलोक्यासीं ||१||

धन्य धन्य धरातळीं । जो यातें दृष्टीं न्याहाळी ।
तो वाहात येईल टाळी । वैकुंठभुवनासी ॥२॥ध्रु.||

जो करील याची यात्रा । तो तारील सकळ गोत्रां ।
सकळही कुळें पवित्रा । याचेनि दर्शनें होती ॥३॥

अलंकापुरीं हें शिवपीठ । पूर्वी येथें होते नीळकंठ ।
ब्रह्मादिकीं तप वरिष्ठ । येथेंचि पैं केलें ॥४॥

इंद्र येऊनियां भूमिसी । याग संपादिले अहर्निशी ।
इंद्रायणी इंदोरिसीं । पंचक्रोशी या पासुनि ॥५॥

येथें त्रिवेणी गुप्त असे । भैरवापासूनि भागीरथी वसे ।
पूर्ववटीं जे माया दिसे । ते प्रत्यक्ष जाण पार्वती ॥६॥

भोवती वनवल्लिवृक्ष । येथें देव येऊनि होती पक्ष ।
हे असे नित्यसाक्ष । अस्थी नासती उदकीं ॥७॥

हें पंढरीहुनी सोपें । जनाचीं हरावया पापें ।
कळिकाळ कोपलियां कोपें । न चाले त्याचें अलंकापुरीसी ॥८॥

ऐसें सांगतां हरिसी । प्रेम ओसंडलें रुक्मिणीसी ।
म्हणे धन्य धन्य जयाचे कुसीं । ज्ञानदेव जन्मले ॥९॥

नामा म्हणे माझा स्वामी । सवें संतसमागमीं ।
ऐसें सांगितलें ग्रामीं । अलंकापुरीसी ॥१०॥१४||

अभंग १५ वा

तंव पुसती होय माता । तुम्हीं झणें खेद करा चित्ता |
तरी ज्ञानासारिखा कां आतां । समाधीसी बैसविता ॥१॥

हे सांगावें सविस्तर । यांचे कोण कोण अवतार ।
बंधु त्रिवर्ग साचार । आणि ते भगिनी ॥२॥

देव म्हणती ब्रह्मा होय । सोपानदेव नेणसी काय ।
निवृत्ति शिव ज्योतिर्मय । ज्ञानदेव ब्रह्म निघोट ॥३॥

ऐसे ब्रह्मा विष्णु हर । मुक्ताई ते मूळमाता साचार ।
तारावया चराचर । कलीमाजीं अवतरले ॥४॥

रुक्मिणी पुसे देवासी । कां कलीमाजीं जन दोषी ।
हे घातली देवा पुसी । ते सांगती महाविष्णु ॥५॥

तरी ऐकें हो साचार चित्तें । तूं काय नेणसी त्या व्यासातें ।
ग्रंथीं सांगितलें भारतें । कलीमाजीं जन दोषी ॥६॥

कृष्ण अवतार झाला । पांडवीं निजठाव ठाकिला ।।
तेथून एक शक जाला । जनमेजयापासूनि ॥७॥

तयामागें विक्रमशक । पुण्यपवित्र सकळ लोक ।
कलियुगीं पुण्यश्लोक । उज्जनिये नांदती ॥८||

तेणें एक शत पंचतीस । हरिले कळिकाळदोष ।
पुढे शालिवाहन व्हावयास । अवतार जाण पैठणीं ॥९॥

तो हा शालिवाहन । अठरा हजार जाण ।
ते क्षेत्र प्रतिष्ठान । गंगातीरीं प्रत्यक्ष ॥१०॥

या शकामाजी प्रथम । राजा भोज उत्तम ।

मग पुण्यपुरुष जन्म । थोडे घेतील कलियुगीं ॥११॥

राजे भ्रष्ट यवन झाले । ठायीं ठायीं दोष घडले ।

मग इहीं अवतार घेतले । कलिदोष हरावया ॥१२॥

रुक्मिणी म्हणे स्वामी । सत्य सांगितलें तुम्ही ।

पुराणप्रसिद्ध आम्ही । अवतार चरित्र जाणतसों ॥१३॥

नामा म्हणे पुढें हें जन । यवनसंसर्गे कठीण ।

होतां गातां हरीचे गुण । ते उद्धरती सर्वथा ॥१४॥१५||

अभंग १६ वा

पुष्पक विमानातळीं । हरि उतरले भूतळीं ।

तंव उदयो पूर्वमेळीं । सूर्याचा झाला ॥१॥

धन्य धन्य प्रश्नोत्तर । धन्य धन्य ते तरूवर ।
धन्य ज्ञानदेव अवतार । तिन्ही देव प्रगटले ॥२॥ध्रु.||

संत सनकादिक देव । आणि भक्त आले सर्व ।

स्नानें करूनियां भाव । हरिचरणीं ठेविला ॥३॥

विलाप मांडियेला भक्तीं। खंति करिती त्रिजगतीं ।

ज्ञानदेवासारिखी मूर्ति । न देखों म्हणती देवराया ॥४॥

देव म्हणती निवत्ति । तूं प्रत्यक्ष शिवमूर्ति ।
तारावया सकळ क्षितीं । अवतार धरियेला ॥५॥

सोपानें घातलें लोटांगण । मुक्ताईनें धरिलें चरण ।

संत करिताती स्तवन । पांडुरंगरायाचें ॥६॥

मग संबोखूनियां हरी । सोपानदेवा धरिला करीं ।

निवृत्ति मस्तकावरी । करकमळ हरि ठेवितसे ॥७॥

नारा विठा पुढें चाले । ऐसें इंद्रायणीस आले ।
सौंदडी वृक्षातळीं बैसले । सपरिवारें सकळ भक्त ॥८॥

न्याहाळिती कांसवदृष्टी । ऐसा हरि चालत सृष्टी।
नामा होतसे हिंपुटी । ज्ञानदेवाकारणें ॥९॥१६||

अभंग १७ वा

तंव अंतरिक्ष गगनीं । अवचिती जाली आश्रीणी ।

भक्त तरतील मेदिनी । ज्ञानदेव दरुषणें ॥१॥

धन्य धन्य वृक्ष अजान । धन्य धन्य सिद्धेश्वरस्थान ।

ज्ञानदेवा समाधान । धन्य आळंकापुरी ॥२॥ध्रु. ||

ऐसी आश्रीणी वदली । जयजयकारें टाळी पिटीली ।

तंव स्नानसंध्या सारिली । देवभक्तीं सकळिकीं ॥३॥

मग पाहोनियां शुभदिन । देवें करूं आदरिलें प्रयाण ।

नामा होतसे खेदक्षीण । ज्ञानदेवाकारणें ॥४॥१७||

अभंग १८ वा

मग प्रश्न आदरिला । नामा स्फुदों जो लागला।

कां गा ज्ञानदेवो गेला । मज सांडुनियां ॥१॥

कैसा होय तुझा दास । कैसी पाहों तुझी वास ।

ज्ञानाकारणें कासाविस । जीव माझा होतसे ॥२॥ध्रु.||

देव म्हणे नामयासी । तूं झणीं कासाविस होसी ।

तूं रें तयातें नेणसी । तें कैसें आईक ॥३॥

ज्ञानदेव ज्ञानसागरू । ज्ञानदेव ज्ञानआगरू।

ज्ञानदेव भवसिंधुतारूं । प्रत्यक्ष रूपें पैं असे ॥४॥

ज्ञानदेवी ज्ञानगम्य । ज्ञानदेवी ज्ञानधर्म्य ।

ज्ञानदेवी ज्ञाननेम । सर्वथैव पैं असे ॥५॥

ज्ञानदेव हाचि देव । ज्ञानदेवीं धरिलिया भाव ।

ज्ञान होईल जीवां सर्व । यासी संदेह पैं नाहीं ॥६॥

ज्ञानदेवीं धरितां ध्यान । ध्यातां होय समाधान ।

जीव शिवीं परिपूर्ण । एक रात्री कीर्तनें ॥७॥

झणे तूं व्याकुळ होसी चित्तें । मनीं आठवी गा मातें।

नामस्मरणें एका चित्तें । रामकृष्ण गोविंद ॥८॥

नामा म्हणे तूं समर्थ होसी । अर्जुनीं प्रीति करिसी ।

हे सांगितलें व्यासीं । एकादशाध्यायीं ॥९॥

शिव पावे तूं विश्वेशा । विश्वरूपा जगन्निवासा ।

मी होतसे कासाविसा । ज्ञानदेवाकारणें ॥१०॥

तरी तूं गा युगानयुगीं । अससी भक्तांचिया संगीं।
आम्ही विनटलों पांडुरंगीं । रंगारंगीं विट्ठलीं ॥११॥
एक वेळ माझा शोक । दुरी जाय हरे विख ।
तें करी निर्विशेष । नामा येतसे काकुलती ॥१२॥१८||

अभंग १९ वा

तंव नावेक श्रीहरी । तटस्थ घटिका चारी ।

ध्यान धरूनि अंतरीं । निश्चळ राहिला ॥१॥

जयजयशब्दे नामा बोभाये । केशवा गा त्राहे त्राहे ।

मी व्याकुळ होत आहे । ज्ञानदेवाकारणें ॥२॥ध्रु.||

नारायणा त्राहे त्राहे । कृपादृष्टी तूं रे पाहे ।

मी व्याकुळ होत आहे । ज्ञानदेवाकारणें ।।३||

तुझेनि दरुशनें । ज्ञानाचेनि अवलोकनें ।

मज पंढरीस असणें । तुझे चरणीं गा विठ्ठला ॥४॥

ज्ञानदेवावीण कदा काळीं । मज न कंठवे भूमंडळी ।

आतां मज तूं सांभाळी । भानुसहित वर्ततां ।।५॥

तूं माझी जनक जननी । परि ज्ञानदेवावीण मेदिनी ।

शन्य वाटे हे धरणी । जैसे मत्स्य जीवनेंवीण ।।६॥

तूं रक्षिता सर्व जीवांसी । तरी कां दुःख दिधलें आम्हांसी ।

तूं जवळी असतां हृषिकेशी । ऐसी दशा हे प्राप्त ।।७॥

नामा खेदें क्षीण जाला जीवें । तंव नेत्र उघडिले देवें ।

आलिंगिला केशवें । चारी भुजा पसरोनी ॥८॥१९||

अभंग २० वा

नामा न राहे खेद करूं । केशव ठेवी अभयें करू ।

म्हणे तूं दुःखिया होसी थोरू । ज्ञानदेवाकारणें ॥१॥

धन्य धन्य तुम्ही भक्त । नित्य विष्णुचरणी रत ।

पुण्यशील भाग्यवंत । ज्ञानदेव नामया ॥२॥ध्रु.॥

तुमचेनि जन हे कृतार्थ । कवित्वें तरेल हें सत्य ।

माया मोह निरसे समस्त । नामस्मरणें तुमचेनी ॥३॥

धन्य ज्ञानदेव ज्ञानशीळ । ज्ञानदेवा ऐसा सुढाळ ।

मी न देखें भूमंडळ । सकळहीं पाहतां ॥४॥

तूं करिसी खेद त्याचा । तरी तो माझा आत्मा साचा ।

भाव सांडीं सांडीं द्वैताचा । निखळ रूपें पाहे पां ॥५॥

तुम्ही भक्त अवघे आवडते । तुमचेनि साजिरे पूर्णचित्तें ।

मज पंढरिस येणें आवडतें । नाम गाताती ये प्रीतीं ॥६॥

पुंडलिक माझा भक्त सखा । परी प्रेमळ तुम्ही विशेषा ।

तुमचेनि सर्व दुःखा । हरलों मी हें जाणावें ॥७॥

नामा म्हणे ज्ञानदेवाचें । मज दर्शन होईल साचें ।

तरीच रंगणीं मी नाचें । श्रीहरिकीर्तनीं पंढरीसी ॥८॥२०॥

अभंग २१ वा

ऐसें परियेसिलें विठलें । तंव रुक्मिणीने विनविलें ।

याचे करिजो जी म्हणितलें । हाकारिजो पुंडलिका ॥१॥

धन्य धन्य धरातळीं । जो या लोकालोक वनमाळी ।

वैष्णवीं पिटीली टाळी । जयजय शब्दें करूनियां ॥२॥ध्रु.॥

गरुडासी सांगे केशव । कैसा यासी भेटेल ज्ञानदेव ।

पुंडलिकासी जाऊनी सर्व । वृत्तांत सांगे येथींचा ॥३॥

तेणें नमस्कार करूनि हरी । निघाला पक्षाचां फडत्कारी।

भेटला पुंडलिका झडकरी । यथाविधीनें सांगितलें ॥४॥

पुंडलिक विस्मित चित्तीं । म्हणे धन्य धन्य ज्ञानमूर्ती ।

ज्या कारणें वैकुंठपती । अलंकापुरीसी गेले ॥५॥

धन्य धन्य विठोबाचे चरण । धन्य धन्य माझे नयन ।

धन्य नामरूपीं संपन्न । विष्णुभक्त सखा माझा ।।६॥

मग गरुडासि पूजिलें । ज्ञानदेवासी हाकारिलें ।

दिव्य विमानीं बैसविलें । चला म्हणितलें अलंकापुरीसी ॥७॥

नामा असे खेद करीत । केशव तयासी संबोखित ।

तुम्हा दोघांचा एकांत । माझेनि संगें पुरेल ॥८॥२१॥

अभंग २२ वा

पुढें चालिला गरुड । आक्रमित अवघें ब्रह्मांड ।

मागें विमान शुभ्र प्रचंड । पुंडलिक आणितसे ॥१॥

धन्य हरिभक्तांचा मेळ । धन्य धन्य तो गोपाळ ।

धन्य अलंकापुरी सुढाळ । ज्ञानदेव येतसे ।।२।।ध्रु.||

दुरोनी लक्षित रुक्मिणी । हरूषें सांगे चक्रपाणि ।

पैल विमान येतसें गगनीं । दाखविजे नामया ॥३॥

मग नामयासी सावध । करूनियां तो गोविंद ।

म्हणे तुझा पुरविला छंद । पैल ज्ञानदेव येताहें ॥४॥

नेत्र विकासित पाहें । तंव गगनीं विमान दिसताहें।

पुंडलिक गरुड आहे । दिव्य देहीं दिव्य विमानीं ॥५॥

ऐसा जंव तटस्थ घटिका । तंव उतरलें निमिष एका ।

नामा पावला संतोषा । ज्ञानदेवा देखोनी ॥६॥

विमान घंटिका गर्जत । नामदेव पुढारा चालत |

जी जी रुक्मिणी म्हणत । वेगु कीजे ज्ञानदेवा ॥७॥

नामा ज्ञानदेव भेटले । पुंडलिकें विष्णु नमस्कारिलें ।

भक्तीं जय जय शब्द केले । देवीं पुष्पवृष्टि केलिया ॥८॥२२||

अभंग २३ वा

आलिंगन पडिलें दृढ । मिठी पडिली न सुटे गूढ ।

पुंडलिक म्हणे मज चाड । या विठ्ठलचरणाची ॥१॥

तुझे दरुषणें माझा लाभ । जैसा ज्ञानदेवावरी लोभ ।

नामयावरी स्वयंभ । तैसाचि करीं गा विठ्ठला ॥२॥ध्रु.||

नामदेवें आलिंगुनी प्रीतीं । शिर चरणावरी अवचितीं ।

ज्ञानदेवाच्या ठेवी पुढतीं । म्हणे धन्य क्षितीं मी एक ॥३॥

पुंडलिक म्हणे नामया । धन्य धन्य तुझा थाया ।

क्षितीं आणिलें वैकुंठराया । ज्ञानदेवाचेनिं स्मरणें ॥४॥

धन्य युगानुयुगीं तुम्ही । धन्य देखिलेती रे आम्हीं ।

धन्य अलंकापुरी जन्मीं । उपजोनी जो देखेल ॥५॥

पंढरीहुनी हें मूळपीठ । जुनाट पैं वैकुंठ ।

पूर्वी येथें होते नीळकंठ । ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्र ॥६॥

तें हे शिवक्षेत्र प्रत्यक्ष । पूर्वे मातुर्लिंग साक्ष ।

तेथेंहि केशव प्रत्यक्ष । चतुर्भुजरूपें असे ॥७॥

दक्षिणें पुण्येश्वर देवो । पुण्यस्थळ महादेवो ।

मूळपीठीं नागेंद्रीं पहा हो । त्रिवेणीरूपी वाहातसे ॥८॥

पश्चिमे इंदोरिये देवो । ब्रह्मेश्वर उत्तम ठावो ।

उत्तरें सिद्धेश्वर देवो । खेटकग्रामीं भागीरथी ॥९॥

मध्यस्थळीं हे इंद्रायणी । सरसी भागीरथी वाहिनी ।

सिद्धेश्वर शोभे स्थानीं । ज्ञानदेवा सहित ॥१०॥

ये दक्षिणवाहिनीसी । स्नान घडतां अहर्निशीं ।

कोटी तीर्थे प्रयाग काशी । प्रसन्न होती हरिहर ॥११॥

ऐसियें तीर्थी देवा । समाधि दिधली ज्ञानदेवा ।

पुंडलिक विनवितसे केशवा । धन्य भाग्य नामयाचें ॥१२॥२३||

अभंग २४ वा

स्वर्ग मृत्यु पाताळ तिन्हीं ताळें उदर । विराटलें थोर विश्वरूप |१||

समाधिसंजीवन निवृत्तिसी फावले | तें निधान देखिलें आम्हीं तुम्हीं ॥२॥

निवृत्ति सोपान ज्ञानदेव निधी । मुक्ताई सिद्धी अलंकापुरीं ॥३॥ध्रु.||

पंढरी प्रत्यक्ष केली ज्ञानदेवें । उभारूनि बाहे सांगे आम्हां ॥४॥

कळिकाळासी त्रास विठ्ठल उच्चारीं । हरि चराचरीं क्षरला असे ॥५॥

सर्वत्र सबाह्य अंतरंग रूपडें । तें रूप फाडोवाडे पारखिलें ॥६॥

चिंतामणीचें सार कल्पतरू उघड । दावुनिया मूढ तारियेले ॥७॥

सुवर्णाचा पिंपळ तिहीं लोकी ठाउका । त्या समीप देखा कल्पतरू ॥८॥

सिद्धेश्वरलिंग सिद्धिबुद्धिदाता । जडजीवा मुक्तता देतु हरी ॥९॥

ऐसियें स्थानीं कीं ज्ञानदेव राहिले । राहोनि तारिले मूढ जन ॥१०॥

नामा म्हणे ज्ञानदेव हा दातार । जडजीवां उद्धार विठ्ठल हरी ॥११॥२४||

अभंग २५ वा

तंव तेथें नवल वर्तलें । आकाश असे विमानी दाटलें ।

म्हणती मूळपीठ वैकुंठ देखिलें । पुंडलिका सकट ॥१॥

पंढरीहुनि आलें कैसें । पुंडलिक देव सरिसे ।

ज्ञानदेवासवें नामा असे । आणि विष्णुभक्त अपार ॥२॥धृ.||

राही रखुमाई सत्यभामा । गाई गोपाळ मेघःश्यामा ।

म्हणती पाहा हो महिमा । या विष्णुभक्तांचा ॥३॥

सवें ध्रुव प्रल्हाद अंबऋषी । रूक्मांगद सूर्यवंशी ।

आणि ऋषिमुनि तापसी । असे समवेत वनमाळी ।।४।।

बळी भीष्म नारद । उद्धव अक्रुर विद्‌गद ।

आणि बिभीषण सुबुद्ध । हनुमंत आदिकरूनि ॥५॥

हा हा हु हु गंधर्व गाती । रुणुझुणु रुणुरुणु पावे वाजती ।

देवांगना आरतिया ओवाळिती । देवभक्तांसहित ।।६॥

ऐसा शुभ काळ समयो । जाला भाग्याचा उदयो ।

ज्ञानदेव नामदेव पाहा हो । धन्य धन्य धरातळीं ॥७॥

नामा नुघडी दृष्टीसी । हृदयीं ध्यातसे हृषिकेशी ।

ज्ञानदेवो निजमानसीं । विष्णुमूर्तीसी लीन जाला ।।८॥२५||

अभंग २६ वा

तंव बोलत उद्धव । धन्य धन्य हा देवाधिदेव ।

धन्य धन्य ज्ञानदेव । निजभक्त आवडता ॥१॥

धन्य तीर्थ इंद्रायणी । धन्य प्रत्यक्ष शूळपाणि ।

तारक ब्रह्म त्रिवेणी । मिश्रित रूपें वाहातसे ।।२।।ध्रु.||

चिंतामणि हे पाषाण । दिव्य वनवल्ली जाण ।

जेथें लागले हरिचे चरण । ते धन्य भूमि अलंकापुरी ॥३॥

जेथें समाधिसी बैसतां । इंद्रादि सामोरें येती तत्वतां ।

वैकुंठा जाईल निभ्रांता । रामकृष्ण उच्चारित ।।४।।

यम न पाहे इकडें । काळ नमस्कारी वाकोडें ।

म्हणती पाहा हो केव्हढें । भाग्य या ज्ञानदेवाचें ॥५॥

ऐसें उद्धव सांगे रुक्मिणी । होय म्हणती चक्रपाणि ।

पंढरीहुनि हे जुनाटपुराणीं । शैवागमी बोलिलेसे ॥६॥

ज्ञानदेवें नमस्कार केला । नामा हृदयीं धरिला ।

प्रीतीनें पुढती आलिंगिला । म्हणे धन्य धन्य रे सखया ॥७॥

नामा लोळत गडबडां । चरणरजालागीं झाला वेडा ।

केशव म्हणे तूं धडफुडा । विष्णुभक्त साचार ॥८॥२६||

अभंग २७ वा

ऐसी प्रदक्षिणा करुनि विष्णुभक्ता । नामा जालासे सरता ।
रुक्मिणी म्हणे यातें तत्वतां । वैकुंठासी न्यावें जी ॥१॥

नामा म्हणे नेघें मुक्ती । मज पंढरीची आर्ती ।

विठ्ठलनामें करीन कीर्ती । नित्यकाळ जीवन्मुक्त ॥२॥ध्रु.||

मज नित्यमुक्ति जन्म नाहीं । केशवासी माते पुसोनि पाहीं।
युगानयुगीं अवतार दाहीं । याचेनि संगें मज घडती ॥३॥

तिहीं त्रिभुवनीं उदार । मुक्ति तुम्हापाशी साचार ।

परि भक्तिविण मुक्ति असार । कोण पामर इच्छिल ॥४॥

मुक्ति फलकट नैश्वर । फळ एक विठ्ठल सार ।

विष्णुभक्तिसी ज्याचा निर्धार । त्याचे चरण वंदीन माथां॥५॥
विष्णुविण कीर्तन न करी । भक्तिविण नसे क्षणभरी ।

कीर्तन करीन गजरीं । रामकृष्ण गोविंद ॥६॥

मज नामाचें अमृत हरि । माझें मुक्ति दास्य करी ।

तूं मूळमाता जाणसी जरी । तरी तुजसी हे गुह्य बोलिलों ॥७॥
नामदेव परतोनि पाहे । तंव ज्ञानदेवें उभारिले बाहे ।

म्हणे विष्णुभक्ति ऐसी आहे । आइक माते इचा साचार ॥८॥
||२७||

अभंग २८ वा

भक्त अमर स्वस्ति क्षेम । चरणरजें डोरलें व्योम ।

मग कैलासी मंदाकिनी सोम । नीळकंठे धरियेली ॥१॥

धन्य विष्णुचरणींची गंगा । स्नपन होत महालिंगा ।

भीमरथीं मृत्युलोकी सवेगा । इंद्रायणी समरसें ॥२॥ध्रु.||

भोगावती पाताळा गेली । मग विष्णुचरणीं गुप्त ठेली ।

मग पुरोनियां उरली । त्र्यंबकशिखरीं ॥३॥

मग किती काळीं भागीरथी । भगीरथें आणिली भागिरथीं ।

सगर उद्धरिले त्वरितीं । विष्णुतीर्थे करूनियां ॥४॥

ऐसी त्रिभुवनीं ज्याची थोरी । तो मुकुटमणी हा हो श्रीहरी ।

त्यांतें सोडिलियां मुक्ति चारी । काय आम्हां तारिती ॥५॥

सर्वे तीर्थें ज्याचे रंक । आम्ही तयाचे सेवक ।

ज्याचें नामें हें त्रैलोक्य । नाम घेतां तरती ॥६॥

तो पूर्ण बीजमंत्र आम्ही जाणों । विष्णुविण कांहीं नेणों।

पूर्ण ब्रह्म काय म्हणों । हा महिमा तूं जाणसी ॥७॥

ज्ञानदेवें नमस्कारिले हरी । निवृत्ति सोपान झडकरी ।

मुक्ताई भेटली लवकरीं । ज्ञानदेवा करीं धरियलें ॥८॥२८||

अभंग २९ वा

मग संतोष जाला हरिभक्तां । ज्ञानदेव झाला बोलता ।।
निवृत्तीसी म्हणे तुम्ही जावें आतां । त्र्यंबकशिखरासी ॥१॥
करूनि नमस्कार हरासी । वेगीं यावें वैकुंठ शिखरासी ।
नित्य हरिचरणापासीं । तुम्हीं आम्हीं सोपान ॥२॥

मुक्ताई म्हणे ज्ञानदेवा । मज विठोबासी निरवा ।

मजवरी लोभ असों द्यावा । रुक्मिणी आदिकरूनि ॥३॥
पुंडलिकासी निरवावें । समस्तांसी क्षेम सांगावें ।

रुक्मिणी मातेच्या द्यावें | हातीं मज ||४||

ज्ञाने करुनि विज्ञान । भक्तीसी करावें निरूपण ।

द्यावें समाधि संजीवन । तुम्ही यावें शीघ्रवत ॥५॥

निवत्तीनें दिधलें उत्तर । आम्हीं जाऊं वेगोत्तर ।
सोपानासीं मार्गी निरंतर । समाधीसी चालवूनि ।।६॥

तंव बोलिला यादवराणा । तुम्हीं मागितल्या समाधीच्या खुणा
परी नामयावरी जाणा । माझी कासवदृष्टी ।।७||

नामा म्हणे विठोबासी । तूं स्वामी दीनाचा होसी ।

गेलें निधान ज्ञानदेव दाखविशी । मज नयनीं प्रत्यक्ष
॥८॥२९||

अभंग ३० वा

ऐसें बोलोनियां हरि | रुक्मिणीसी विचार करी |

यासी भोजनें परोपरी । अन्ने निपजवावीं ॥१॥

संतोष जाला हरिभक्तां । जेथें स्वयें हरि भोक्ता ।

कर्ता आणि करविता । सर्व चाळक विठ्ठल ॥२॥ध्रु.||

तंव दिव्यग्राम उभवुनि | भक्तिं देखिलें नयनीं ।

विश्वकर्मा येऊनी । उत्तरापंथें निर्मिले ॥३॥

तंव अष्टमहासिद्धी । सर्व सामोग्रीची समृद्धि ।

कर जोडोनी कृपानिधी । विनविती आनंदें ।।४।।

दिव्यवनें दिव्यवल्ली । दिव्यसुमनें समग्र झालीं ।

वैकुंठीहुनि आणिलीं । महाविष्णुकारणे ॥५॥

तेथें सुगंध परिमळ । जवादि कस्तुरी निर्मळ ।

चिंतामणी देती ढाळ । नाना कीळ दीप्तीचे ॥६॥

चंदनाचे खांब उभारिले । पवळ वेलीचे शोभले ।

मुक्ताफळांचे घोस मिरवले । रत्नखचित दामोदरें ॥७॥

चंपक सुमनाचियां हारी । सेवंती बटमोगरे नाना परी ।
नाना पुष्पी परिमळ आगरी । दिव्यवनेंसी शोभती ।।८।।

ऊस खर्जूरिया पोफळी । फणसें नारिंगें नारिकेळीं ।

कर्दळी वाढिन्नल्या सरळी । उदक पाट वाहताती ॥९॥

तेथें भ्रमर रुणुझुणु करिती । कोकिळा सुस्वरें बोलती ।
पारवे आनंदें घुमघुमिती । सुखें संवादती निजगजरें ।।१०||

तलालौरी गीत वाजविती । गोपाळ विणे वाजविती ।

नाना परी बागडें धरिती । देव पाहती विमानीं ॥११॥

थकली योगियांची ध्यानें । निश्चळ राहिलीं आसनें ।

निवृत्ती आणि सोपानें । तेथें देव्हडें उभे असती ।।१२।।

नामा जातो लोटांगणीं । वैकुंठ उतरलें मेदिनीं ।

अलंकापुरीं पाटणीं । उत्तरापंथें देखिलें ॥१३॥

जेथें त्रिभुवनिचे निधान । स्वयं आपण भगवान ।

तेथें सकळ काम होती पूर्ण । जाणती खुण अंतरंग भक्त ॥१४||

नामा म्हणे ऐसी विंदानें । भक्तीलागी जगजीवनें ।

प्रत्यक्ष वैकुंठ भुवनें । दासा सुखसंपन्न करावया ।।१५।।

अभंग ३१ वा

ऐसें देखिलें वैष्णवीं । वैकुंठ नगरी चिरंजीवी ।
आणि ज्ञानदेव गोसावी । विष्णमूर्ती चतुर्भुज ॥१॥

तलालोरी वाजविती पावा । समाधान होतसे जीवां ।

नामा विनवितसे केशवा । तुझ्या दरुशनें निवालों ॥२॥धृ.||

तंव रुक्मिणीनें विनविलें । यासि भोजन सारा कीं वहिलें ।

तंव अक्रूरें पाचारिलें । समस्तांसी देखा ॥३॥

उद्धव घालितसे आसनें । ताटीं विस्तारिलीं बोनें ।

राही रुक्मिणी विचक्षणें । पंचामृतें वाढिती ॥४॥

समस्त भक्त दाटले । पांथीकर एकवटले ।

नानापरी भात विस्तारिले । परिमळित घमघमा ॥५॥

वरी मिरवें मुगाचें वरण । कथिका वाढिली संपूर्ण ।

नाना कोरिकें विस्तीर्ण । रुक्मिणी वाढितसे ॥६॥

कामधेनूचें घृत । पयोदधिक्षीर वाढित |
नाना पत्र शाखा शोभत । वैष्णवांच्या ताटी ।|७॥

ऐसें समस्तांसी संपूर्ण । भोजनासी बैसविलें प्रीतिकरून |

तंव देव बोलती आपण । ज्ञानदेवासी ॥८॥
निवृत्ती सोपान बोलवा । मुक्ताईस वेगी आणवा ।

पांथिकरासी रिघावा । ताटी बैसवा समस्तांसी ॥९॥

विष्णुमूर्ती चतुर्भुज । पूजी ब्राह्मण द्विभुज ।

तुळसी मंजिरी केशीराज । त्यांचे मस्तकी वाहतसे ॥१०॥
चरणतीर्थ घेतलें । तेणें समस्त मंदिर शिंपिलें ।

आपण मुखी घातलें । म्हणे कृतकृत्य झालों मी ॥११॥

नामा तिष्ठत उभा द्वारीं । त्यासीही रुक्मिणी ताट करी ।

ऐसी भोजनें परोपरी । वैष्णवांची जाहली ।।१२॥३१||

अभंग ३२ वा

ऐसे भक्त जेवुनि धाले । समस्त पांथीकर एकवटले ।

गोपाळें विडे दिधले । आपुलेनि हातें ॥१॥

धन्य धन्य तें भोजन । धन्य धन्य तें निधान ।

धन्य धन्य तें अजान । धन्य नारायण अलंकापुरी ॥२॥

विठ्ठलें दिधलें वचन । यांसी घाला रे आसन ।

तंव उद्धवें आपण । समस्तां बैसकार दिधले ॥३॥

पूजिलें गंधाक्षता लावुनि । टिळे उटी कपुर चंदनीं ।

ऐसे तियें वैकुंठभुवनीं । वैष्णवांसी पूजितसे ||४||

तंव म्हणे रुक्मिणी । नामा आणा बुझावुनि ।

आपलेनि हातें चक्रपाणि । त्यासी ग्रास घालावा ॥५॥

ऐसें सांगतां हरीसी । बुझाविती नामयासी ।

तो स्फुंदत उकसाबुकसीं । मग चहूंकरी हरीनें उचलिला ॥६॥

सवें संतांचा मेळा । तयामाजीं परब्रह्म पुतळा । नामा
बुझावोनी तात्काळा । देहावरी आणिला ॥७॥

तंव विस्तारोनि आणिलीं ताटें । षड्स अन्ने बरवंटें ।

रुक्मिणी आणि जेथें वैकुंठें । भक्तांसहित उभे असे ॥८॥

नामयातें संबोखोनि हरि । बसविला मांडियेवरी ।

कवळ घ्यावया मुख पसरी । मग चहूंकरीं हरि घालितसे ॥९॥
नामा आनंदें डुल्लत । तृप्त जाला प्रेमें ओसंडत ।

सकळ संतां कवळ देत । आपुलेनि निजकरें ॥१०॥

अभंग ३३ वा

ऐसा येकवळा भक्तांचा । भोक्ता हरी वैकुंठींचा ।

उतरोनी अलंकापुरीं साचा । करी भक्तांचा उत्साव ॥१॥

ऐसे जेवूनि धाले । हरिकरेंचि निवाले ।

मग सुखें रहिवासलें । सकळे भक्त वैकुंठीं ॥२॥

देव म्हणती निवृत्तीसी । तुम्ही जावें त्र्यंबकशिखरासी ।

मग समाधी सरिसी । गंगोदकें करूनि घ्यावी ॥३॥

तंव सोपान म्हणे स्वामी । पूर्वी बोलिलेती तुम्हीं ।

करेपाठार संवत्सरग्रामीं । समाधी देऊं म्हणउणी॥४॥

देव म्हणती संतांसि पुसा । हा ज्ञानदेव असे सरिसा ।

हाही दिव्यदेहीं आम्हांसरिसा । येईल तेथवरी ॥५॥

मुक्ताई म्हणे देवाधिदेवा । आम्हीं करावी चरणसेवा ।

तुझेनि विचारें जी केशवा । समाधीधन भक्तांसी ॥६॥

ऐसा करितां विचार । तंव पातला राजा इंद्र ।

भक्ती केलें जयजयकार । देवें दुंदुभी वाजिन्नल्या ॥७॥

संत सनकादिकीं स्तोत्रें । मुखीं आरंभिलीं पवित्रें ।

गाती हरीनाम चरित्रें । देव ऋषिगण सकळीक ॥८॥

धन्य अलंकापुरी ग्राम । जेथे प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम ।

उतरोनि वैकुंठधाम । सोहळा करी भक्तांचा ॥९॥

नामा नाचे हरिचें द्वारीं । ब्रह्मांड गर्जे जयजयकारी।

निवृत्ति सोपान म्हणे हरी । आम्हां निरंतरीं सांभाळीं ॥१०॥

अभंग ३४ वा

नाना गंधें तुलसीमाळा । वैष्णवीं घातलिया गळां ।
नमस्कार करिती गोपाळा । चरणरजा वंदिती ॥१॥

दोही बाही देव्हुडे । संत सनकादिक गाढे ।

जयजयकार पुढें । महाशब्दें गर्जिन्नले ॥२॥ध्रु.||

ऐसे इंद्रायणीच्या तटीं । हरि रुक्मिणी जगजेठी ।

संत सनकादिकांची गोमटी । मांदी मिळाली असे ।।३।।

तंव पुंडलिकें नमस्कार केला । म्हणे तूं कां गा येथे विठो उगला ।
बहुत दिवस राहिला । या ज्ञानदेवाकारणें ॥४॥

तरी पंढरीहुनि हें श्रेष्ठ । तूं येथे उभा अससी प्रगट ।

भूमी उतरलें वैकुंठ । या ज्ञानदेवाकारणें ॥५॥

बहुत दिवस येथेंचि झाले । मी न देखें विटेवरी जंव पाउलें।

तंव नयन माझे भुकेले । राहतील देवराया ॥६॥

देव म्हणती पुंडलिका । तूं भक्त माझा निजसखा ।

आणि हा ज्ञानदेव देखा । दुजा न देखों त्रिभुवनीं ॥७॥

हे संत सनकादिक माझे । यांचेनि समागमें माझें बीजें ।

नामा डौरवीन यांचे चरणरजें । मग जाऊं रे पंढरीसी ॥८॥३४||

अभंग ३५ वा

सर्व तीर्थे मिळाली अनंतें । ते सुखी करूं कृतार्थे ।

संवत्सरा जावोनी सोपानातें । समाधीसी बैसवूं ॥१॥

अनंत सुखाचिया रासी । उदैल्या भक्तांचिया मानसीं ।

आनंद जाला पुंडलिकासी । मग न बोले कांहीं ॥२॥ध्रु.||

सोपान म्हणे वैकुंठा । बिजें किजो जी महाश्रेष्ठा ।

संवत्सर ग्राम कऱ्हें तटां । वैकुंठासहित चालावें ॥३॥

इंद्रचंद्रब्रह्मादि देव । आणि गण मिळाले सर्व ।

तेहतीस कोटी देव । विमानीं आरूढले देखा ॥४॥

निवृत्ति सोपान ज्ञानदेव । त्रिमूर्ति तिन्ही देव ।

धर्मरक्षणार्थ पाहा हो । मनुष्यरूपें अवतरले ॥५॥

तिघेही उभे सन्मुख । तिघांही थोर संतोष ।

विनविती केशवास । स्वामी विनंति अवधारिजो ॥६॥

हे अलंकापूरीसी । स्थापावें कोटी तीर्थांसी ।

जो जो भक्त येईल स्नानासी । तो वैकुंठासि आणावा ॥७॥

ऐसें ऐकोनि श्रीहरी । म्हणे धन्य धन्य तुमची वैखरी ।

जगदोद्धार केला संसारीं । बावीस वर्षे असतां पैं ॥८॥

जो जो दिवस उगवला । तो तो ज्ञानदेवें सफळ केला ।

पदपदांतर कथिला । जेणें आत्माराम संतोषे ॥९॥

पूर्वी अनंत भक्त झाले । पूढेंही भविष्य बोलिलें ।

परी निवृत्ती ज्ञानदेवें सोडविले । अपार जीवजंतू ॥१०॥
जो अभक्त मनुष्यगण प्राणी । ज्यांचा भार न साहे मेदिनी ।
मग इहीं अवतार घेउनी । जग तारिलें कीर्तनें ॥११॥
नामा पंढरीये नाचत । ज्ञानेश्वर अलंकापुरीं शोभत ।
सोपान संवत्सरी मिरवत । निवृत्ति त्र्यंबकशिखरी ॥१२।।३५||

अभंग ३६ वा

ऐसें पांडुरंग बोलिले । मग सकळ तीर्थांसी सांगितलें ।

अलंकापुरीं वसिजे वहिलें । भक्त तारावया ॥१॥

जो जो करील कीर्तन । तो तो तरेल जाण ।

अलंकापुरीं नारायण । स्वयें उभे असती ॥२॥ध्रु.॥

ऐसा निरोप तीर्थांसि । ते तिष्ठती अहर्निशीं ।

कीर्तन करितां गजरेंसि । वैकुंठासी नेवों म्हणती ॥३॥

देव म्हणे यमुना नर्मदा । सरस्वति भागीरथी त्रिविधा ।

गंगा कृष्णा तुंगभद्रा । इंद्रायणीस मिळावें ॥४॥

जो जो भक्त येईल स्नाना । तो पवित्र करावा या क्षणा।

वैकुंठ कैलासापर्यंत जाणा । त्यासी घेवुनि यावें ॥५॥

हो म्हणती तीर्थें सकळें । मग मीनली आपुलेनि मेळें ।

गुप्त राहोनि यथाकाळें । आज्ञा शिरसा वंदिती ॥६॥

गया काशी त्रिवेणी । त्या शोभती विठ्ठलचरणीं ।

ज्ञानदेवा समाधिरंगणीं । अखंड वाहों लागल्या ॥७॥

सुवर्णाचा अश्वत्थ । द्वारी स्थापुनियां वास ।

भोंवतें देव्हुडे तापस । समाधीस बैसले ॥८॥

देव म्हणे येथें जो करील तप । तो होईल निष्पाप ।

केवळ होईल शिवरूप । आत्माराम साक्षात ॥९॥

जप तप नेम मंत्र जाण । कोटी याग घडले पूर्ण ।

अथवा द्विजा दिधलिया अन्न । चतुर्भुज नर होती ॥१०॥

ऐसें वचन सांगे हरी । ज्ञानदेवासी धरिलें करी ।

निवृत्ति सोपान अंतरीं । ध्यान धरोनी राहिले ॥११॥

नामा म्हणे कोटी तीर्थांचें । तीर्थ वोळलें पैं साचें ।

पाप जाईल अनंत जन्मांचें । एक स्नान केलिया ॥१२॥३६||

अभंग ३७ वा

मग अष्टदिशा व्यापुनी । तीर्थे राहिली स्थानीं स्थानीं ।

अलंकापुरीं पाटणीं । इंद्रायणीचां तटीं ॥१॥

धन्य धन्य सृष्टीतळीं । अलंकापुरीं महितळीं ।

कीर्तन करितां वैष्णवमेळीं । ते चतुर्भुज नर होती ॥२॥ध्रु.॥

मग पुंडलिकासी सांगितलें । कृष्णपक्षी येथे पाहिजे आलें ।

येरू म्हणे स्वामीने सांगितलें । ते शिरसा वंदीन ॥३॥

देव म्हणे आम्ही तुम्ही । पंढरीहुनि समागमीं ।

येवों अलंकापुरीं ग्रामी। सकळ भक्तांसहित ॥४॥

मग व्यास वाल्मिक बोलीविलें । त्यांसही हे तीर्थ सांगितलें ।

तिहीं शिवक्षेत्र ऐसें म्हणितलें । जुनाट असे केशवा ॥५॥

या शिवतीर्थाचा महिमा । कवणा वर्णवेल पुरुषोत्तमा ।

पंढरी पांडुरंग महात्मा । भीमातीर हें उत्तम ॥६॥

आणिक आइकें वो सर्वोत्तमा । येथे अधिक अष्टतीर्थे ग्रामा ।

पंचक्रोशीची उपमा । सिद्धि होती तात्काळ ॥७॥

ब्रह्मा विष्णु इंद्र तप । आणि योगेश्वर अमूप ।

पाताळीं शेष समीप । याजखालतां असे ॥८॥

स्कंदासी उपदेश स्थान । लोहोगिरीसी येथून ।

पुरुरवा पुण्यक्षेत्र महिमान । पूर्वी येथूनचि जालें ॥९॥

येथून भीमरथी नदी । भीमाशंकरा घेऊनि गेला नंदी ।

उगमी पडली सर्वां आदि । मग शंकरें स्नान केलें ॥१०॥

तें हें भीमा माहात्म्य प्रसिद्ध । तो हा सिद्धेश्वर अगाध ।

महायोगेश्वर निजबोध । अलंकापुरीं पाटणीं ॥११॥

ऐसें व्यास बोले तत्क्षणीं । नामा गेला लोटांगणीं ।

समाधी मूळपीठ स्थानीं । अलंकापुरीं ज्ञानदेव ।।१२।।३७||

अभंग ३८ वा

मग व्यासपूजा सारिली । तैसीच वाल्मिकाची केली ।

वसिष्ठादिकीं अंगिकारिली । समस्त ऋषि पूजियले ॥१॥

धन्य धन्य धरातळीं । येऊनियां देवीं सकळी ।।

माजीं सहित वनमाळी । अलंकापुरीं नगरीये ॥२॥

मग साठी तीनशें गंगा । माजीं शिव द्वादश लिंगा ।

अष्टोत्तरशें तीर्थे समर्थ पैं गा । तिहीं तपन आरंभिलें ॥३॥

कोटी तीर्थांचा रहिवास । अष्टभैरव सावकाश ।

वसू कोटी गणेश । साठीसहस्र गणांसहित ॥४॥

ऐसे रहिवासले षण्मास । दिव्य द्रुमफळें प्रतिदिवस ।

दिव्य अन्ने सावकाश । अमृत भक्षिती देव ॥५॥

ऐसा सकळ तीर्थांचा मेळा । तयामाजी परब्रह्म पुतळा ।

करी ज्ञानदेवाचा सोहळा । अलंकापुरीं नगरिये ॥६॥

गरूड हनुमंता ऐसे । पुढें कामारी हृषिकेशें ।

साक्षात वसिजे महेशें । गौरीसहित अलंकापुरीं ।।७।।

नंदि भृंगी त्राहाटण । प्रतिदिनीं विभूतीचें उधळण ।

जयजय शंकर शिवपूर्ण । ऐसीं स्तोत्रे गाताती ॥८॥

महासभा स्थळ वैकुंठ । सभें श्रेष्ठ वैकुंठपीठ ।

आणि शिवमूर्ती घनदाट । नीळकंठ सभेसी ॥९॥

रंभा उर्वशी नाचती । नारद तुंबर वीणे वाती ।

गणेश सारजा आळविती । सहा राग एकवीस मूर्च्छना ॥१०॥

ऐसा रंग स्थिरावला । जयजयकारें घोष केला ।

तेणे चवकला उठिला । पाताळींचा शेष ॥११॥
ऐकोनी विष्णुकीर्तन । तयासी आले पैं स्फुंदन ।

मग उच्चारित रामकृष्ण । मृत्युलोकासि आला ॥१२॥

सहस्रवदन स्तुती करी । हरें नमस्कारिलें हरी ।

वाहुनि तुळसीमंजिरी । ज्ञानदेवा पूजिलें ॥१३॥

नामा म्हणे ज्ञानउदयो । ज्ञानदेवा भाग्याचा पाहा हो।

आपण येऊनि वैकुंठरावो । समाधि दिधली निजहस्तें ॥१४॥३८||

अभंग ३९ वा

ऐसे स्वर्गवासी अमर । ते आपुलाले ठाई स्थिर ।

राहोनि करिती जयजयकार । पुष्पवृष्टी ज्ञानदेवावरीं ॥१॥

धन्य धन्य तूं विष्णुभक्ता । ज्ञानदेवा तूं समर्था ।

म्हणौनि पडती पुष्पचळथा । पांडुरंगावरी ॥२॥ध्रु.||

अनंत तीर्थांचा मेळ । उदकें शिंपिती ब्रह्मगोळ ।

लोहोगिरीं सुवर्णाचळ । त्यावरी अलंकापुरी ॥३॥

म्हणती धन्य धन्य हे जन । येथें जो करील कीर्तन ।

तया जोडे वैकुंठस्थान । चतुर्भुज होऊन जाईल ॥४॥

देव म्हणती इंद्रासी । तूं पूर्वी येथें होतासी।

आणि ब्रह्मा रूद्र तापसी । पूर्वापार हे पुरी असे ॥५॥

कृत त्रेत हे द्वापारा आधीं । येथे सकळांची समाधी ।

धन्य ज्ञानदेव गोविंदीं । रातोनी येथें बसले ॥६॥

इंद्र म्हणे विष्णुभक्त थोर । प्रत्यक्ष हे हरिहर ।

निवृत्ती सोपान ज्ञानेश्वर । हेहि अवतार हरीचे ॥७॥

ऐसें सांगितलें समस्तां । मग विदित जालें उभयतां ।

शक्र झाला निघतां । ब्रह्मा आदि करूनी ॥८॥

शेषही पाताळासी गेला । पुंडरिक गोपाळ राहिला |

अलंकापुरीं स्थिरावला । सकळैक भक्तांसहित ॥९॥

सवें संतांचा मेळ । ऐसा राहिला गोपाळ ।

नामा म्हणे चक्रचाळ । पुढें कैसें वर्तलें ॥१०॥

अभंग ४० वा

गगनपंथें शुभ्र विमानें । देव लक्षिती अधोवदनें ।

तंव अलंकापुरीं कीर्तनें । टाळ मृदंग झणत्कारले ॥१॥

जयजयकार क्षितीं होत । महादोषां संहार घात ।

नामा असे नाचत । पांडुरंगापुढे ॥२॥

रामकृष्ण अवतार । चरित्रें गाती सविस्तर ।

वैष्णवीं केला जयजयकार । पांडुरंगे म्हणितलें ॥३॥

ज्ञानदेव बैसलें समाधी । पुढें अजानवृक्षनिधी ।

वामभागीं पिंपळ क्षितीं । सुवर्णाचा शोभत ॥४॥

निवृत्ती सोपान खेचर । ज्ञानदेव मुक्ताई निरंतर ।

हे उत्तरद्वारासमोर । बैसते जाले ॥५॥

देव म्हणे ज्ञानेश्वरा । चंद्रतारा सूर्य जंव दिनकरा ।

तुझी समाधि स्थिरा । राहो हे निरंतर ॥६॥

जंववरी हे क्षितिमंडळ । जंववरी हे समुद्रजळ ।

मग कल्पक्षयी यथाकाळ । माझा हृदयीं साठवें ॥७॥

आणिक एक सोपारें । ज्ञानदेव ही चार अक्षरें।

जो जप करील निर्धारें । त्यासी ज्ञान होईल ॥८॥

ऐसा दिधला आशीर्वाद । मग संतांसी बोले गोविंद ।

ज्ञानदेवा ऐसा उद्बोध । दुजा न देखो सृष्टीसी ॥९॥

नामा म्हणे स्वामी माझा । अंगिकार केला वोजा ।

पावला भक्तांचिया काजा । गरुडारूढ होवोनी ॥१०॥

अभंग ४१ वा

ऐसे संतोषले देव । प्रसन्नरूपें माधव ।
मग बोलती ज्ञानदेव । विठ्ठलाप्रतीं ॥१॥

धन्य धन्य तूं विठ्ठला । धन्य प्रत्यक्ष देखिला ।
धन्य समारंभ येथिला । सोहळा करिसी भक्तांचा ॥२॥ध्रु.||

तुझेनि आम्ही धन्य । हें जगत्रयीं देवा मान्य ।
म्हणती भक्तांसमान । न देखों त्रिभुवनीं ॥३॥

तूं विश्वात्मा विश्वरूप । तूं जगाचे नांवरूप ।
तुज न लिंपे पुण्यपाप । सदा शुद्ध बुद्ध अससी ॥४॥

तो तूं आम्हां भक्तांसरिसा । सवें हिंडसी जगदीशा ।
तुजविण अष्टदिशा । मज शून्य वाटती ।।५॥

तरी तूं पाळिसी भक्तांचा लळा । समाधीचा केला सोहळा ।
तो दाखविला मज डोळा । दिव्य दृष्टी देवोनी ॥ ६॥

तूं सत्वरजतमात्मक । तूं सकळ जीवांचा चाळक ।
तूंचि त्रिमूर्ती अवघा सकळ । विराटस्वरूप सकळ ॥७।।

भक्त भाग्य भूमितळीं । याकारणें तूं वनमाळी ।
दहा अवतार भूमंडळी । नाना चरित्रें खेळसी ॥८॥

ऐसें महिमान अगाध । तें तुझें रूप प्रसिद्ध ।
कोण भाग्याचा मी प्रबुद्ध । तो तूं मजकारणें आलासी ।।९॥

नामा म्हणे ज्ञानदेवें । ऐसी स्तुती केली स्वभावें ।
तंव कृपा करूनियां देवे । अभयकर दीधला॥१०॥

अभंग ४२ वा

चतुर्भुज श्याममूर्ति । शंखचक्रांची आकृती |

पीतांबराची दिव्य दीप्ति । पडिली सृष्टीवरी ॥१॥

धन्य धन्य ज्ञानदेव । धन्य धन्य तो माधव ।

मग आरंभिला अनुभव । ज्ञानदेवाचेनि मुखें ॥२॥ध्रु.||

देव म्हणे ज्ञानेश्वरा । तू अवतरोनि माजीं चराचरा ।

हरिला महादोषथारा । तुझेंनि कवित्वें ॥३॥

तुझें कवित्व माझ्या गोष्टी । जो परिसील हे सृष्टीं ।

तो येईल माझे भेटीं । वैकुंठपीठीं विष्णूच्या ॥४॥

तुवां जो ग्रंथ अनुभव । तें सांगितला भाव ।

तें मुख्य ठेवणें राणीव । अनुभवीच जाणती ।।५॥

तैसाची अमृतानुभव । सिद्धपीठीं केला भाव ।

दाऊनी मनोहर राणीव । निजगुह्य आमुचें ॥६॥

वसिष्ठगीतेची टीका । भावार्थ काढिला श्लोका ।
ग्रंथ रचिला नेटका । करूनि रचना दाविली ॥७॥

तूं महद्‌ब्रह्मींचा अंश । पदपदांतरी केला प्रवेश ।
दाऊनियां उदास विशेष । या जीवांसी तारिलें ॥८॥

सम तरी तूं आतां एक वेळ । माझी स्तुति करीं निर्मळ ।

जेणे करूनि तरती सकळ । वक्ते श्रोते ग्रंथकार ॥९॥

नामा म्हणे परमानंद | पावोनियां उद्‌बोध |

केला ज्ञानदेव सावध | स्तुती उपरती मांडिली ||१०||४२||

अभंग ४३वा

ऐसें अलंकापुर पीठींचे । भक्त नांदती देवाचे ।

जे कां सागर भाग्याचे । ज्ञानउदयों प्रकाशितें॥१॥

मग षोडश उपचारी | पूजा ज्ञानदेवा आदरी |

दिव्य वाद्यें मंगळतुरी | ओंवाळिती पंचारतीया ||२|| ध्रु.||

ज्ञान सोपान निवृत्ति | मुक्ताई प्रत्यक्ष ज्योती |

ओंवाळिती विष्णुमूर्ती | चतुर्भुज पैं ||३||
पितांबरधारी शाममूर्ति | शंखचक्राची आकृति |
उद्धव अक्रूर ढाळिती | चवरे वरी ||४||

प्रत्यक्ष लक्ष्मी आपण | प्रसन्न सुप्रसन्न वदन |
माजीं मिरवें दिव्य सिंहासन | त्यावरीं आरुढली ||५||
पुढें गरुड जोडला करीं | उभा पक्षाचा फडत्कारीं |
सूर्य लोपे तेजाकारी | अमृत करुणामयंक ||६||

गोपाळ देव्हुडें उभे | मंजुळ पावे वेणु प्रभे |

शुभ काळ सुप्रभे- | माजीं स्तुती मांडिली ज्ञानदेवें ||७||

नामा म्हणे ऐका | पुढील ग्रंथाचीं पीठिकां |

तो तारिल सकळ लोकां | एक एक अक्षर ऐकतां ||८||४३||

अभंग ४४वा

श्री नमन --

नमो काळ कौतुहाळ । नमो चक्रचालक गोपाळ ।

नमो विश्वप्रतिपाळ । प्रभंजना ॥१॥

नमो शिव शिवेशा । नमो शिवादि विश्वेशा ।

नमो रूपा अष्टदिशा । व्यापका नारायणा ॥२॥

नमो सकळ गर्भोद्भवा । नमो चित्तचाळक भावा ।

नमो विष्णुमूर्ती देवाधिदेवा । श्रीविठ्ठला ॥३॥

नमो भजनशीळ व्यापका । नमो ज्योतिर्लिंग दीपिका ।

नमो नमो तुज एका । आत्मव्यापका जगद्गुरु ॥४॥

नमो श्रिये श्रीनिवासा । नमो आगमपरेशा ।

नमो ज्ञानगम्याधीशा। प्रतिकुळा ॥५॥

नमो स्वलीला विनटा । नमोस्तु ते वैकुंठपीठा ।

नमो रूपादि श्रेष्ठा । वैकुंठीचिया ॥६॥

नमो दर्शन स्पर्शना । नमो उपरति निधाना |

नमो तितीक्षा दारूणा । कमळालया ॥७॥

नमो त्रिघंटी आदटा । नमो त्रिगुणा तूं उद्भटा ।

नमो सत्वरूप सदटा । ब्रह्मनामा ॥८॥

नमो राजेश्वर हरी । नमो विगळित संहारी ।

नमो वाचा वक्ता करी । वाचाळ वाक्पुष्पी ॥९॥

नमो तमहर्ता कर्ता । नमो सकळसंहर्ता ।

नमो काळ कौळुदाता । रक्षिता हरिभक्तां तुज नमो ॥१०॥

नमो हरहरेश्वरा । नमो न देखों दुसरा ।

नमो वेदान्त सागरा । सर्वेश्वरा तुज नमो ॥११॥

श्रुती निरामय नमो। नमो ज्ञानरूप गमो।

नमो द्वैतनिरसनसमो । करीं तूं निजकरें ॥१२॥

नमो व्यक्ताव्यक्त हरी । नमो मायासंहारकेसरी ।

नमो याचा माजी घरी । नांदसी तूं आत्मारामा ॥१३॥

जीवशिव नमो तुज । नमो सर्वजीवबीज |

नवल तूंचि सहज । गरुडध्वजा श्रीविठ्ठला ॥१४।।

केलें स्तवन आरंभ । नमो जगदादि अखिलस्तंभ ।

उभा राहोनी प्रतिबिंब । भीमातीरीं पंढरिये ॥१५॥

नमो ऐसिया रूपेशा । नमो त्रैलोक्यविस्तार ठसा ।

नमो आदि परेशा । जगदीशा युगादी ॥१६॥

नमो पुरुषोत्तम परेशा। नमो सकळही उदासा ।

करूनि जीवरूप ठसा । नांदसी तूं चराचरीं ॥१७॥

मधुसूदना तुज नमो । मधु माधवा हृदयीं रमो ।

नमो मधुरगीत नमो । माजीं घरीं आत्माचिया ॥१८॥

विविधतिमिरनाशा । परम परमानंदा उल्हासा ।

नमो पुरविसी आशा । हरिभक्तांची श्रीहरी ।।१९।।

नमो वासना चक्रचाळी । नमो तुंडवितुंड गेली ।

नमो सर्वही हारली । प्रपंचरचना ॥२०॥

नमो श्रीधर श्रीकर । नमो सर्वसंगी विकार ।

नमो विकृतीविकार | हरिसी नामें एकें ॥२१॥

नमो शांती दया क्षमा । नमो कृपा करी पुरुषोत्तमा ।

नमो कांसवदृष्टीसमा । निष्कलंक नाथा ॥२२॥

नमो द्विविधछेदका । नमो एकार्णव पावका ।

नमो द्वादश अर्का । शुभांशका वेदवक्त्या ॥२३॥

नमो चित्त चकोर हर्त्या । नमो सर्वकारणकार्ये कृत्या।

नमो तुजवांचोनि सत्या । विवेकप्रत्यया पैं नमो ॥२४॥

नमो अद्वैत अनंता । नमो निर्द्वंद्वद्व भोक्ता ।

नमो नित्यानित्य सरता । तुज नमो नमो ॥२५॥

नमो दुर्गतिहरणा । नमो सर्वहरण भरणा ।

नमो सर्वदृश्य निवारणा । भयहरणा जगदीशा ॥२६॥

नमो शिवशक्तिसमलिंगा। नमो भक्षक काळवेगा।

रुद्रादित्या वसु पैं गा । सम सर्वांगा परम परेशा ॥२७॥

नमो कृत्रिमदहना । नमो कृशकरणहरणा ।

नमो प्रतिपाळक राणा । नारायणा तुज नमो ॥२८॥

नमो इंद्रिये नियंत्या । नमो प्रपंच आकृत्या ।

नमो दीनादित्या । सकळ वृद्धि तूंचि ॥२९॥

नमो अवधूत दत्ता । नमो अपरमित मिता।

नमो सर्वांवरिष्ठ सत्ता । तूं चाळिता हृषिकेशी ॥३०॥

नमो दृष्टदर्पदर्पा । नमो चमत्कार नागसर्पा ।

नमो हरणशापा । नमो स्वल्पा रामकृष्णा ॥३१॥

नमो चतुर खेददीप्ता । नमो हरण तूं सुप्ता ।

जागृति स्वप्न गुप्ता । सत्यसुप्ता महाविष्णु ॥३२॥

नमो देवेश्वरा सूक्ता । महामोह महाहर्ता ।

मंद मंद नियंता । नमो नारायणा ।।३३।।

नमो क्षीर नीर निर्झरा । नमो विद्‌गद भानुकारा ।

नमो विवेक सागरा । महानंदा ॥३४॥

नमो मुखदंतसदना । नमो भक्षक भुवना ।

शुक्लांबरा शुक्लवर्णा । दयाघना गुणनिधी ॥३५॥

मृतामृत तुज नमो । नमो श्रुतिशास्त्रसमों ।

नमो हा गर्व गमो । पद्मगर्भानंतानंता ॥३६॥

नमो चिदाकाशव्याप्ता । चित्सत्ताचळणसत्ता ।

चित्स्वरूपादिरूपा । भुवनदीपा महामूर्ती ।।३७।।

नमो एकाएकार्णव । नमो कल्पादि गुणवैभवा ।

नमो सकळ हे दैव । हे भाव पैं तुझे ॥३८॥

गो गोपाळ नमो नमो । गोविंद गुणविष्णुधर्मो ।

नमो चित्तचिंतनी रमो । सर्वकाळ तुझ्या चरणीं ॥३९।।

ध्वज वजांकुशा । ध्वजनीळ विकासा ।

ध्वजांबरा अष्ट दिशा । नीळिमा भासती शामांकिता ॥४०॥

सुषुप्तीचे जन सत्य । नमो तुज कृत्य ।
असो सजे आमीत्य । तें ते क्षमा करी स्वामी ॥४१॥

नमो निर्धारनियता । नमो सुखरूप दाता ।

नमो आलिया पदार्था । क्षमा करीं स्वामी ॥४२॥

नमो चित्त विभ्रमा । नमो धार्य धैर्य नेमा ।
नमो पुराण पुरुषोत्तमा । पाहे कासवदृष्टीं ॥४३॥

पसायदाना नमो । परम परेशा समो।
ध्यानांतरगमो । तुझ्या चरणीं केशवा ॥४४॥
आग्रहनियंत्या नमो । सुग्रह परी नमो ।

आतां नित्य धर्मो । वैकुंठगुणग्राम नमो नमस्ते ॥४५॥

अनादृश्या दृश्यमाना । दृशादृश्य नित्यघना ।

सुखरूप जगज्जीवना । तुज नमो स्वामी ॥४६।।

दीप्तादीप्त अदृश्ये । जीवन दिसती त्यास सादृश्ये।

जीवमय हे भाष्ये । तुज नमो स्वामी ॥४७॥

परम परब्रह्मा । आदिब्रह्मा तूं रामा ।
भक्तांलागी साउमा । तुज नमो ॥४८॥

नमो नमो एक तत्वा । बाह्य मुद्रा शुद्ध सत्वा ।

योगा रूढ परतत्वा । सबाह्य पावसी तुज नमो ।। ४९॥
या वेदादि परम वक्ता । वेदादि तूंचि कर्ता ।
र तुजवांचोनि सर्व सत्ता । नमो भोक्ता न देखों ॥५०॥
ज्योतिर्मय रूप तुझें । सर्वतत्वां तूंचि बीज ।
नमो तुज सहज । पुढती पुढती नमो नमो ॥५१॥

परब्रह्म परात्पर । परमतत्व परमसार।
परमगुह्य परम विचार । तुज नमो नारायणा ॥५२॥

दीघड विघड सुघड । जडाजाड अवघड ।
द्वैताद्वैत जोडाजोड । कर्ता कार्यता तुज नमो ॥५३॥

संख्यारहित जीवना । असंख्य जीवपाळणा ।
नमो तुज संजीवना । पुंडलिकधना पांडुरंगा ॥५४॥

निर्गुण सगुणरूपा । देवादेव तूं सोपा ।

तुझी झालिया कृपा । नमन बापा तुझ्या चरणीं ॥५५॥

नमो नमो तारका । तूं ब्रह्म नामा विशेषा ।

नमो तुजवांचोनि सखा । योगीयासी पैं नाहीं ॥५६॥

जुगादि जुगत्रये । जुग जोग योगमय ।

हे तुज पासाव होय । ऐसिया तुज नमो ॥५७॥

नमो नमो नम । नाहीं नाहीं तुजसम ।

ऐसा परा पश्यंती नेम । वदलिया चारी ॥५८॥

या चहूं मुक्ति परतत्वा । पंचभूजा शुद्ध सत्वा।

षड्मार्ग गुण सत्वा । ग्रासन करिसी तुज नमो ॥५९॥

विद्गदचि विलासा । भानुबिंबाप्रति प्रकाशा ।
नमो तेजसतेजसा । आदिसूर्या ॥६०॥

ऐसा चहूं ग्रंथींचा क्लेशु । वाउगाचि वाहे सोसु ।।

तिमिर त्रिगुण असोसु । तो सत्वांशु तोडीं माझा ॥६१॥

साही नाडी चक्र भ्रमे । वाहातां इंद्रियांची ग्रामें ।

अडखळोनि साउमे । नये ऐसें करीं स्वामी ॥ ६२॥

बाध्ये बाधा कर्मांची । सर्व सत्ता या भ्रमाची ।

नमनें करूनियां तुमची । तुम्हासी अर्पिली स्वामी ।।६३॥

यमधर्मांची सत्ता । कर्म धर्माचिया पंथा।

कर्मधर्म विधाता । ऐसिया नेमिता तुज अर्पिला ॥ ६४ ॥

दम शम समान । इडा पिंगळा सुषुम्न ।

साही चक्र दरूषन । तुझीं तुज अर्पिलीं ॥६५॥

मन पवनयोग धारण । तूं यासी पैं कारण ।

समतुकें अवघें गुण । तुझ्या चरणीं निक्षेपिलें ॥६६॥

हें हें भूतभौतिक प्रचंड । जन्म उत्पत्तीचें अंड ।

जन्म जुगादि ब्रह्मांड । खंड विखंड तूं जाणता ॥६७॥

प्रचुर चर्या चित्ताची । धाव न वळत अकृत्याची ।।

सूचना जे चमत्काराची । ते हि अर्पिन तुज सदां ॥६८॥

निर्वासना वासनायुक्त । गुंफले राहिले जेथें चित्त ।

तेथें तूं धावोनि अनंत । सोडविसी वासनामयें ।।६९॥

सूक्ष्म अविचार बोला । बोली न मिळे व्यर्थ गेला ।।

तो म्यां बुझावोनि संबोखिला । मग लाविला तुझ्या पंथीं ॥७०॥

नित्य धर्माचिया वोळी । चळल्या चुकल्या कोण चाळी ||

त्यासी वेद तुझा पाळी । त्या तूं सांभाळी परब्रह्म ॥७१॥

श्रुतिस्मृतींची वचनें । स्वर वर्ण उच्चारणें ||

याची अंगराग मार्गस्थानें । याही नारायणें अंगीकारावीं ॥७२॥

उदंड विदंड वितंड । देहद्वयाचे आभंड ।

जे जे दिसे अंड अंड । ते ते शुभ्र चंड सांभाळी ॥७३॥

देहभरणाची ममता । देह पोशिती जे सत्ता ।

त्याहि वरी सूक्ष्मता । ते कृपावंता सांभाळीं ।।७४॥
तिमिर त्रिगुण अवघे । जें जें आले वोघें ।

तैसे तें मी नेघें । तें तूं सकळ वेगें सांभाळीं ।।७५॥

योनींचिया कष्टा । वरी वासना होती भ्रष्टा ।

त्या त्या करूनि प्रविष्टा । रत झालों तुझ्या चरणीं ।।७६।।

विद्या वयसा कुळ । ब्रह्मकर्म आचारशीळ ।

गेले आले विव्हळ । ते तूं दयाळ सांभाळीं ॥७७॥

नाम नाना जन्म अवतार । नाना शाखांचे निर्धार ।

नाना गोत्र उच्चार । तुझा विचार तूं जाणसी ।।७८।।

पाठ वेदादि वचनें । शास्त्रदृष्टी अवलोकनें ।

कीर्तनीं गुण वर्णनें । तेहि नारायणें अंगीकारावी ॥७९॥
सर्वमय सर्व सपाट । त्यावरी करूनि चालिलों वाट ||

चंद्र सूर्य नक्षत्रें घनदाट । करूनि एकवाट पायरी ।।८०॥

सर्व अंडांचे ब्रह्मांड । मी न म्हणे अंडा अंड ।

खंडे करूनियां विखंड । प्रचंड मी तुजसी बोलें ॥८१॥

रोमरंध्रीं ब्रह्मांडें । सकळ विराटमय खंडें ।

ऐसी महाभूतें प्रचंडें । तुझ्या अंगी दातारा ।।८२॥

तूं विश्वरूपपटाची घडी । तारक ब्रह्मचि उघडी ।

माया निजदृष्टी न चोखडी । तुझी मूर्ति न्याहाळिली ।।८३॥

तें न सुटे निजकळे । येऱ्हवीं हें नाकळे ।

तुझ्या कृपागुणें आकळे । तुझिया दासा निजभक्तां ।।८४॥

अनंत या नामाचा संकेत । मन मुराले जेथें निर्धूत ।

तूंपणे परमाद्भुत । परमानंदा ॥८५।।

गुणाग्रगोसावी तूं राम । गुण समुद्र गुणग्राम ।

सकळ भूतांचा विश्राम । तुज नमो ।।८६॥

नमन केलिया विभूतीं । चित्त रमलें झाली विश्रांती ।

तुज देखिलिया श्रीपती । न राहे चित्तीची तळमळ ॥८७।।

नमन हेंचि थोर दिसे । एऱ्हवीं तरंगाकार भासे ।

देखिलें तितुकें नासे । नैश्वर्य ऐसें श्रुति बोले ॥८८॥

नमन हेंचि परम । नमन हेंचि सुवर्म ।

नमन हेंचि आत्माराम । करूनि घालीं ॥८९॥

नमन हाचि अनुभव । नमन हाचि मुख्य भाव ।।

नमन हाचि पैं देव । देवाधिदेव तूं पावसी ॥९०।।

नमन हेंचि श्रेष्ठ पीठा । नेतसे तुझिया वाटा ।

तुज ऐसा श्रेष्ठा । मग वाटा काय कराव्या ।।९१।।

नमन हेंचि तारक । नमन हाचि विवेक ।

नमनेंविण त्रैलोक्य । आडमार्गें रिघताती ॥९२।।

नमन लटिकें नव्हे नव्हे । नमन भलतियासी न साहे ।

जयें साह्य सखा होय । श्रीनिवृत्ती ।।९३।।

नमना एवढा मंत्र । नाहीं नाही धुंडितां शास्त्र ।

विचारिल क्षणमात्र । तोचि जाणे येथींचे ।।९४।।

नमन करी ब्रह्मा श्रेष्ठ । नाभीकमळी धरी वैकुंठ ।

नमन करी नीळकंठा । तीर्थें मस्तकीं वंदिता ।।९५।।

इंद्र चंद्र महेंद्र थोर । नमनेंविण नैश्वर ।

आंडामध्ये चराचरा । नमनेंविण न तरती ॥९६॥

श्रीगुरुकृपा जैं होय । तैं नमनाची ऐसी सोये ।

पावोनि सुगम उपाये । नमो नमस्ते तुज ॥९७॥

नमस्ते नमस्ते नमस्ते । पुढतीं पुढतीं नमस्ते ।

समाधिसुख हस्ते । नमो नमन करितां ॥९८॥

नमो आदिपीठा । शिवादिक वरिष्ठा ।

येथे येऊनि वैकुंठा । समाधि शेज घातली ॥९९॥

महाविष्णु तूं योगरूपा । महारूपाचिया स्वरूपा ।

महादित्या अमूपा । कोटी सूर्य तेजसा ।।१००।।

शंखचक्रानें मंडित । करकमळ तुझें मिरवत ।

पदक हृदयावरी शोभत । आणि श्रीवत्सलांछन ॥१०१।।

अनंत बाहूंचा मेळ । तो तूं चतुर्भुज गोपाळ ।

मुगुट विराजित तेजाळ । कोटी सूर्याहूनि प्रभा ॥१०२॥

पितांबर माळां कंठी । सर्वांगीं चंदनाची उटी ।

हिरे माणिकें कटीतटीं । अनेक कीळा फाकती ॥१०३।।

क्षुद्रघंटिकाचिया वोळी । घणघणाट तया तळीं ।

देहुडा पाऊलीं निश्चळीं । वेणु वाजविसी सुस्वरें ।।१०४॥

रुणुझुणु रुणुझुणु । ऐसा वाजविसी वेणु ।

सुंदर तूं श्यामतनु । अलंकापुरी उभा अससी ॥१०५॥

सभोंवते गोपाळ तुझे । ते अंतरंग सखे माझे ।

पुंडलिक तरि सहजें । प्राण सखा मैं माझा ।।१०६॥

ऐसा ज्ञानउद्बोध बोलें । ज्ञानांजन निरसलें ।

विज्ञानहि हरविलें । दृश्य द्रष्टेपणेसी ॥१०७।।

बापरखुमादेवीवरू । समाधि देऊनियां स्थिरू ।

वरी ठेवोनियां अभय करू । वर देऊनि राहिला ॥१०८॥

अभंग ४५ वा

ऐसी स्तुति नमनाची । केली तया भगवंताची ।

ऐकतां झाली रुची । म्हणे धन्य धन्य रे ज्ञानेश्वरा ॥१॥

कैसी स्तुति परिकर । जपतां नामावळी साचार ।

वेगीं तुष्टले हरिहर । निज ब्रह्मस्वरूप ॥२॥ध्रु.||

वैष्णव सभोंवतें उभे । तिहीं जयजयकार प्रतिभें ।

करूनि रुक्मिणीवल्लभें । तयां प्रसाद दिधला ॥३॥

मागुतां ज्ञानदेव वदे | म्हणे धन्य धन्य तुझीं चरणारविन्दें |

जेथें रातलीं योगीवृन्दें | ते चरण धन्य धन्य ||४||

पुंडलिकें स्तवन | करावें तंव नारायण |

म्हणे सन्मुख उभा सोपान | त्यासी समाधि देणें लागेल ||५||

निवृत्ती मुक्ताई दोघे | ते बुझाविली पांडुरंगें |

उद्धव अक्रूर वेगें || तयांसंगें निरविली ||६||

ज्ञानदेवासी उद्धव | बोले एकांतींचा भाव |

तुम्हां तुष्टला देवाधिदेव | धन्य धन्य वैष्णव तुम्ही ||७||

ज्ञानदेव म्हणे स्वामी । दीन रंक विठोबाचे आम्ही ।

धन्य धन्य भाग्याचे तुम्ही । जे निरंतर विष्णुसंगें ॥८॥

उद्धव म्हणे ज्ञानेश्वरा । आम्ही जाणो कृष्णावतारा ।

परि पांडुरंग मूर्ति निर्धारा । तूं आणि पुंडलिक जाणसी ॥९॥

म्हणे ज्ञानदेवें । मागुतीं स्तवन आरंभिलें भावें ।

तें ऐकावया देवें । एकचित्त पैं केलें ॥१०॥४५||

अभंग ४६ वा

कर जोडोनियां पुढें । लोटांगण टाकिलें गाढ़ें।

म्हणे स्तवन करावया मी वेडें । काय जाणें तुझा महिमा ॥१॥

तरी पांडुरंगा तूं दयाळु । भक्तभाविकां कृपाळु ।

भीमातटी उभा गोपाळु । पुंडलिकाकारणें ॥२॥

चंद्रभागा सरोवरीं। नीरे भिवरेचें तीरीं।

वाट पाहसी हरी । भक्तसाह्या कारणें ॥३॥

तरी उदार शूर महिमेचा । खुंटलिया चारी वाचा।

तेथ पवाडु मज कैंचा । वर्णावया सामर्थ्य ॥४॥

शेषा ऐसा स्तुती करी । तया नाकळसीच श्रीहरि ।

जिव्हा चिरलिया भग्नधारी । मग मौन्येचि राहिला ॥५॥

तो तूं अलंकापुरी येसी । मज दीना समाधि देसी ।

देव म्हणे तूं होसि । साक्षात ज्ञानरूप ॥६॥

ज्ञानदेव साक्षात नाम तुझें । तें ज्ञान हृदयीचें माझें ।

हे जन तारावया काजें । तुवां अवतार घेतला ॥७॥

नामा म्हणे देव हरि । पुढता पुढतीं सहाकारी।

वर देऊनि अधिकारी । आपणचि जाहला ॥८॥४६||

अभंग ४७ वा

तंव अंतरिक्षी गगनीं । देव बैसोनि विमानीं ।

वरुषताती दिव्य सुमनीं । पांडुरंगावरीं ॥१॥

विठोबा गुणनिधी । सवें पुंडलिक सुबुद्धि ।

लघिमा आणिमादि सिद्धी । सवें असती ॥२॥ध्रु.॥

मग नेमिलियां तिथीं । अष्टमी कृष्णपक्ष समर्थी ।

कीर्तन केलिया यथार्थी । ब्रह्मलोक पाविजें ॥३॥

नवमीं गजर कथेचा । तरि वैष्णव तोचि साचा ।

चतुर्भुज होईल हे वाचां । वदोनियां गेले ॥४॥

सहज ते दशमीं । दिंडी जागरण आश्रमीं ।

तो येईल वैकुंठग्रामीं । कीर्तन करीताची ॥५॥

एकादशी श्रेष्ठ गाढी । नामस्मरणें कोटी याग जोडी ।

एक एक घडी युगाएवढी । एवढें सामर्थ्य इयेचें ॥६॥

एकादशी दिननिशीं । जागरणीं हृषिकेशीं ।

कीर्तन करितां अहर्निशीं । तरि तो तारिल सर्व जनां ॥७॥

द्वादशीं क्षीरापतीं । कीर्तन करीत आल्हादीं।

तो पावन होईल गोविंदीं । निजपदी विष्णूच्या ॥८॥

त्रयोदशीं उत्तम थोर । करील दिंडी पताका गजर ।

टाळ मृदुंग झणत्कार । तरी तो सकळ कुळ तारील ॥९॥

नामा म्हणे चतुर्दशीं । आमावास्येचा दिवशीं ।

ज्ञानदेवी राहेल नेमेंसी । तरी तो तरेल भूतळीं ॥१०॥४७॥

अभंग ४८ वा

ऐसें वदोनि पांडुरंगें । समस्तांसी वस्त्रे दिव्य अंगें ।

देऊनि भूषणें अनेगें । रत्नमुक्ताफळें अलंकार ॥१॥

धन्य जन्मले महितळीं । कीर्तन करील हरिजवळीं ।

तो पावेल गोपाळीं । अलंकापुरीं बोलिले ॥२॥ध्रु.॥

सवें रुक्मिणी सत्यभामा । त्या पुसती पुरुषोत्तमा ।

थोर श्रेष्ठ येथील महिमा । भूमीवरी वैकुंठ ॥३॥

देव म्हणे जंववरीं हे धरा । तंववरीं हे समाधि स्थिरा ।

कीर्तन करील तो सैरा । चतुर्भुज होईल ॥४॥

हें शिवपीठ शिवाचें । आणि मूळस्थान अगस्तीचें ।

जन्म झाले स्वामीचे । तो हा पुण्यभूमि ठावों ॥५॥

पूर्वापार कल्पांतयुगीं । अनेक पुण्ये घडले यागीं ।

अनंत तपें तपलें योगी । तो हा अलंकापुरी ठावो ॥६॥

येथे रामकृष्ण कथा । जो करील सर्वथा ।

तो पुढें न पावेल व्यथा । भवबंधापासुनी सुटेल ॥७॥

सप्तद्वीप नवखंडें । आणि अनंत ब्रह्मांडें ।

त्याहूनि हे वो उदंडें । पुण्य जोडेल नामें ॥८॥

हे उत्तमोत्तम थोर । सकळ जीवांसीं माहेर ।

नाम घेतां तरेल चराचर । तो हा सुलभ ठावो रुक्मिणी ॥९॥

नामा म्हणे स्वमुखें देवो । बोलोनि वर्णिला हा ठावो ।

अलंकापुरी पाहा हो । प्रत्यक्ष वैकुंठरूपें ॥१०॥४८॥

अभंग ४९ वा

नित्य अनुष्ठान ये तीर्थी । त्याचे पूर्वज उद्धरिती ।

जे कां अन्नदान करिती । ते पावती वैकुंठराज्यें ॥१॥

ऐसें तीर्थक्षेत्र उत्तमोत्तम । आणिक नाहीं यासी सम ।

शिवपीठ हे मनोरम । अलंकापुरीं हें देखा ॥२॥धृ.॥

न वर्णवे येथिंची थोरी । जेथें साक्षात श्रीहरि ।

येऊनियां झडकरी । ज्ञानदेवा समाधि दिधली ॥३॥

अनंत पुण्य जें गांठीं । तरीच ज्ञानदेव पडे दृष्टीं ।

हें अगाध पुण्य धुर्जटी। बोलोनियां गेले ॥४॥

सिद्ध साधकाचें स्थळ । सर्व तीर्थां हेंचि मूळ ।

वास केलिया नित्य काळ । तरि महादोष हरतील ॥५॥

अजानवृक्षाखालीं कथा । नित्य जोडे जरी सर्वथा ।

तो नर नवजाय यमपंथा । ऐसें जगन्नाचें वचन॥६॥

सुवर्णाचा अश्वत्थ । नित्य पूजलिया स्वस्थ ।

लक्ष्मी न सांडील त्यास । जन्म देईल पवित्र ॥७॥

नित्य प्रदक्षिणा सप्त । तरी अगाध पुण्य त्वरित ।

पूर्वज वैकुंठासी जात । बेचाळिसां सहित ॥८॥

नित्य ब्राह्मण भोजन । द्‌विजा देती जे कां अन्न ।

करुनिया संध्यास्नान । ते पवित्र निर्मळ होती ॥९॥

नामा म्हणे अलंकापुरी । धन्य धन्य मनोहर ।

पवित्रासीं परम परिकर । त्रिभुवनीं दुर्लभ ।।१०।।४९।।

अभंग ५० वा

ऐसा तीर्थविध महिमा । सांगतां थोर असे सीमा ।

ब्रह्मा येतसे साउमा । विष्णुभक्तालागीं ॥१॥

न वर्णवें महातीर्थ । सिद्धेश्वरलिंग समर्थ ।

ज्ञानदेव तेथें नांदत | अलंकापुरीं सिद्धेश्वरीं ॥२॥

पुंडलिक म्हणे पूर्वील । हें शिवपीठ निर्मळ ।

येथें नीळकंठ दयाळ । तप करूनि गेले ।।३।

पंढरीहुनी हें अधिक । ऐसें बोलती ब्रह्मादिक ।

धन्य धन्य येथिचे लोक । ज्यासी स्नान संध्या घडत ।।४।।

देव म्हणें ऐकें भक्ता | महामहंत तूं सर्वथा |

आणिक हा विवेक वक्ता | ज्ञानदेव ||५||

तुम्ही दोघे इये सृष्टीं । जगत उद्धारावया परिपाठी ।

कीर्तन करितां वैकुंठी । सकळ भक्त येतील ॥६॥

पुंडलिकें नमस्कारिले हरि । चरणरज वंदिले शिरीं ।

म्हणे मी भाग्याचा तरी । तूं साहाकारी आमुचा ॥७॥

नामा म्हणे देवभक्त । एक होऊनि असे बोलत ।

तंव निवृत्ती स्तुती करीत । अगाध महाविष्णूची ॥८॥

अभंग ५१ वा

परब्रह्म परममूर्ति । परमधर्म परात्परदीप्ति ।

परमप्रियो परंज्योती । स्वात्मा स्वयें ॥१॥

अकळ विकळ निरंजना । ज्ञाता ज्ञेय विवेकघना ।

संशयदृश्य निरसना । विश्वप्रियो ॥२॥ध्रु.||

नलिनी कमल विकाशा । नयनघन विश्वेशा ।

नमन चरणलेशा । चित्सुखा ।।३।।

चराचर चिदांग अंग । स्नान शिवनिर्व्यंग ।

विष्णुमूर्ति पांडुरंग । आकाररूपें भीमातटीं ॥४॥

सजळ जळदघना । सजळ निर्मळ वदना |

दशन कोटि सूर्यकिरणा । मुगुट विराजित ॥५॥

नीलोत्पल नीलवर्णा । श्यामसुंदरा मूर्तिघना ।

स्तवितां सहस्रवदना । न कळे पार तुझा ॥६॥

रजतमाचे मेहुडे । तुज पाहतां मज न संपडे ।

नाहीं तुझिने पाडें । भूमंडळीं दैवत ॥७॥

अनंत ब्रह्मांडाधीशा । गुण न वर्णवेती परेशा।

तुंवा ज्ञानदेवा ऐसा । अपणामाजीं साठविला ॥८॥

निवृत्ती म्हणे आम्ही दीनें । तारावी तुम्ही नारायणें ।

मग काय आदरिले सोपानें । तेथवरी येणे घडेल ॥९॥

ऐसी निवृत्तीची स्तुती । ऐकुनि श्रीपती ।

नामा म्हणे देव तयाप्रती । बोलते जाले ॥१०॥

नारायणें स्तुति परिसिली । ऐकोनियां अव्यक्त बोली ।

म्हणे तुवां गीतेची टीका केली । ते प्रमाण आम्हांसी ॥११॥

नामा म्हणे हरि देवें । जाणोनियां अंतरभाव ।

तुष्टले गुणगौरवें । निवृत्तीसी दिधलें ।।१२।।

अभंग ५२ वा

देव म्हणती शिवाचा । तूं गा अवतार साचा ।

स्तुति करसिल वाचां । हेंचि नवल ॥१॥

सप्तद्वीप नवखंडें । आणि अनंत ब्रह्मांडें ।

रोमरंध्री ज्या अखंडें । तो मनुष्यरूपें मेदिनी ॥२॥ध्रु.॥

निवृत्ति म्हणे नाना अवतारीं । तुज सेवेंचि आम्ही हरी ।

जें जें प्रेरिसी कामारी । तुझें कर्तव्य करूं ।।३।।

देव म्हणे भलें आतां । सांगशी तें करूं सर्वथा ।

हरूं भवार्णवाची व्यथा । या त्रैलोक्याची ।।४।।

तंव निवृत्तीनें लोटांगण । म्हणे नाहीं तुज समान ।

आम्हांकारणे नारायण । तूं साहाकारी होसी ।।५।।

आमुचीं तपें सामर्थें । तुवां सिद्धी पावविलीं जगन्नाथें ।

सरतें करूनि आम्हांते । विष्णुमार्गी लाविलें ॥६॥

देव म्हणे तूं आदि । विष्णुमार्गीची सकळ सिद्धी ।

जाणतां एकत्र त्रिशुद्धी । निवृत्ती होसी ॥७॥

नामा म्हणे ऐसे लळे । पाळीले तयाचे गोपाळें ।

देऊनियां समाधी सोहळे । विष्णुधर्म प्रतिष्ठिला ॥८॥५२॥

अभंग ५३ वा

ऐसा निवृत्ती स्थिरावला । महाविष्णु संतोषला ।

मग सोपानदेवें आरंभिला । स्तुतिवाद परियेसा ।।१।।

जयजय रामकृष्णा । भक्तभावी हरी तृष्णा ।

देहीं दीपक सहिष्णा । रामकृष्ण म्हणतांचि ॥२॥

नरहरि नरकेसरी । टाळी वाजवूनियां गजरी ।

टाळ मृदंग झणत्कारी । जयजय कृष्ण म्हणों आम्हीं ॥३॥

हरिविण नाहीं सखा । त्रिभुवनीं आम्हांसी देखा।

समाधिसुखविशेषा । चरणरजें डौरवावें ॥४॥

धन्य हे भूमिका देश । आपणही जगन्निवास ।

ज्ञानदेवें केला वास । समाधिसुख घेउनी ॥५॥

निवृत्ती ऐसा श्रेष्ठ गुरू । होईल समाधीसी होय स्थिरू ।

पुढे काय करणें विचारू । तो सांगा स्वामिया ॥६॥

देव म्हणे ब्रह्मावतारा । या अवघिया चराचरा ।।

श्रेष्ठ तूंचि निर्धारा । मनुष्यरूपें अवतरलासी ॥७॥

सकळ हें तुझे व्यापक । चराचर हें त्रैलोक्य ।

अधर्म झालियां चाळक । अवतार घेती तिघे ॥८॥

ऐसें बोले पांडुरंग । तंव सोपान सर्व निःसंग ।

म्हणे सांकडे फेडितां श्रीरंग । तूंचि श्रीविठ्ठला ॥९॥

नामा म्हणे सोपानदेवें । मागुती स्तुति आरंभिली भावें ।

जेणे करूनियां बरवें । समाधि सेजेची ॥१०॥५३॥

अभंग ५४ वा

मुक्ताई म्हणे देवाधिदेवा । तूं विसावा सर्वां जीवशिवा ।

गुण गौरव अनुभवा । आम्ही जाणों तुज ॥१॥

सत्य सत्य जनार्दन । सत्य सत्य नारायण ।

सत्य सत्य तूं आमुचे धन । जगज्जीवन जगदाकार ॥२॥

तुजवांचोनि त्रिभुवनीं । दुजा न देखों नायकों कानी ।

वेदशास्त्रपुराणीं । अगाध महिमा तुझा ॥३॥

तूं देवा देवोत्तम । योगियांचा विश्राम ।

शिवाचा ही आत्माराम । ऐसा नेम वेदाचा ।।४।।

तरी भक्तालागीं ऐसा । पावसी तूं हृषिकेशा।

तुजविण नाहीं भरंवसा । ऐसा निश्चयो साचा ।।५।।

तूं परत्रिचे तारूं । तुझा आगमनिगम विचारू ।

तुज चिंतिलियां संसारू । निरसे हेंचि सत्य ।।६।।

देव म्हणे मुक्ताई । चित्त समरसें जें माझ्या ठायीं ।

तया जन्मचि नाहीं । हे सत्य जाणावें ॥७॥

नान नामा म्हणे ऐसी स्तुती । मुक्ताई जंव करिती।

तंव संत विनविती । महाविष्णूसी ॥८॥५४॥

अभंग ५५ वा

तंव पुंडलिक पुढारला । कर जोडोनि वदला ।

म्हणे वेदादिकां अबोला । तुझिया रूपाचा ॥१॥

तो तूं प्रकट श्रीरंगा । भीमातटी पांडुरंगा ।

येऊनि आमुचिया लोभा । भक्तजनां तारिसी ॥२॥ध्रु.॥

नेणों कोण भक्तपण । नेणों तुमचें महिमान ।

कोण तप कोण साधन । कोणें जन्मीं केलें होतें ॥३॥

नीरे भिवरे संगमीं । चंद्रभागेच्या उगमीं ।

वेणुनाद परब्रह्मीं । गोपाळ गजरें गर्जती ॥४॥

तरी स्वामी दीनदयाळा । महाविष्णू तूं गोपाळा ।

भक्तांलागीं कृपाळा । तारावया दासासी ॥५॥

माझें करूनियां मिस । राहिलास युगें अठ्ठावीस ।

करूनियां रहीवास । माझे भक्ति लाधलासी ॥६॥

तूं नियंता ईश्वरमूर्ति । सकळ गोसावी श्रीपती ।

तुजवांचोनी नेणें मती । दयामूर्ति परब्रह्मा ॥७॥

नामा म्हणे पुंडलिकें । स्तवन केलें ऐसें ।

तंव म्हणीतलें पुण्यश्लोकें । पुरे पुरे रे आतां ॥८॥५५॥

अभंग ५६ वा

पुरें करुनियां स्तवन । मग सारुनियां स्नान ।

पंग्ती आदरिलीं आपोषणें । भोजनें करिताती ॥१॥

धन्य धन्य ज्ञानराजा । तूं आवडलासि केशिराजा ।

पंग्ती करुनियां द्विजा । वाढितसे रुक्मिणी ॥२॥धृ.॥

राही रुक्मिणी सत्यभामा । पंचामृतें वाढिती उत्तमा ।

पुंडलिक बोलावुनि साउमा । ज्ञानदेवा पंग्ती बसविलें ।।३।।

निवृत्ती सोपान मुक्ताबाई । गोपाळ देव्हुढे दोन्ही बाहीं ।

रुक्मिणी सत्यभामा राही । वाढिती अन्ने नानाविधं ॥४॥

वैष्णव प्रेमळाचे पंग्ती । प्रार्थना करिती श्रीपति ।।

ज्ञानदेव निवृत्ती । एकवट बैसले ॥५॥

गरुड तिष्ठत होता द्वारीं । त्यासी रुक्मिणी ताट करी ।

मग गर्जिन्नले जयजयकारी । श्रीराम गोविंद उच्चारीं ॥६॥

देव आकाशीं पाहती । ब्रह्मादिक वंचलों म्हणती ।

भाग्य केवढे यांचे क्षितीं। या भक्तजनांचें ॥७॥

नामा म्हणे अलंकापुर । धन्य धन्य मनोहर ।

आपण येउनि शारंगधर । समाधि देती ज्ञानदेवा ॥८॥५६॥

अभंग ५७ वा

तंव विनवी ज्ञानदेव । देवाचा जाणोनियां भाव ।

म्हणे विष्णुभक्त सदैव । सुख सर्वदा भोगिती ॥१॥

बैसोनियां आसनीं । भक्त देव चक्रपाणि ।

तांबुल घेवोनि वदनीं । सुखसंतोषें बोलती ॥२॥धृ.||

मग पाचारिला गरुड । आणि पुंडलिक भक्त प्रौढ ।

सोपान गम्य गूढ । जाणते भक्त ॥३॥

प्रयाणासि मुहूर्त । पंढरीस जावयाचें आर्त ।

संवत्सरा जाऊनि त्वरित । समाधी देऊ सोपाना ।।४।।

ऐसा निर्धार करूनि । समस्तां भोजनें सारूनि ।

सिद्ध झाली रुक्मिणी । तंव दिन अस्तमाना गेला ।।५।।

मग तया पुष्पक मंचकावरी । शयन आरंभिलें हरि ।

नारद तुंबर वैकुंठांभीतरी । वेणु वाजविती सुस्वरें ॥६।।

भक्त भागवत भाग्याचे । तीहीं जयजयकार केले वाचें ।

ऐसें चतुर प्रहर निशींचे । हरिजागरणें क्रमिलें ॥७॥

नामा म्हणे निघतां हरि । ज्ञानदेव प्रार्थना करी ।

देवा तूंचि वैकुंठहहरि । आमचा हृदयस्थु ॥८॥५७॥

अभंग ५८ वा

उगवला दिन प्रभात । स्नानसंध्या सारीत ।

तंव उद्धव विनवीत । श्रीविठ्ठलासी ॥१॥

बहू भाग्य बहू सीमा । काय यासी पुरुषोत्तमा ।

आतां चला वेगीं आश्रमां | पंढरीप्रती ।।२॥

गरूड उभा तिष्ठत । भक्त भागवत समस्त ।

मग पुंडलिकें एकचित्त । साष्टांग नमस्कारिले हरि ॥३॥

म्हणे ज्ञानदेव यजुर्वेदी । वाग्स्नेहो वाग्बुद्धी ।

परा पश्यंती वैखरी समाधी । त्या मंत्रोक्त दिधली ॥४॥

ऐसाचि सोपान मार्ग । तूं ही करितां पांडुरंग ।
मग ग्रामलेखनाचा प्रसंग । निरोपिला कुळयाती ॥५॥

म्हणे वंशपरंपरा । न सांडावे गा आचारा ।

आम्ही जातसों पंढरपुरा । राया विठोबा सांगातें ॥६॥

मग गरुडावरीं वळघले | समस्तीं जयजयकार केलें |

ज्ञानदेवें हरिपाऊलें। दृढ धरिलीं निरंतर ॥७॥

नामा नाचे हरीचें द्वारीं । ऐसा स्वानंद अलंकापुरीं ।

विठ्ठल निघाले पंढरी । ज्ञानदेवा समाधि देवोनि ॥८॥५८॥

अभंग ५९ वा

मग उड्डाण केलें गरुडें । गगन आक्रमिलें चंडें ।

वरी आरुढले प्रचंडें । देवभक्त सकळिक ॥१॥

ज्ञानदेवावरी अभयें | सोपान झाला निर्भय |

तैसाचि निवृत्तीस उदयें | समाधि देईल हरि ||२||ध्रु.||

पक्षाचेनि फडत्कारें । ग्राम ठाकिलें संवत्सरें ।

गिरी कऱ्हे कडे पठारें । शिखरीं गरुड उतरला ॥३॥

ते दिनीं समारंभ केला । महा उत्सवो हरिसी झाला ।

जयजयकार प्रवर्तला । विमानीं दाटले आकाश ॥४॥

पाहावया कवतुक । आले देव सकळिक ।

काय करील ब्रह्मांडनायक । कवतुक अवलोकिती ॥५॥

पुंडलिक उतरला । सर्वे संतांचा मेळा ।

समाधि लक्षण डोळां । पाहती देव सकळिक ।।६।।

मग खणोनियां भूमिका । अमृतें शिंपिली देखा ।

महामंगळिक सुखा । वेदघोष आरंभिले ।।७॥

नामा म्हणे सुखसंगतीं । वैष्णव हरिनाम गर्जती ।

लक्ष्मीनारायण क्षितीं । उतरोनि समाधि देताती ॥८॥५९॥

अभंग ६० वा

सर्व तीर्थोदक हरि | सर्व नेम अंगीकारी |

होऊनी साहाकारी | समाधि देती सोपाना ||१||

मग प्रत्यक्ष सरिता | अंगा गोमती माता |

यमुना भागीरथी तत्वतां | आलिया सरस्वती ||२||ध्रु.||

ब्रह्मा इंद्र तेहेतीस कोडी | नवही नाथ सवंगडी |

संत सनकादिक गाढी | वेदघोष आरंभिले ||३||

दिव्य सुमनें देवांगना | माजीं वरुषती गगना |

निवृत्ती लागतसे चरणां | रुक्मादेवी विठोबाच्या ||४||

पुष्पकारूढ देव | मागुती आले सर्व |

पांडुरंग म्हणे सदैव | सोपानदेव ||५||

इंद्रकीळ पर्वत आहे | तेथुनि वाट जावया पाहें |

पाताळविवरीं देहें | शेष फणीचे वसे ||६||

तयासी श्रुत करावें | ऐसें गरुडासी सांगितलें देवें |

येरु निघाला लघुलाघवें | सप्त पाताळें क्रमित ||७||

नामा म्हणे अमृतकरीं | कुर्वाळुनी अभ्यंतरीं |

सोपानदेव आपणाशेजारीं | सन्मुख बैसविला ||८||६०||

अभंग ६१ वा

ऐसा सोपानासी तुष्टला । महा उत्सव हरिसी केला ।

अभयकर ठेविला । माथयांवरीं ॥१॥

म्हणे तूतें मी न विसंबे । संवत्सरी असेन स्वयंभे ।

वटेश्वरीं प्रतिभें । प्रतिवर्षी भेटी देईन ॥२॥ध्रु.॥

सिद्धसाधकाचे स्थळ । तो हा वटेश्वर प्रतिमूळ ।

यासी म्हणती सोज्वळ | नीळकंठ प्रथम नाम ॥३॥

पूर्वी हे ब्रह्मयाचे स्थान । येथें तप केलें गहन ।

महादेव येऊनि आपण । यासी प्रसन्न झाले ॥४॥

इंद्रकिळ पर्वतरूप । यासी प्रत्यक्ष नारायणस्वरूप ।

कौंडिण्यपुरीं निक्षेप । योगिनीमाता प्रत्यक्ष ॥५॥

आनंदभैरव पूर्वें । क्षेत्रपाळ मल्लनाथ नावें ।

ब्रह्मा इंद्र देव विष्णवें । नांदोनियां गेले ॥६॥

अनंत ऋषींचीं शतें | महातीर्थें व्रत दैवतें |

ब्रह्मा झाला निर्मितें | तें हें स्थळ रे सोपाना ||७||

नामा म्हणे जनार्दन । बहुत संतोषला सोपान ।

प्रत्यक्ष परब्रह्म सनातन । उपदेश करी भक्तांसी ॥८॥६१॥

अभंग ६२ वा

सोपान म्हणे देवोत्तमा । पूर्वी येथें होता ब्रह्मा ।

आणि तुम्ही पुरुषोत्तमा रामा । कोणे स्थळी होतेती ॥१॥

देव म्हणे कथा परिस । आम्ही होतों पंढरीस ।

कोट्यानुकोटी युगांस । अनंत कल्पें गेलीं ॥२॥धृ.॥

अनंत भक्तांचिया वोळीं । आणि वैष्णव भूमंडळीं ।

माजी गिवसले मेळीं । येणें पुंडलिकें ॥३॥

भक्ताचेनि आराधनें । साधिलें येणें पेणें ।

मज झालेसें येणें । या पुंडलिकाचिये भक्तीं ||४||

पूर्वापार पंढरीसी । होती विष्णुमात ऐशी ।

हें जाणोनि अहर्निशी । थोर अनुष्ठान मांडिलें ||५||

येणें प्रसन्न केलें हरा । हरें मज दाखविले निर्धारा ।

आपण राहोनि पाठमोरा । विश्व तारिलें कीर्तनें ॥६॥

येथूनि पूर्वभागें पंढरी । पश्चिमें ब्रह्मा शंकर निर्धारी ।

अवतार कऱ्हे पाठारीं । मानदेशीं महादेव ॥७॥

तेहतीस कोटी देवस्थळीं । पश्चिमें पूर्व बैसका मंडळीं ।

तप तपीन्नले चंद्रमौळी । इये इंद्रनीळ पर्वतीं ॥८॥

द्रोणाचळ चंद्राचळ । हनुमंतें आणिला विशाळ ।

त्याच्या शाखा अधोमूळ । तो हा पर्वत इंद्रनीळ ॥९॥

येथे वल्ली सुवर्णाकार । गुप्त असती त्या निर्धार ।

रात्री समई त्या दिप्ताकार । जनासी दिसती ॥१०॥

याचेनि दक्षिणद्वारा । गोकर्ण महाबळेश्वरा ।

पाताळद्वारा पूजा ईश्वरां । बेल निघती अद्यापी ॥११॥

नामा म्हणे ऐसीं देवें । सांगितलीं उत्तम लिंगें शिवें ।

जेथें वसिजे महादेवें । तें सांगिजेल पुढें ॥१२॥६२॥

अभंग ६३ वा

ऐसी कथा सविस्तरी । देवें सांगितली पुढारी ।

मग शेषाद्रि पर्वतशिखरीं । गरुडासी उभें केलें ॥१॥

धन्य धन्य तो सोपान । धन्य धन्य समाधि धन ।

प्रत्यक्ष येऊनि नारायण । समाधि देती सोपाना ॥२॥ध्रु ॥

अनंत वैष्णवांचा मेळ । दिंडी पताकांचा रोळ ।

रामकृष्ण नामें कल्लोळ । ब्रह्मानंद करिताती ॥३॥

तंव उतरली विमानें । देव वरुषती सुमनें ।

ब्रह्मा इंद्र आनंदे तेणें । डुल्लत बैसले ॥४॥

संत सनकादिक ऋषि | सिद्ध साधक अहर्निशी |

महाभक्त तापसी | एकवटले ||५||

समाधिस्नानाचा आनंद । ऐकोनिया गोविंद ।

कथा सांगितसे भेद । तें ऐको बैसले ॥६॥

म्हणे सोपान धन्य धन्य । वेदपुरुष तूं संपन्न ।।

येथें मिळोनियां ऋषिजन । वेदघोष करिताती ॥७॥

नामा म्हणे प्रत्यक्ष देव । येउनी सिद्ध केलें सर्व ।

काय वर्णूं ते गुणगौरव । हरि करीं सोपानाचे ॥८॥६३॥

अभंग ६४ वा

सोपान समाधी बैसला । सकळ देवीं पुष्पवरुषाव केला।

जयजयकारें भूगोल कोंदला । वैष्णव गर्जती नामघोषें ॥१॥

धन्य धन्य तो सोपान । स्वमुखें वर्णी श्रीभगवान ।

क्षणक्षणा करी स्तवन । उॠषिमुनि जन स्तवितात‍ी ॥२॥ध्रु.॥

नारद तुंबर उद्धव । पुंडलिक आदि करूनि सर्व ।

गण गंधर्व मुनिपुंगव । स्तविती सोपानातें ।।३॥

म्हणती केव्हडे भाग्य या दोघांचें । जें निधान ब्रह्मादिकांचें ।

जे ध्येय शंकराचें । निजात्मसुख जीवनकळा ॥४॥

तो स्वयें श्रीभगवंत । याची परिचर्या करित ।

भक्ता साह्य श्रीअनंत । तो अभिमान सिद्धी नेला ॥५॥

निजभक्तांचें कोडकौतुक । करू जाणे ब्रह्मांडनायक ।

तया वंदिती इंद्रादिक । वरकडाचा तो पाड किती ॥६॥

पुंडलिक उद्धव विस्मयो करिती । हे दोघे भाग्याचे त्रिजगती ।

याचेंनि नामें जग उद्धरती । सुख पोहे घातली ॥७॥

नामा म्हणे सकळ जनाचा । उदयो झाला दैवाचा ।

सुकाळ झाला स्वानंदाचा । स्मरणें या दोघांचेंनि ॥८॥६४॥

अभंग ६५ वा

नामयाचा धरूनि हात । क्षणक्षणा पंढरिनाथ ।

ज्ञानदेवातें आठवित । कंठ सद्गदित करूनियां ॥१॥

उद्धवातें म्हणे पांडुरंग । या सज्जनाचा न व्हावा वियोग ।

हृदय होत दोन भाग । जाणा अंतरंग तुम्ही माझें ॥२॥ध्रु.॥

त्याविण गोड मज न वाटे । ऐसें जीवलग कैचे भेटे ।

जें मनींचा वियोग दुःख तुटे । समाधान वाटे हृदयामाजीं ॥३॥

ज्ञानदेवा ऐसा निधान । नाहीं धुंडितां त्रिभुवन ।

न सांपडे न देखो जाण । तुझी आण उद्धवा ।।४।।

धन्य धन्य हे तिघेजण । मुक्ताई मुक्तरूपें पूर्ण ।

ईहीं उद्धरिलें त्रिभुवन । भवदुःख दारुण नाशिलें ॥५॥

याचेनि पडीपाडें । उपमेसी दिसे थोडें ।

परि ज्ञानदेवा ऐसें रत्न जोडे । हें न घडे कल्पांतीं ॥६॥

माझे जिवींचें गुह्यगुज । हे उद्धवा सांगितलें तुज ।

कां नामदेव जाणे सहज । आणि सकळ संत सज्जन ॥७॥

ऐसें सांगे रुक्मिणीपासीं । घडोघडी हृषिकेशीं ।

तंव रुक्मिणीही निज मानसीं । या जीवलागासी आठवी ॥८॥

संतभक्त सकळ मिळोनि । मस्तक ठेविला श्रीचरणीं ।।

तंव बोले रुक्मिणी । तुम्हापासुनि दुरी नाहीत ॥९॥

निवृत्ति तुम्हां नाहीं भिन्नता । त्याचा आत्मा तुम्ही हो अनंता ।
शिव विष्णु ऐक्यता । असे स्वभावता मुळीच ॥ १०॥

ज्ञानदेव तरी तुमचाचि अंश । केवळ परब्रह्म स्वयंप्रकाश ।
स्वात्मसुख निज रहिवास । पूर्णस्वानंद उद्बोध ॥११॥

गोडी आणि गुळ | पुष्प आणि परिमळ |

रत्न आणि कीळ | भेद कैंचा स्वामी ||१२||

सोपान तरि पोटींचा । तो प्राण असे तुमचा ।

तेथें शब्द भिन्नपणाचा । कोठे मिरवेल स्वामी ॥१३॥

नामयाने धरूनि चरण । साष्टांगी करूनि नमन ।

म्हणे तूं सर्वांचे स्वानंद जीवन । मी दीन काय बोलों ॥१४॥६५॥

अभंग ६६ वा

भगवंत म्हणे नामयासी । हें यथार्थ तूं बोलसी ।

परि क्षणक्षणा गुण आठवती मानसीं । या ज्ञानदेवाचे ॥१॥

भक्त ज्ञानी आणि वैरागी । ज्ञानदेवा ऐसा चहूंयुगी ।

न देखों नायकों याची लागीं । खंती वाटे बहुत ॥२॥

उद्धवें चरणावरी ठेऊनि माथा । कांहीं एक विनंति जगन्नाथा ।

हें सांगावें जी कृपावंता । गुज अंतरीचें स्वामी ॥३॥

निवृत्ति ज्ञान सोपानासी । हे बैसविले समाधीसीं ।

मुक्ताईची स्थिती कैसी । हें हृषिकेशी सांगावें ॥४॥

मग देव म्हणे तूं काय नेणसी । परि प्रीतीने आम्हां पुससी ।

तरी ऐक गा तिथिये स्थितीसी । उघडचि बोलों ॥५॥

तरी नाथाचा हात इचिये शिरी । यालागी हे सत्य सनातन अवधारीं ।

महाकल्पाचिया अवसरीं । सोडील देह ।।६।।

तंववरी इचे शरीर । अभंग चिरकाळ निरंतर ।

महद्माया योगिणी साचार । मुक्ताई उद्धवा ।।७।।

मग सकाळ देव बैसोनि विमाना । गेले आपुलें निजभुवना ।

ऋषि मुनि गण गंधर्व सकळही जाणा । हरिसी नमुनि चालिले ॥८॥

म्हणती ज्ञानदेवाच्या प्रसादें । देखिली विठ्ठलचरणारविंदें ।

रूप पाहातां डोळियां दोंदें । निघति स्वानंदें सुखाची ।।९।।

म्हणती पाहा हो भाग्याचे केव्हडे | जें कैवल्य ब्रह्म उघडें |

ऐसे संवत्सर ग्रामीं वाडेंकोडें | देखिलें सकळिकीं ||१०||

तरी ज्ञानदेव हा पायाळ जाण । निवृत्तिदेव तोचि अंजन ।

सोपान तो नयन । तेथील सुखप्राप्ती ॥११॥

ऐसें करोनि साधन । साधिलें श्रीविठ्ठल निधान ।

तेथींचे विभागीं ज्याचें भाग्य पूर्ण । तीही प्रत्यक्ष देखिलें ॥१२।।

या निधानासी कुरवंडी । मुक्ताई देहभावचि सांडी ।

मग उभविली गुढी । आनंदाची सर्वकाळ ।।१३॥

नामा म्हणे पंढरीसी । चालिले हृषिकेशी ।

भक्तांचि मांदी देवासरिसी । नामघोष गर्जत चालिले ।।१४।।६६॥

अभंग ६७ वा

ऐसें यांचे चरित्र जो आवडी ऐकें । तो या भक्तांबरोबरी तुके ।

भोगी वैकुंठींची निजसुखें । हें बोलिले स्वमुखें श्रीविठ्ठल ॥१॥

धन्य धन्य ते भक्त । ज्याकारणें श्रीभगवंत ।

ऐसे पवाडे करित । विश्व उद्धरीत तेणें करूनि ॥२॥ध्रु.॥

जे भाग्याचे होती । त्यांसीच होय हे प्राप्ती ।

ते मागुती न येति | पुनरावृत्ती गर्भवासा ।।३।।

नामा म्हणे नामस्मरणें । तुटतीं अनंत जन्मांची बंधनें ।

पाविजे सुख निदानें । पद साक्षात श्रीविठ्ठलचरणाचें ॥४॥६७॥

|| भजन - ज्ञानेश्वर माऊली ज्ञानराज माऊली तुकाराम ||

टीप - यानंतर पहिला अभंगाचे वाचन करावे.

अभंग १ ला

ज्ञानदेव म्हणे विठ्ठलासी | समाधान तूंचि होसी |

परि समाधी हे तुजपासीं | घेईन देवा ||१||

न लगे मज भुक्ति | न लगे मज मुक्ति |

तुझ्या चरणीं आर्ती | थोर आथी ||२||ध्रु.||

विठोजी म्हणे ज्ञानदेवा | ज्ञानसागरा अनुभवा |

वचनेंचि विसांवा | झाला मज ||३||

ऐकें ज्ञानचक्रवर्ती | तूं तंव ज्ञानाचीच मूर्ति |

परि पुससी जे आर्ती | ते कळली मज ||४||

येक येक अनुभव कृपा | पदपदांतरें केला सोपा |

तरी त्यांत माझी कृपा | सकळही वोळली ||५||

ज्ञानदेवें चरणीं मिठी | मनेसीं पडली येकी गांठीं |

दृश्यादृश्य झाली एकदृष्टी | प्रत्यक्ष भेटी विठ्ठलेंसी ||६||

कर ठेऊनी कुरवाळीं | सर्वांग न्याहार न्याहाळी |

म्हणे तुवां घेतली जे आळी | ते सिद्धीतें पावेल ||७||

नामा उभा असे सन्मुख | ऐकतां थोर खेद दुःख |

म्हणे ज्ञानांजन महासुख | समाधि घेतसे ||८||१||

परिशिष्ट

१. आरत्या व उपसंहार

१. प्रेम सप्रेम आरती

प्रेम सप्रेम आरती | गोविंदातें ओंवाळिती ||१||

धन्य धन्य तें लोचन | नित्य करिती अवलोकन ||२||ध्रु.||

बाळा प्रौढा आणि मुग्धा | ओंवाळितां परमानंदा ||३||

नामा म्हणे केशवातें | देखूनि राहिलों तटस्थें ||४||

२. युगें अठ्ठावीस विटेवरी उभा

युगें अठ्ठावीस विटेवरी उभा । वामांगी रखुमाई दिसे दिव्य शोभा ।

पुंडलिका भेटी परब्रह्म आलें गा । चरणीं वाहे भीमा उद्धरी जगा ॥१॥

जयदेव जयदेव जय पांडुरंगा । रखुमाई वल्लभा राहीच्या वल्लभा पावें

तुळसीमाळा गळां कर ठेवून कटीं । कासे पीतांबर कस्तुरि लल्लाटी ।

देव सुरवर नित्य येती भेटी । गरुड हनुमंत पुढे उभे राहती ॥२॥

आषाढीं कार्तिकी भक्त जन येती । चंद्रभागेमाजी स्नाने जे करिती ।

दर्शन हेळामात्रे तयां होय मुक्ति । केशवासी नामदेव भावें ओवाळिती ॥३॥

३. जयदेव जयदेव जय ज्ञानदेवा

इंद्रायणीचे तटीं धरिला रहिवास । विश्व तारावया लक्ष्मीनिवास ।

ज्ञानेश्वररूपें धरिले निजवेष । वर्म जाणे तया सद्गुरु उपदेश ॥१॥

जयदेव जयदेव जय ज्ञानदेवा । जीवाशिवाचा आदि परब्रह्म ठेवा ॥ध्रु.॥

कृष्ण एकादशी कार्तिकमासीं । आपण पंढरिनाथ सनकादिकांसी ।

यात्रेसी येताती स्वानंदराशी । दर्शन घडे तया निजमुक्ती देसी ॥२॥

म्हैसिक पुत्र केला वाचक वेदाचा । प्रतिष्ठानी गर्व हरिला विप्रांचा ।

विशेष अर्थ केला भगवद्गीतेचा । प्रत्यक्ष द्वारी शोभे पिंपळ कनकाचा ।।३।।
सनकसिद्धगणांमाजीं तूं श्रेष्ठ । ज्ञानावरी माजीं ज्ञानवरिष्ठ ।
अनुताप दीप्ति विश्व घनदाट । नामयावरी लोटे प्रेमाचा लोट ॥४॥

४. आरती ज्ञानराजा

आरती ज्ञानराजा | महाकैवल्यतेजा |

सेविती साधुसंत | मनु वेधला माझा ||१||

आरती ज्ञानराजा ||ध्रु.||

लोपलें ज्ञान जगीं | हित नेणती कोणी |

अवतार पांडुरंग | नांव ठेविलें ज्ञानी ||२||

प्रगट गुह्य बोले | विश्व ब्रह्मचि केलें |

रामा जनार्दनीं | पायीं टकचि ठेलें ||३||

५. जयजयाजी भक्तराया जीवलगा नामया

जन्मतां पांडुरंगें जिव्हेवरी लिहिलें |

शतकोटी प्रमाण हें कवित्व रचिलें ||१||

जयजयाजी भक्तराया जीवलगा नामया |

आरती ओंवाळितां चित्त पालटें काया ||२||ध्रु.||

घ्यावया भक्तिसुख पांडुरंग अवतार |

करोनियां तीर्थ मिसें केला जगाचा उद्धार ||३||

प्रत्यक्ष हे वाळवंट परीस केलें |

हरपली विषमता द्वैतबुद्धी निरसली ||४||

समाधि महाद्वारीं श्रीविठ्ठलचरणीं |

आरती ओंवाळितों परिसा कर जोडोनि ||५||

६. घालीन लोटांगण वंदीन चरण

घालीन लोटांगण वंदीन चरण ।

डोळ्यांनी पाहिन रूप तुझें ॥१॥

प्रेमें आलिंगीन अनंत पूजीन ।

भावें ओवाळीन म्हणे नामा ॥२॥

||विठ्ठल रखुमाई विठोबा रखुमाई ||

७. आकल्प आयुष्य व्हावें तया कुळा

आकल्प आयुष्य व्हावें तया कुळा |

माझिया सकळां हरीच्या दासा ||१||

कल्पनेची बाधा न हो कवणें काळीं |

संतमंडळीं सुखी असो||२||ध्रु.||

अहंकाराचा वारा न लागो राजसां |

माझिया विष्णुदासां भाविकांसी ||३||

नामा म्हणे तया असावें कल्याण |

ज्यामुखीं निधान पांडुरंग ||४||

८. मागणें तें एक तुजप्रती आहे

मागणें तें एक तुजप्रती आहे |

देशी तरी पाहें पांडुरंगा ||१||

या संतांसी निरवीं हेंचि मज देई |

आणिक दुजें कांहीं न मागें तुज ||२||ध्रु.||

तुका म्हणे आतां उदार तूं होईं |

मज ठेवीं पायीं संतांचिया ||३||

||ज्ञानदेव तुकाराम ज्ञानदेव तुकाराम ज्ञानदेव तुकाराम ||

|| तुकाराम तुकाराम तुकाराम ||

|| पुंडलिक वरदा हरि विठ्ठल श्री ज्ञानदेव तुकाराम ||

२. संत नामदेवस्तवः ।

भक्तरत्नं संतवर्यं भक्तिमार्गप्रबोधकम् ।

विठ्ठलाङ्घ्रिरतं वन्दे नामदेवं पुनः पुनः ॥१॥

पंढरीक्षेत्रमाहात्म्यं येन लोके प्रचारितम् ।

कीर्तनाद्यगुरुं वन्दे नामदेवं पुनः पुनः ॥२॥

अभंगरचना यस्य भक्तिरसपरिप्लुता ।

पीयूषेण समादिव्या नामदेवं नमामि तम् ॥३॥

तत्त्वज्ञानैकनिष्ठोऽपि भक्तिप्रेम्णातु शैशवम् ।

स्वीकृतं येन वात्स्यल्यात् नामदेवं नमामि तम् ॥४॥

कीर्तने नृत्यमालम्ब्य ज्ञानदीपं प्रकाशितः ।

येन ज्ञानेश्वरसखं नामदेवं नमामि तम् ॥५॥

प्रल्हादोऽभूत कृते यस्तु त्रेतायां अंगदस्मृतः ।

द्वापरे चोद्धवःसाक्षात् नामदेवं नमामि तम् ॥६॥

योगादपि वरिष्ठं तं नामदेवं नमाम्यहम् ॥७॥

यो वै पंचनदप्रान्ते विठ्ठलख्यातिमुक्तवान् ।

धर्मे संरक्षिता लोका नामदेवं नमामि तम् ॥८॥

याचे त्वां परमोदारं दामेश जनवस्सल ।

वरदानंदहृदये ज्ञान भक्तिं विवर्धय ॥९॥

- स्वामी वरदानंद भारती

----

३. चरणानुक्रमणिका

चरण	अभंग क्रमांक
अंगा गोमती माता	६०.२.ब
अंगिकार केला वोजा	४०.१०.ब
अकळ विकळ निरंजना	५१.२.अ
अखंड वाहों लागल्या	३६.७.ड
अगाध महाविष्णूची	५०.८.ड
अगाध महिमा तुझा	५४.३.ड
अजानवृक्षाखालीं कथा	४९.६.अ
अजानवृक्षीं बीज वोल्हावा	४.२.क
अठरा हजार जाण	१५.१०.ब
अडखळोनि साउमे	४४.६२.क
अथवा द्विजा दिधलिया अन्न	३६.१०.क
अधर्म झालियां चाळक	५३.८.क
अनंत ऋषींचीं शतें	६१.७.अ
अनंत कल्पें गेलीं	६२.२.ड
अनंत तपें तपलें योगी	४८.६.क
अनंत तीर्थांचा मेळ	३९.३.अ
अनंत पुण्य जें गांठीं	४९.४.अ
अनंत बाहूंचा मेळ	४४.१०२.अ
अनंत ब्रह्मांडाधीशा	५१.८.अ
अनंत भक्तांचिया वोळीं	६२.३.अ
अनंत या नामाचा संकेत	४४.८५.अ
अनंत वैष्णवांचा मेळ	६३.३.अ
अनंत सुखाचिया रासी	३५.२.अ
अनादृश्या दृश्यमाना	४४.४६.अ
अनुभवीच जाणती	४२.५.ड
अनेक कीळा फाकती	४४.१०३.ड
अनेक पुण्ये घडले यागीं	४८.६.ब
अन्ने निपजवावीं	३०.१.ड
अपणामाजीं साठविला	५१.८.ड
अपार जीवजंतू	३५.१०.ड
अभंग चिरकाळ निरंतर	६६.७.ब

करूनियां रहीवास	५५.६.क
करें कुरवाळिलें ज्ञाना	५.५.अ
करेपाठार संवत्सरग्रामीं	३३.४.क
कर्ता आणि करविता	३०.२.क
कर्ता कार्यता तुज नमो	४४.५३.ड
कर्दळी वाढिन्नल्या सरळी	३०.९.क
कर्म धर्माचिया पंथा	४४.६४.ब
कर्मधर्म विधाता	४४.६४.क
कलिदोष हरावया	१५.१२.ड
कलियुगीं पुण्यश्लोक	१५.८.क
कलीमार्जी अवतरले	१५.४.ड
कलीमार्जी जन दोषी	१५.६.ड
कळिकाळ कोपलियां कोपें	१४.८.क
कळिकाळासी त्रास विठ्ठल उच्चारीं	२४.५.अ
कवण क्षेत्र कवण तीर्था	७.५.ब
कवण धर्म असे	७.५.ड
कवणा वर्णवेल पुरुषोत्तमा	३७.६.ब
कवणीयें युगीं	७.४.ड
कवतुक अवलोकिती	५९.५.ड
कवळ घ्यावया मुख पसरी	३२.९.क
कवित्वें तरेल हें सत्य	२०.३.ब
कां कलीमार्जी जन दोषी	१५.५.ब
कां गा ज्ञानदेवो गेला	१८.१.क
कां नामदेव जाणे सहज	६५.७.क
कांहीं एक किंचित सांगों	८.५.अ
कांहीं एक विनंति जगन्नाथा	६६.३.ब
कांहीं न करीं गा उद्वेग	२.६.ब
कामधेनूचें घृत	३१.७.अ
काय आम्हां तारिती	२८.५.ड
काय करील ब्रह्मांडनायक	५९.५.क
काय जाणें तुझा महिमा	४६.१.ड
काय यासी पुरुषोत्तमा	५८.२.ब
काय वर्णूं ते गुणगौरव	६३.८.क
कार्तिक मासीं शुद्ध एकादशीं	३.६.अ
काळ नमस्कारी वाकोडें	२६.५.ब
कासवीं अवलोकिला पान्हा	५.५.ब

जो करील सर्वथा	४८.७.ब
जो जप करील निर्धारें	४०.८.क
जो जो करील कीर्तन	३६.२.अ
जो जो दिवस उगवला	३५.९.अ
जो जो भक्त येईल स्नाना	३६.५.अ
जो जो भक्त येईल स्नानासी	३५.७.क
जो परिसील हे सृष्टीं	४२.४.ब
जो या लोकालोक वनमाळी	२१.२.ब
जो या सिद्धेश्वरीं करील पूजा	४.७.ब
जो यातें दृष्टीं न्याहाळी	१४.२.ब
ज्ञाता ज्ञेय विवेकघना	५१.२.ब
ज्ञान सोपान निवृत्ति	४३.३.अ
ज्ञान होईल जीवां सर्व	१८.६.क
ज्ञानउदयों प्रकाशितें	४३.१.ड
ज्ञानदेव	५०.५.ड
ज्ञानदेव आपण	११.२.क
ज्ञानदेव उभा जोडोनि हस्त	२.१.अ
ज्ञानदेव जन्मले	१४.९.ड
ज्ञानदेव ज्ञानआगरू	१८.४.ब
ज्ञानदेव ज्ञानसागरू	१८.४.अ
ज्ञानदेव झाला बोलता	२९.१.ब
ज्ञानदेव तरी तुमचाचि अंश	६५.११.अ
ज्ञानदेव तेथें नांदत	५०.२.क
ज्ञानदेव दरुषणें	१७.१.ड
ज्ञानदेव नामदेव पाहा हो	२५.७.क
ज्ञानदेव नामया	२०.२.ड
ज्ञानदेव निवृत्ती	५६.५.क
ज्ञानदेव प्रार्थना करी	५७.८.ब
ज्ञानदेव बैसलें समाधी	४०.४.अ
ज्ञानदेव ब्रह्म निघोट	१५.३.ड
ज्ञानदेव ब्रह्म होणें	१२.६.क
ज्ञानदेव भवसिंधुतारूं	१८.४.क
ज्ञानदेव मुक्ताई निरंतर	४०.५.ब
ज्ञानदेव म्हणे विठ्ठलासी	१.१.अ
ज्ञानदेव म्हणे स्वामी	४५.८.अ
ज्ञानदेव येतसे	२२.२.ड

ज्योतिर्मय रूप तुझें	४४.५१.अ
झणे तूं व्याकुळ होसी चित्तें	१८.८.अ
झाला मज	१.३.ड
टाळ मृदंग झणत्कारले	४०.१.ड
टाळ मृदंग झणत्कारी	५३.३.क
टाळ मृदुंग झणत्कार	४७.९.क
टाळी वाजवूनियां गजरी	५३.३.ब
टिळे उटी कपुर चंदनीं	३२.४.ब
ठायीं ठायीं दोष घडले	१५.१२.ब
डुल्लत बैसले	६३.४.ड
तंव सोपान सर्व निःसंग	५३.९.ब
तंव अंतरिक्ष गगनीं	१७.१.अ
तंव अंतरिक्षी गगनीं	४७.१.अ
तंव अक्रूरें पाचारिलें	३१.३.क
तंव अलंकापुरीं कीर्तनें	४०.१.क
तंव अष्टमहासिद्धी	३०.४.अ
तंव उतरली विमानें	६३.४.अ
तंव उतरलें निमिष एका	२२.६.ब
तंव उदयो पूर्वमेळीं	१६.१.क
तंव उद्धव विनवीत	५८.१.क
तंव उद्धवें आपण	३२.३.क
तंव कृपा करूनियां देवे	४१.१०.क
तंव गगनीं विमान दिसताहें	२२.५.ब
तंव ज्ञानदेवा करतलामळीं	९.८.क
तंव ज्ञानदेवें उभारिले बाहे	२७.८.ब
तंव तेथें नवल वर्तलें	२५.१.अ
तंव दिन अस्तमाना गेला	५७.५.ड
तंव दिव्यग्राम उभवुनि	३०.३.अ
तंव देव बोलती आपण	३१.८.क
तंव नयन माझे भुकेले	३४.६.क
तंव नावेक श्रीहरी	१९.१.अ
तंव निवृत्ती स्तुती करीत	५०.८.क
तंव निवृत्तीनें लोटांगण	५२.५.अ
तंव निवृत्तीसी उन्मनी	११.१.अ
तंव नेत्र उघडिले देवें	१९.८.ब
तंव पातला राजा इंद्र	३३.७.ब

तंव पातले गरुडदेव	१२.३.अ
तंव पातले सोपान	१०.३.क
तंव पुंडलिक पुढारला	५५.१.अ
तंव पुंडलिकें नमस्कार केला	३४.४.अ
तंव पुढारा झाला नारा	६.५.अ
तंव पुसती होय माता	१५.१.अ
तंव बोलत उद्धव	२६.१.अ
तंव बोलिला यादवराणा	२९.७.अ
तंव बोले रुक्मिणी	६५.९.क
तंव म्हणीतलें पुण्यश्लोकें	५५.८.क
तंव म्हणे रुक्मिणी	३२.५.अ
तंव रुक्मिणीने विनविलें	२१.१.ब
तंव रुक्मिणीनें विनविलें	३१.३.अ
तंव रुक्मिणीही निज मानसीं	६५.८.क
तंव विनवी ज्ञानदेव	५७.१.अ
तंव विस्तारोनि आणिलीं ताटें	३२.८.अ
तंव संत विनविती	५४.८.क
तंव सोपान म्हणे स्वामी	३३.४.अ
तंव स्नानसंध्या सारिली	१७.३.क
तंववरी इचे शरीर	६६.७.अ
तंववरीं हे समाधि स्थिरा	४८.४.ब
तटस्थ घटिका चारी	१९.१.ब
तप करूनि गेले	५०.३.ड
तप तपीन्नले चंद्रमौळी	६२.८.क
तया कृपा कैसी केली सहजा	५.८.ब
तया जन्मचि नाहीं	५४.७.क
तया जोडे वैकुंठस्थान	३९.४.क
तया ज्ञानदेवाचिया	५.५.ड
तया ज्ञानदेवासी	५.८.ड
तया नाकळसीच श्रीहरि	४६.५.ब
तया वंदिती इंद्रादिक	६४.६.क
तयां प्रसाद दिधला	४५.३.ड
तयांसंगें निरविली	४५.६.ड
तयामागें विक्रमशक	१५.८.अ
तयामाजी परब्रहम पुतळा	३८.६.ब
तयामाजीं परब्रहम पुतळा	३२.७.ब

तयासी आले पैं स्फुंदन	३८.१२.ब
तयासी पेणें वैकुंठीचें	४.६.क
तयासी श्रुत करावें	६०.७.अ
तरि तो तारिल सर्व जनां	४७.७.ड
तरि महादोष हरतील	४९.५.ड
तरि वैष्णव तोचि साचा	४७.४.ब
तरी अगाध पुण्य त्वरित	४९.८.ब
तरी उदार शूर महिमेचा	४६.४.अ
तरी ऐक गा तिथिये स्थितीसी	६६.५.क
तरी ऐकें गा तूं सकळार्था	९.३.ब
तरी ऐकें हो साचार चित्तें	१५.६.अ
तरी कां दुःख दिधलें आम्हांसी	१९.७.ब
तरी ज्ञानदेव हा पायाळ जाण	६६.११.अ
तरी ज्ञानासारिखा कां आतां	१५.१.क
तरी तुजसी हे गुह्य बोलिलों	२७.७.ड
तरी तूं गा युगानयुगीं	१८.११.अ
तरी तूं पाळिसी भक्तांचा लळा	४१.६.अ
तरी तो तरेल भूतळीं	४७.१०.ड
तरी तो माझा आत्मा साचा	२०.५.ब
तरी तो सकळ कुळ तारील	४७.९.ड
तरी त्यांत माझी कृपा	१.५.क
तरी नाथाचा हात इचिये शिरी	६६.६.अ
तरी नित्य वैकुंठवास जोडे	४.५.ब
तरी पंढरीहुनि हें श्रेष्ठ	३४.५.अ
तरी पांडुरंगा तूं दयाळु	४६.२.अ
तरी भक्तालागीं ऐसा	५४.५.अ
तरी वैवस्वतु हाचि मागो	८.५.क
तरी स्वामी दीनदयाळा	५५.५.अ
तरी स्वामीराजा विनंती	७.४.अ
तरीच ज्ञानदेव पडे दृष्टीं	४९.४.ब
तरीच रंगणीं मी नाचें	२०.८.क
तलालोरी वाजविती पावा	३१.२.अ
तलालौरी गीत वाजविती	३०.११.अ
तांबुल घेवोनि वदनीं	५७.२.क
ताटी बैसवा समस्तांसी	३१.९.ड
ताटीं विस्तारिलीं बोनें	३१.४.ब

तूं पूर्वी येथें होतासी	३९.५.ब
तूं प्रत्यक्ष शिवमूर्ति	१६.५.ब
तूं ब्रह्म नामा विशेषा	४४.५६.ब
तूं भक्त माझा निजसखा	३४.७.ब
तूं महद्ब्रह्मींचा अंश	४२.८.अ
तूं माझी जनक जननी	१९.६.अ
तूं मूळमाता जाणसी जरी	२७.७.क
तूं यासी पैं कारण	४४.६६.ब
तूं येथे उभा अससी प्रगट	३४.५.ब
तूं रक्षिता सर्व जीवांसी	१९.७.अ
तूं रें तयातें नेणसी	१८.३.क
तूं विश्वरूपपटाची घडी	४४.८३.अ
तूं विश्वात्मा विश्वरूप	४१.४.अ
तूं विसावा सर्वां जीवशिवा	५४.१.ब
तूं सकळ जीवांचा चाळक	४१.७.ब
तूं सत्वरजतमात्मक	४१.७.अ
तूं साहाकारी आमुचा	५०.७.ड
तूं साहाकारी होसी	५२.५.ड
तूं स्वामी दीनाचा होसी	२९.८.ब
तूं ही करितां पांडुरंग	५८.५.ब
तूंचि एक त्रिभुवनीं	१०.६.ब
तूंचि गा जनकजननी	१०.६.अ
तूंचि त्रिमूर्ती अवघा सकळ	४१.७.क
तूंचि श्रीविठ्ठला	५३.९.ड
तूंपणे परमाद्भुत	४४.८५.क
तृप्त जाला प्रेमें ओसंडत	३२.१०.ब
ते अंतरंग सखे माझे	४४.१०६.ब
ते आपुलाले ठाई स्थिर	३९.१.ब
ते उद्धरती सर्वथा	१५.१४.ड
ते उद्धरती सर्वदा	११.७.ड
ते कर्णीं परिसत जीवेंसी	१०.७.क
ते कळली मज	१.४.ड
ते कृपावंता सांभाळीं	४४.७४.ड
ते क्षेत्र प्रतिष्ठान	१५.१०.क
ते चतुर्भुज नर होती	३७.२.ड
ते चरण धन्य धन्य	४५.४.ड

ते तिष्ठती अहर्निशीं	३६.३.ब
ते तूं दयाळ सांभाळीं	४४.७७.ड
ते ते शुभ्र चंड सांभाळी	४४.७३.ड
ते दिनीं समारंभ केला	५९.४.अ
ते धन्य भूमि अलंकापुरी	२६.३.ड
ते पवित्र निर्मळ होती	४९.९.ड
ते पालटोनि तत्क्षणीं	११.१.क
ते पावती वैकुंठराज्यें	४९.१.ड
ते प्रत्यक्ष जाण पार्वती	१४.६.ड
ते प्रमाण आम्हांसी	५१.११.ड
ते बुझाविली पांडुरंगें	४५.६.ब
ते मागुती न येति	६७.३.क
ते मुराली आमुचिया भावा	३.१.क
ते शिरसा वंदीन	३७.३.ड
ते सांगती महाविष्णु	१५.५.ड
ते सिद्धीतें पावेल	१.७.ड
ते सुखी करूं कृतार्थ	३५.१.ब
ते हि अर्पिन तुज सदां	४४.६८.ड
तें ऐकावया देवें	४५.१०.क
तें ऐको बैसले	६३.६.ड
तें करी निर्विशेष	१८.१२.क
तें कैसें आईक	१८.३.ड
तें कैसें सभासदीं सम	६.८.ब
तें ज्ञान हृदयीचें माझें	४६.७.ब
तें तुझें रूप प्रसिद्ध	४१.९.ब
तें तूं सकळ वेगें सांभाळीं	४४.७५.ड
तें तूंचि जाणता	७.७.ड
तें ते क्षमा करी स्वामी	४४.४१.ड
तें तें सांगितला हेत	९.४.क
तें न सुटे निजकळे	४४.८४.अ
तें निधान देखिलें आम्हीं तुम्हीं	२४.२.ब
तें बोलतसे परम	६.८.क
तें मुख्य ठेवणें राणीव	४२.५.क
तें रूप फाडोवाडे पारखिलें	२४.६.ब
तें सांगिजेल पुढें	६२.१२.ड
तें सांगितला भाव	४२.५.ब

तें हे शिवक्षेत्र प्रत्यक्ष	२३.७.अ
तें हें अलंकापुरीं श्रेष्ठा	८.३.क
तें हें भीमा माहात्म्य प्रसिद्ध	३७.११.अ
तें हें स्थळ रे सोपाना	६१.७.ड
तेंचि आम्हासी जोडलें	८.८.क
तेणे चवकला उठिला	३८.११.क
तेणें एक शत पंचतीस	१५.९.अ
तेणें नमस्कार करूनि हरी	२१.४.अ
तेणें सकळही हित	१०.५.क
तेणें समस्त मंदिर शिंपिलें	३१.११.ब
तेणें स्वर्गमृत्युपाताळ गाजे	१२.७.ब
तेथ पवाडु मज कैंचा	४६.४.क
तेथवरी येणे घडेल	५१.९.ड
तेथींचे विभार्गी ज्याचें भाग्य पूर्ण	६६.१२.क
तेथील सुखप्राप्ती	६६.११.ड
तेथुनि वाट जावया पाहें	६०.६.ब
तेथून एक शक जाला	१५.७.क
तेथें अनुक्रमें	७.८.क
तेथें तूं धावोनि अनंत	४४.६९.क
तेथें देव्हडें उभे असती	३०.१२.ड
तेथें नामा वचन बोले	७.१.क
तेथें भ्रमर रुणुझुणु करिती	३०.१०.अ
तेथें शब्द भिन्नपणाचा	६५.१३.क
तेथें सकळ काम होती पूर्ण	३०.१४.क
तेथें सुगंध परिमळ	३०.६.अ
तेथेंहि केशव प्रत्यक्ष	२३.७.क
तेहतीस कोटी देव	३५.४.क
तेहतीस कोटी देवस्थळीं	६२.८.अ
तेहि नारायणें अंगीकारावी	४४.७९.ड
तैं अलंकापुरीं आदि लक्षा	८.६.ब
तैं नमनाची ऐसी सोये	४४.९७.ब
तैसा हा तुझा पवाडा	७.७.ब
तैसाचि करीं गा विठ्ठला	२३.२.ड
तैसाचि निवृत्तीस उदयें	५९.२.क
तैसाची अमृतानुभव	४२.६.अ
तैसीच वाल्मिकाची केली	३८.१.ब

तैसे तें मी नेघें	४४.७५.क
तो अंतरंग सखा पैं माझा	४.७.क
तो अभिमान सिद्धी नेला	६४.५.ड
तो ज्ञानासी पान्हा होये	९.७.क
तो तारिल सकळ लोकां	४३.८.क
तो तारील सकळ गोत्रां	१४.३.ब
तो तूं अलंकापुरी येसी	४६.६.अ
तो तूं आम्हां भक्तांसरिसा	४१.५.अ
तो तूं चतुर्भुज गोपाळ	४४.१०२.ब
तो तूं प्रकट श्रीरंगा	५५.२.अ
तो तूं मजकारणें आलासी	४१.९.ड
तो तो ज्ञानदेवें सफळ केला	३५.९.ब
तो तो तरेल जाण	३६.२.ब
तो दाखविला मज डोळा	४१.६.क
तो नर नवजाय यमपंथा	४९.६.क
तो नामयाचा पुत्र सैरा	६.५.ब
तो निक्षेपिला पूर्ण धन	३.४.ब
तो निजभाव सहज	८.१.क
तो पवित्र करावा या क्षणा	३६.५.ब
तो पावन होईल गोविंदीं	४७.८.क
तो पावेल गोपाळीं	४८.२.क
तो पुढें न पावेल व्यथा	४८.७.क
तो पुसतसे विचारा	६.५.क
तो पूर्ण बीजमंत्र आम्ही जाणों	२८.७.अ
तो प्राण असे तुमचा	६५.१३.ब
तो मनुष्यरूपें मेदिनी	५२.२.ड
तो मुकुटमणी हा हो श्रीहरी	२८.५.ब
तो म्यां बुझावोनि संबोखिला	४४.७०.क
तो या भक्तांबरोबरी तुके	६७.१.ब
तो येईल माझे भेटीं	४२.४.क
तो येईल वैकुंठग्रामीं	४७.५.क
तो वाहात येईल टाळी	१४.२.क
तो वैकुंठासि आणावा	३५.७.ड
तो सत्वांशु तोडीं माझा	४४.६१.ड
तो सांगा स्वामिया	५३.६.ड
तो स्फुंदत उकसाबुकसीं	३२.६.क

तो स्वयें श्रीभगवंत	६४.५.अ
तो हा अलंकापुरी ठावो	४८.६.ड
तो हा पर्वत इंद्रनीळ	६२.९.ड
तो हा पुण्यभूमि ठावों	४८.५.ड
तो हा वटेश्वर प्रतिमूळ	६१.३.ब
तो हा शालिवाहन	१५.१०.अ
तो हा सिद्धेश्वर अगाध	३७.११.ब
तो हा सुलभ ठावो रुक्मिणी	४८.९.ड
तो होईल निष्पाप	३६.९.ब
तो होईल विरक्त	५.७.ब
तोचि जाणे येथींचे	४४.९४.ड
त्या तूं सांभाळी परब्रह्म	४४.७१.ड
त्या त्या करूनि प्रविष्टा	४४.७६.क
त्या पुसती पुरुषोत्तमा	४८.३.ब
त्या मंत्रोक्त दिधली	५८.४.ड
त्या शोभती विठ्ठलचरणीं	३६.७.ब
त्या समीप देखा कल्पतरू	२४.८.ब
त्यांचे मस्तकी वाहतसे	३१.१०.ड
त्यांतें सोडिलियां मुक्ति चारी	२८.५.क
त्यांसही हे तीर्थ सांगितलें	३७.५.ब
त्यांसीच होय हे प्राप्ती	६७.३.ब
त्याचा आत्मा तुम्ही हो अनंता	६५.१०.ब
त्याचे चरण वंदीन माथां	२७.५.ड
त्याचे पूर्वज उद्धरिती	४९.१.ब
त्याच्या शाखा अधोमूळ	६२.९.क
त्यावरी अलंकापुरी	३९.३.ड
त्यावरी करूनि चालिलों वाट	४४.८०.ब
त्यावरीं आरुढली	४३.५.ड
त्याविण गोड मज न वाटे	६५.३.अ
त्यासी ग्रास घालावा	३२.५.ड
त्यासी घेवुनि यावें	३६.५.ड
त्यासी ज्ञान होईल	४०.८.ड
त्यासी रुक्मिणी ताट करी	५६.६.ब
त्यासी वेद तुझा पाळी	४४.७१.क
त्यासी समाधि देणें लागेल	४५.५.ड
त्यासीही रुक्मिणी ताट करी	३१.१२.ब

त्याहि वरी सूक्ष्मता	४४.७४.क
त्याहूनि हे वो उदंडें	४८.८.क
त्रयोदशी म्हणे पांडुरंग	२.६.अ
त्रयोदशीं उत्तम थोर	४७.९.अ
त्रिभुवनीं आम्हांसी देखा	५३.४.ब
त्रिभुवनीं दुर्लभ	४९.१०.ड
त्रिमूर्ति तिन्ही देव	३५.५.ब
त्रिवेणीरूपी वाहातसे	२३.८.ड
त्र्यंबकशिखरासी	२९.१.ड
त्र्यंबकशिखरीं	२८.३.ड
थकली योगियांची ध्यानें	३०.१२.अ
थोडे घेतील कलियुगीं	१५.११.ड
थोर अनुष्ठान मांडिलें	६२.५.ड
थोर आथी	१.२.ड
थोर श्रेष्ठ येथील महिमा	४८.३.क
दक्षिणें पुण्येश्वर देवो	२३.८.अ
दम शम समान	४४.६५.अ
दयाघना गुणनिधी	४४.३५.ड
दयामूर्ति परब्रह्मा	५५.७.ड
दशन कोटि सूर्यकिरणा	५१.५.क
दशमीं प्रस्थानाचा समयो	२.५.अ
दहा अवतार भूमंडळी	४१.८.क
दाउनियां उदास विशेष	४२.८.क
दाऊनी मनोहर राणीव	४२.६.क
दाखविजे नामया	२२.३.ड
दावुनिया मूढ तारियेले	२४.७.ब
दासा सुखसंपन्न करावया	३०.१५.ड
दिंडी जागरण आश्रमीं	४७.५.ब
दिंडी पताकांचा रोळ	६३.३.ब
दिंडीपताका मेळ गगनीं	३.७.क
दिधलें साचें ति अक्षरीं	४.६.ड
दिव्य अन्ने सावकाश	३८.५.क
दिव्य दृष्टी देवोनी	४१.६.ड
दिव्य देहीं दिव्य विमानीं	२२.५.ड
दिव्य द्रुमफळें प्रतिदिवस	३८.५.ब
दिव्य वनवल्ली जाण	२६.३.ब

दिव्य वाद्यें मंगळतुरी	४३.२.क
दिव्य विमानीं बैसविलें	२१.७.क
दिव्य सुमनें देवांगना	६०.४.अ
दिव्यवनें दिव्यवल्ली	३०.५.अ
दिव्यवनेंसी शोभती	३०.८.ड
दिव्यसुमनें समग्र झालीं	३०.५.ब
दीघड विघड सुघड	४४.५३.अ
दीन रंक विठोबाचे आम्ही	४५.८.ब
दीप्तादीप्त अदृश्ये	४४.४७.अ
दुजा न देखो सृष्टीसी	४०.९.ड
दुजा न देखों त्रिभुवनीं	३४.७.ड
दुजा न देखों नायकों कानी	५४.३.ब
दुरी जाय हरे विख	१८.१२.ब
दुरोनी लक्षित रुक्मिणी	२२.३.अ
दुसरी कृष्णपक्षीं निर्धारेंसी	३.६.क
दृढ धरिलीं निरंतर	५८.७.ड
दृशादृश्य नित्यघना	४४.४६.ब
दृश्य द्रष्टेपणेसी	४४.१०७.ड
दृश्यादृश्य झाली एकदृष्टी	१.६.क
देऊनि भूषणें अनेगें	४८.१.क
देऊनियां समाधी सोहळे	५२.८.क
देखिली विठ्ठलचरणारविंदें	६६.९.ब
देखिलें तितुकें नासे	४४.८८.क
देखिलें सकळिकीं	६६.१०.ड
देतु ज्ञानदेवा	११.८.ड
देव आकाशीं पाहती	५६.७.अ
देव ऋषिगण सकळीक	३३.८.ड
देव पाहती विमानीं	३०.११.ड
देव बैसोनि विमानीं	४७.१.ब
देव म्हणती इंद्रासी	३९.५.अ
देव म्हणती निवत्ति	१६.५.अ
देव म्हणती निवृत्तीसी	३३.३.अ
देव म्हणती पुंडलिका	३४.७.अ
देव म्हणती ब्रह्मा होय	१५.३.अ
देव म्हणती शिवाचा	५२.१.अ
देव म्हणती संतांसि पुसा	३३.५.अ

धन्य धन्य तो ज्ञान	६.२.अ
धन्य धन्य तो माधव	४२.२.ब
धन्य धन्य तो सोपान	६३.२.अ
धन्य धन्य तो सोपान	६४.२.अ
धन्य धन्य धरातळीं	१४.२.अ
धन्य धन्य धरातळीं	२१.२.अ
धन्य धन्य धरातळीं	३८.२.अ
धन्य धन्य धरातळीं	२५.७.ड
धन्य धन्य प्रश्नोत्तर	१६.२.अ
धन्य धन्य भाग्याचे तुम्ही	४५.८.क
धन्य धन्य मनोहर	४९.१०.ब
धन्य धन्य मनोहर	५६.८.ब
धन्य धन्य माझे नयन	२१.६.ब
धन्य धन्य येथिचे लोक	५०.४.क
धन्य धन्य विठोबाचे चरण	२१.६.अ
धन्य धन्य वृक्ष अजान	१७.२.अ
धन्य धन्य वैष्णव तुम्ही	४५.७.ड
धन्य धन्य समाधि धन	६३.२.ब
धन्य धन्य सिद्धेश्वरस्थान	१७.२.ब
धन्य धन्य सृष्टीतळीं	३७.२.अ
धन्य धन्य हरिदिवस	१०.२.अ
धन्य धन्य हा देवाधिदेव	२६.१.ब
धन्य धन्य हा निवास	१०.२.ब
धन्य धन्य हे तिघेजण	६५.५.अ
धन्य नामरूपीं संपन्न	२१.६.क
धन्य नारायण अलंकापुरी	३२.२.ड
धन्य प्रत्यक्ष देखिला	४१.२.ब
धन्य प्रत्यक्ष शूळपाणि	२६.२.ब
धन्य भाग्य नामयाचें	२३.१२.ड
धन्य भूमि अलंकापुरी	५.२.अ
धन्य युगानुयुगीं तुम्ही	२३.५.अ
धन्य विष्णुचरणींची गंगा	२८.२.अ
धन्य समारंभ येथिला	४१.२.क
धन्य हरिभक्तांचा मेळ	२२.२.अ
धन्य हे भूमिका देश	५३.५.अ
धर्मरक्षणार्थ पाहा हो	३५.५.क

नमन हाचि मुख्य भाव	४४.९०.ब
नमन हाचि विवेक	४४.९२.ब
नमन हेंचि आत्माराम	४४.८९.क
नमन हेंचि तारक	४४.९२.अ
नमन हेंचि थोर दिसे	४४.८८.अ
नमन हेंचि परम	४४.८९.अ
नमन हेंचि श्रेष्ठ पीठा	४४.९१.अ
नमन हेंचि सुवर्म	४४.८९.ब
नमना एवढा मंत्र	४४.९४.अ
नमनें करूनियां तुमची	४४.६३.क
नमनेंविण त्रैलोक्य	४४.९२.क
नमनेंविण न तरती	४४.९६.ड
नमनेंविण नैश्वर	४४.९६.ब
नमस्कार करिती गोपाळा	३४.१.क
नमस्ते नमस्ते नमस्ते	४४.९८.अ
नमो अद्वैत अनंता	४४.२५.अ
नमो अपरमित मिता	४४.३०.ब
नमो अवधूत दत्ता	४४.३०.अ
नमो आगमपरेशा	४४.५.ब
नमो आदि परेशा	४४.१६.क
नमो आदिपीठा	४४.९९.अ
नमो आलिया पदार्था	४४.४२.क
नमो इंद्रिये नियंत्या	४४.२९.अ
नमो उपरति निधाना	४४.७.ब
नमो एकाएकार्णव	४४.३८.अ
नमो एकार्णव पावका	४४.२३.ब
नमो ऐसिया रूपेशा	४४.१६.अ
नमो कल्पादि गुणवैभवा	४४.३८.ब
नमो कांसवदृष्टीसमा	४४.२२.क
नमो काळ कौतुहाळ	४४.१.अ
नमो काळ कौळुदाता	४४.१०.क
नमो कृत्रिमदहना	४४.२८.अ
नमो कृपा करी पुरुषोत्तमा	४४.२२.ब
नमो कृशकरणहरणा	४४.२८.ब
नमो क्षीर नीर निर्झरा	४४.३४.अ
नमो चक्रचालक गोपाळ	४४.१.ब

नमो चतुर खेददीप्ता	४४.३२.अ
नमो चमत्कार नागसर्पा	४४.३१.ब
नमो चित्त चकोर हर्त्या	४४.२४.अ
नमो चित्त विभ्रमा	४४.४३.अ
नमो चित्तचाळक भावा	४४.३.ब
नमो चित्तचिंतनी रमो	४४.३९.क
नमो चिदाकाशव्याप्ता	४४.३७.अ
नमो जगदादि अखिलस्तंभ	४४.१५.ब
नमो ज्ञानगम्याधीशा	४४.५.क
नमो ज्ञानरूप गमो	४४.१२.ब
नमो ज्योतिर्लिंग दीपिका	४४.४.ब
नमो तमहर्ता कर्ता	४४.१०.अ
नमो तितीक्षा दारूणा	४४.७.क
नमो तुंडवितुंड गेली	४४.२०.ब
नमो तुज कृत्य	४४.४१.ब
नमो तुज संजीवना	४४.५४.क
नमो तुज सहज	४४.५१.क
नमो तुजवांचोनि सखा	४४.५६.क
नमो तुजवांचोनि सत्या	४४.२४.क
नमो तेजसतेजसा	४४.६०.क
नमो त्रिगुणा तूं उद्भटा	४४.८.ब
नमो त्रिघंटी आदटा	४४.८.अ
नमो त्रैलोक्यविस्तार ठसा	४४.१६.ब
नमो दर्शन स्पर्शना	४४.७.अ
नमो दीनादित्या	४४.२९.क
नमो दुर्गतिहरणा	४४.२६.अ
नमो दृष्टदर्पदर्पा	४४.३१.अ
नमो देवेश्वरा सूक्ता	४४.३३.अ
नमो द्वादश अर्का	४४.२३.क
नमो द्विविधछेदका	४४.२३.अ
नमो द्वैतनिरसनसमो	४४.१२.क
नमो धार्य धैर्य नेमा	४४.४३.ब
नमो न देखों दुसरा	४४.११.ब
नमो नमन करितां	४४.९८.ड
नमो नमस्ते तुज	४४.९७.ड
नमो नमो एक तत्वा	४४.४९.अ

नमो नमो तारका	४४.५६.अ
नमो नमो तुज एका	४४.४.क
नमो नमो नम	४४.५८.अ
नमो नारायणा	४४.३३.ड
नमो नित्यानित्य सरता	४४.२५.क
नमो निर्द्वंर्द्वद्व भोक्ता	४४.२५.ब
नमो निर्धारनियता	४४.४२.अ
नमो पुरविसी आशा	४४.१९.क
नमो पुराण पुरुषोत्तमा	४४.४३.क
नमो पुरुषोत्तम परेशा	४४.१७.अ
नमो प्रतिपाळक राणा	४४.२८.क
नमो प्रपंच आकृत्या	४४.२९.ब
नमो भक्षक काळवेगा	४४.२७.ब
नमो भक्षक भुवना	४४.३५.ब
नमो भजनशीळ व्यापका	४४.४.अ
नमो भोक्ता न देखों	४४.५०.ड
नमो मधुरगीत नमो	४४.१८.क
नमो मायासंहारकेसरी	४४.१३.ब
नमो मुखदंतसदना	४४.३५.अ
नमो याचा माजी घरी	४४.१३.क
नमो राजेश्वर हरी	४४.९.अ
नमो रूपा अष्टदिशा	४४.२.क
नमो रूपादि श्रेष्ठा	४४.६.क
नमो वाचा वक्ता करी	४४.९.क
नमो वासना चक्रचाळी	४४.२०.अ
नमो विकृतीविकार	४४.२१.क
नमो विगळित संहारी	४४.९.ब
नमो विद्गद भानुकारा	४४.३४.ब
नमो विवेक सागरा	४४.३४.क
नमो विश्वप्रतिपाळ	४४.१.क
नमो विष्णुमूर्ती देवाधिदेवा	४४.३.क
नमो वेदान्त सागरा	४४.११.क
नमो व्यक्ताव्यक्त हरी	४४.१३.अ
नमो शांती दया क्षमा	४४.२२.अ
नमो शिव शिवेशा	४४.२.अ
नमो शिवशक्तिसमलिंगा	४४.२७.अ

नाना कीळ दीप्तीचे	३०.६.ड
नाना कोरिकें विस्तीर्ण	३१.६.क
नाना गंधें तुलसीमाळा	३४.१.अ
नाना गोत्र उच्चार	४४.७८.क
नाना चरित्रें खेळसी	४१.८.ड
नाना पत्र शाखा शोभत	३१.७.क
नाना परी बागडें धरिती	३०.११.क
नाना पुष्पी परिमळ आगरी	३०.८.क
नाना शाखांचे निर्धार	४४.७८.ब
नानापरी भात विस्तारिले	३१.५.क
नाभीकमळी धरी वैकुंठ	४४.९५.ब
नाम गाताती ये प्रीतीं	२०.६.ड
नाम घेतां तरती	२८.६.ड
नाम घेतां तरेल चराचर	४८.९.क
नाम नाना जन्म अवतार	४४.७८.अ
नामघोष गर्जत चालिले	६६.१४.ड
नामदेव परतोनि पाहे	२७.८.अ
नामदेव पुढारा चालत	२२.७.ब
नामदेवें आलिंगुनी प्रीतीं	२३.३.अ
नाममंत्राचिया आवृत्ती	६.१.ब
नामयाचा धरूनि हात	६५.१.अ
नामयातें संबोखोनि हरि	३२.९.अ
नामयाने धरूनि चरण	६५.१४.अ
नामयावरी स्वयंभ	२३.२.क
नामयासी	६.५.ड
नामस्मरण तुझें नित्य	१०.५.ब
नामस्मरणें एका चित्तें	१८.८.क
नामस्मरणें कोटी याग जोडी	४७.६.ब
नामस्मरणें तुमचेनी	२०.३.ड
नामा असे खेद करीत	२१.८.अ
नामा असे नाचत	४०.२.क
नामा असे शोकाकुलित	१३.६.क
नामा आणा बुझावुनि	३२.५.ब
नामा आनंदें डुल्लत	३२.१०.अ
नामा उभा असे सन्मुख	१.८.अ
नामा उभा तिष्ठत प्रेमें	७.८.अ

नामा खेदें क्षीण जाला जीवें	१९.८.अ
नामा गेला लोटांगणीं	३७.१२.ब
नामा जातो लोटांगणीं	३०.१३.अ
नामा जालासे सरता	२७.१.ब
नामा ज्ञानदेव भेटले	२२.८.अ
नामा झाला भयभीत चित्तें	१३.८.अ
नामा डौरवीन यांचे चरणरजें	३४.८.क
नामा तिष्ठत उभा द्वारीं	३१.१२.अ
नामा न राहे खेद करूं	२०.१.अ
नामा नाचे हरिचें द्वारीं	३३.१०.अ
नामा नाचे हरीचें द्वारीं	५८.८.अ
नामा नुघडी दृष्टीसी	२५.८.अ
नामा पंढरीये नाचत	३५.१२.अ
नामा पावला संतोषा	२२.६.क
नामा बुझावोनी तात्काळा	३२.७.क
नामा म्हणे अमृतकरीं	६०.८.अ
नामा म्हणे अलंकापुर	५६.८.अ
नामा म्हणे अलंकापुरी	४९.१०.अ
नामा म्हणे आले वैष्णव	३.८.अ
नामा म्हणे ऐका	४३.८.अ
नामा म्हणे ऐसी विंदानें	३०.१५.अ
नामा म्हणे ऐसीं देवें	६२.१२.अ
नामा म्हणे ऐसे लळे	५२.८.अ
नामा म्हणे ऐसें अंतरंग	४.८.अ
नामा म्हणे कैसें दिधलें	८.८.अ
नामा म्हणे कोटी तीर्थांचें	३६.१२.अ
नामा म्हणे चक्रचाळ	३९.१०.क
नामा म्हणे चतुर्दशीं	४७.१०.अ
नामा म्हणे जनार्दन	६१.८.अ
नामा म्हणे ज्ञान सोपान	१०.८.अ
नामा म्हणे ज्ञानउदयो	२.८.अ
नामा म्हणे ज्ञानउदयो	३८.१४.अ
नामा म्हणे ज्ञानदेव हा दातार	२४.११.अ
नामा म्हणे ज्ञानदेवाचें	२०.८.अ
नामा म्हणे ज्ञानदेवें	४१.१०.अ
नामा म्हणे तिन्ही देव	११.८.अ

निवृत्ति तुम्हां नाहीं भिन्नता	६५.१०.अ
निवृत्ति त्र्यंबकशिखरी	३५.१२.ड
निवृत्ति ध्यानीं निवाला	११.५.ब
निवृत्ति निधान	११.२.अ
निवृत्ति पाहे ज्ञानाकडें	११.६.अ
निवृत्ति मस्तकावरी	१६.७.क
निवृत्ति म्हणे नाना अवतारीं	५२.३.अ
निवृत्ति शिव ज्योतिर्मय	१५.३.क
निवृत्ति सोपान अंतरीं	३६.११.क
निवृत्ति सोपान ज्ञानदेव	३५.५.अ
निवृत्ति सोपान ज्ञानदेव निधी	२४.३.अ
निवृत्ति सोपान झडकरी	२८.८.ब
निवृत्ति सोपान नारायणें	१३.५.ब
निवृत्ति सोपान म्हणे हरी	३३.१०.क
निवृत्तिदेव तोचि अंजन	६६.११.ब
निवृत्ती आणि सोपानें	३०.१२.क
निवृत्ती ऐसा श्रेष्ठ गुरू	५३.६.अ
निवृत्ती मुक्ताई दोघे	४५.६.अ
निवृत्ती म्हणे आम्ही दीनें	५१.९.अ
निवृत्ती लागतसे चरणां	६०.४.क
निवृत्ती सोपान खेचर	४०.५.अ
निवृत्ती सोपान ज्ञानेश्वर	३९.७.क
निवृत्ती सोपान बोलवा	३१.९.अ
निवृत्ती सोपान मुक्ताबाई	५६.४.अ
निवृत्ती होसी	५२.७.ड
निवृत्तीसी दिधलें	५१.१२.ड
निवृत्तीसी म्हणे तुम्ही जावें आतां	२९.१.क
निश्चळ राहिला	१९.१.ड
निश्चळ राहिलीं आसनें	३०.१२.ब
निष्कलंक नाथा	४४.२२.ड
नीरे भिवरे संगमीं	५५.४.अ
नीरे भिवरेचें तीरीं	४६.३.ब
नीलोत्पल नीलवर्णा	५१.६.अ
नीळकंठ प्रथम नाम	६१.३.ड
नीळकंठ सभेसी	३८.९.ड
नीळकंठे धरियेली	२८.१.ड

मग उभविली गुढी	६६.१३.क
मग करद्वय जोडोनि बोले	६.७.क
मग कल्पक्षयी यथाकाळ	४०.७.क
मग काय आदरिले सोपानें	५१.९.क
मग किती काळीं भागीरथी	२८.४.अ
मग कैलासी मंदाकिनी सोम	२८.१.क
मग खणोनियां भूमिका	५९.७.अ
मग गरुडावरीं वळघले	५८.७.अ
मग गरुडासि पूजिलें	२१.७.अ
मग गर्जिन्नले जयजयकारी	५६.६.क
मग ग्रामलेखनाचा प्रसंग	५८.५.क
मग चहूंकरी हरीनें उचलिला	३२.६.ड
मग चहूंकरीं हरि घालितसे	३२.९.ड
मग चालिले विदग्द	३.३.क
मग जाऊं रे पंढरीसी	३४.८.ड
मग तया पुष्पक मंचकावरी	५७.६.अ
मग देताति आलिंगन	९.५.क
मग देव म्हणे तूं काय नेणसी	६६.५.अ
मग न बोले कांहीं	३५.२.ड
मग नामयासी सावध	२२.४.अ
मग नामा म्हणे विठोबासी	४.१.क
मग नेमिलियां तिर्थी	४७.३.अ
मग पांडुरंग यथावकाश	५.१.क
मग पाचारिला गरुड	५७.३.अ
मग पातले निर्मळ	१०.१.क
मग पाहोनियां शुभदिन	१७.४.अ
मग पुंडलिकासी सांगितलें	३७.३.अ
मग पुंडलिकें एकचित्त	५८.३.क
मग पुण्यपुरुष जन्म	१५.११.क
मग पुरोनियां उरली	२८.३.क
मग प्रत्यक्ष पूजिली मूर्ती	६.१.क
मग प्रत्यक्ष सरिता	६०.२.अ
मग प्रश्न आदरिला	१८.१.अ
मग बोलती ज्ञानदेव	४१.१.क
मग मीनली आपुलेनि मेळें	३६.६.ब
मग मौन्येचि राहिला	४६.५.ड

मी न देखें विटेवरी जंव पाउलें	३४.६.ब
मी न म्हणे अंडा अंड	४४.८१.ब
मी व्याकुळ होत आहे	१९.२.क
मी व्याकुळ होत आहे	१९.३.क
मी होतसे कासाविसा	१८.१०.क
मुक्ताई उद्धवा	६६.७.ड
मुक्ताई जंव करिती	५४.८.ब
मुक्ताई ते मूळमाता साचार	१५.४.ब
मुक्ताई देहभावचि सांडी	६६.१३.ब
मुक्ताई प्रत्यक्ष ज्योती	४३.३.ब
मुक्ताई भेटली लवकरीं	२८.८.क
मुक्ताई मुक्तरूपें पूर्ण	६५.५.ब
मुक्ताई म्हणे ज्ञानदेवा	२९.३.अ
मुक्ताई म्हणे देवाधिदेवा	३३.६.अ
मुक्ताई म्हणे देवाधिदेवा	५४.१.अ
मुक्ताई सिद्धी अलंकापुरीं	२४.३.ब
मुक्ताईची स्थिती कैसी	६६.४.क
मुक्ताईनें धरिलें चरण	१६.६.ब
मुक्ताईस वेगी आणवा	३१.९.ब
मुक्ताफळांचे घोस मिरवले	३०.७.क
मुक्ति तुम्हापाशी साचार	२७.४.ब
मुक्ति फलकट नैश्वर	२७.५.अ
मुक्ति सहजा झाली त्यासी	४.७.ड
मुखीं आरंभिलीं पवित्रें	३३.८.ब
मुगुट विराजित	५१.५.ड
मुगुट विराजित तेजाळ	४४.१०२.क
मूळपीठीं नागेंद्रीं पहा हो	२३.८.क
मृतामृत तुज नमो	४४.३६.अ
मृत्युलोकासि आला	३८.१२.ड
म्हणती केव्हडे भाग्य या दोघांचें	६४.४.अ
म्हणती ज्ञानदेवाच्या प्रसादें	६६.९.अ
म्हणती ज्ञानांजन उद्‌बोध	३.३.ब
म्हणती धन्य धन्य हे जन	३९.४.अ
म्हणती पाहा हो केव्हढें	२६.५.क
म्हणती पाहा हो भाग्याचे केव्हडे	६६.१०.अ
म्हणती पाहा हो महिमा	२५.३.क

येथें तप केलें गहन	६१.४.ब
येथें त्रिवेणी गुप्त असे	१४.६.अ
येथें देव येऊनि होती पक्ष	१४.७.ब
येथें नीळकंठ दयाळ	५०.३.क
येथें मिळोनियां ऋषिजन	६३.७.क
येथेंचि पैं केलें	१४.४.ड
येरु चरणीं रुळे	५.७.ड
येरु निघाला लघुलाघवें	६०.७.क
येरु म्हणे मी कृतकृत्य	१०.५.अ
येरू धांवे लवडसवडें	११.६.ब
येरू म्हणे स्वामीने सांगितलें	३७.३.क
येऱ्हवीं हें नाकळे	४४.८४.ब
येवों अलंकापुरीं ग्रामी	३७.४.क
योगबुद्धि जुनाट	८.२.ड
योगा रूढ परतत्वा	४४.४९.क
योगिनीमाता प्रत्यक्ष	६१.५.ड
योगियांचा विश्राम	५४.४.ब
योगीयासी पैं नाहीं	४४.५६.ड
योनींचिया कष्टा	४४.७६.अ
र तुजवांचोनि सर्व सत्ता	४४.५०.क
रंगारंगीं विठ्ठलीं	१८.११.ड
रंभा उर्वशी नाचती	३८.१०.अ
रक्षिता हरिभक्तां तुज नमो	४४.१०.ड
रजतमाचे मेहुडे	५१.७.अ
रत झालों तुझ्या चरणीं	४४.७६.ड
रत्न आणि कीळ	६५.१२.क
रत्नखचित दामोदरें	३०.७.ड
रत्नमुक्ताफळें अलंकार	४८.१.ड
राउळ बैसलें असे सहजीं	६.६.ब
राजा निवृत्ति निधान	६.२.ब
राजा भोज उत्तम	१५.११.ब
राजे भ्रष्ट यवन झाले	१५.१२.अ
रातोनी येथें बसले	३९.६.ड
रात्री समई त्या दिप्ताकार	६२.१०.क
रामकृष्ण अवतार	४०.३.अ
रामकृष्ण उच्चारित	२६.४.ड

रामकृष्ण गोविंद	१८.८.ड
रामकृष्ण गोविंद	२७.६.ड
रामकृष्ण नामें कल्लोळ	६३.३.क
रामकृष्ण म्हणतांचि	५३.२.ड
राया विठोबा सांगातें	५८.६.ड
राहतील देवराया	३४.६.ड
राहिलास युगें अठ्ठावीस	५५.६.ब
राही माता गोपी सर्व	१२.३.क
राही रखुमाई माता	१३.३.अ
राही रखुमाई सत्यभामा	२५.३.अ
राही रुक्मिणी विचक्षणें	३१.४.क
राही रुक्मिणी सत्यभामा	५६.३.अ
राहो हे निरंतर	४०.६.ड
राहोनि करिती जयजयकार	३९.१.क
राहोनि तारिले मूढ जन	२४.१०.ब
रुक्मादेवी विठोबाच्या	६०.४.ड
रुक्मिणी आणि जेथें वैकुंठें	३२.८.क
रुक्मिणी आदिकरूनि	२९.३.ड
रुक्मिणी पुसे देवासी	१५.५.अ
रुक्मिणी मातेच्या द्यावें	२९.४.क
रुक्मिणी म्हणे यातें तत्वतां	२७.१.क
रुक्मिणी म्हणे स्वामी	१५.१३.अ
रुक्मिणी वाढितसे	३१.६.ड
रुक्मिणी सत्यभामा भाव	१२.३.ब
रुक्मिणी सत्यभामा राही	५६.४.क
रुक्मिणीसी विचार करी	३०.१.ब
रुणुझुणु रुणुझुणु	४४.१०५.अ
रुणुझुणु रुणुरुणु पावे वाजती	२५.६.ब
रुद्रादित्या वसु पैं गा	४४.२७.क
रूक्मांगद सूर्यवंशी	२५.४.ब
रूप पाहातां डोळियां दोंदें	६६.९.क
रोमरंध्री ज्या अखंडें	५२.२.क
रोमरंध्रीं ब्रह्मांडें	४४.८२.अ
लक्ष्मी न सांडील त्यास	४९.७.क
लक्ष्मीनारायण क्षितीं	५९.८.क
लघिमा आणिमादि सिद्धी	४७.२.क

लवलाहे उघडीं दृष्टी	१०.४.क
लागलिया मंगळतुरे ध्वनी	१३.२.अ
लागें आम्हां	१०.६.ड
लोटांगण टाकिलें गाढ़ें	४६.१.ब
लोहोगिरीं सुवर्णाचळ	३९.३.क
लोहोगिरीसी येथून	३७.९.ब
वंदिलीं विठ्ठलपाऊलें	६.७.ब
वक्ते श्रोते ग्रंथकार	४२.९.ड
वचनेंचि विसांवा	१.३.क
वटेश्वरीं प्रतिभें	६१.२.क
वदलिया चारी	४४.५८.ड
वदोनियां गेले	४७.४.ड
वर देऊनि अधिकारी	४६.८.क
वर देऊनि राहिला	४४.१०८.ड
वरकडाचा तो पाड किती	६४.६.ड
वरी आरुढले प्रचंडें	५९.१.क
वरी ठेवोनियां अभय करू	४४.१०८.क
वरी मिरवें मुगाचें वरण	३१.६.अ
वरी वासना होती भ्रष्टा	४४.७६.ब
वरुषताती दिव्य सुमनीं	४७.१.क
वरुषती दिव्यसुमनें	१३.५.अ
वर्णावया सामर्थ्य	४६.४.ड
वसिष्ठगीतेची टीका	४२.७.अ
वसिष्ठादिकीं अंगिकारिली	३८.१.क
वसू कोटी गणेश	३८.४.क
वाउगाचि वाहे सोसु	४४.६१.ब
वाग्स्नेहो वाग्बुद्धी	५८.४.ब
वाचाळ वाक्पुष्पी	४४.९.ड
वाट पाहसी हरी	४६.३.क
वाढितसे रुक्मिणी	५६.२.ड
वाढिती अन्ने नानाविधं	५६.४.ड
वामभागीं पिंपळ क्षितीं	४०.४.क
वास केलिया नित्य काळ	४९.५.क
वाहातां इंद्रियांची ग्रामें	४४.६२.ब
वाहुनि तुळसीमंजिरी	३८.१३.क
विचारिल क्षणमात्र	४४.९४.क

विविधतिमिरनाशा	४४.१९.अ
विवेकप्रत्यया पैं नमो	४४.२४.ड
विश्व उद्धरीत तेणें करूनि	६७.२.ड
विश्व तारिलें कीर्तनें	६२.६.ड
विश्वकर्मा येऊनी	३०.३.क
विश्वप्रियो	५१.२.ड
विश्वरूपा जगन्निवासा	१८.१०.ब
विष्णमूर्ती चतुर्भुज	३१.१.ड
विष्णुतीर्थे करूनियां	२८.४.ड
विष्णुधर्म प्रतिष्ठिला	५२.८.ड
विष्णुभक्त सखा माझा	२१.६.ड
विष्णुभक्त साचार	२६.८.ड
विष्णुभक्तालागीं	५०.१.ड
विष्णुभक्तिसी ज्याचा निर्धार	२७.५.क
विष्णुमार्गी लाविलें	५२.६.ड
विष्णुमार्गीची सकळ सिद्धी	५२.७.ब
विष्णुमूर्ति पांडुरंग	५१.४.क
विष्णुमूर्ती चतुर्भुज	३१.१०.अ
विष्णुमूर्तीसी लीन जाला	२५.८.ड
विष्णुविण कांहीं नेणों	२८.७.ब
विष्णुविण कीर्तन न करी	२७.६.अ
वृत्तांत सांगे येथींचा	२१.३.ड
वेगीं तुष्टले हरिहर	४५.२.क
वेगीं यावें वैकुंठ शिखरासी	२९.२.ब
वेगु कीजे ज्ञानदेवा	२२.७.ड
वेणु वाजविती सुस्वरें	५७.६.ड
वेणु वाजविसी सुस्वरें	४४.१०४.ड
वेणुनाद परब्रह्मीं	५५.४.क
वेदघोष आरंभिले	५९.७.ड
वेदघोष आरंभिले	६०.३.ड
वेदघोष करिताती	६३.७.ड
वेदध्वनी केलीया मुनी	१३.१.अ
वेदपुरुष तूं संपन्न	६३.७.ब
वेदशास्त्रपुराणीं	५४.३.क
वेदादि तूंचि कर्ता	४४.५०.ब
वैकुंठ उतरलें मेदिनीं	३०.१३.ब

साही नाडी चक्र भमे	४४.६२.अ
सिद्ध झाली रुक्मिणी	५७.५.क
सिद्ध मार्ग असे	९.३.ड
सिद्ध साधक अहर्निशी	६३.५.ब
सिद्ध साधकाचें स्थळ	४९.५.अ
सिद्धपीठीं केला भाव	४२.६.ब
सिद्धसाधकाचे स्थळ	६१.३.अ
सिद्धि होती तात्काळ	३७.७.ड
सिद्धेश्वर शोभे स्थानीं	२३.१०.क
सिद्धेश्वरलिंग समर्थ	५०.२.ब
सिद्धेश्वरलिंग सिद्धिबुद्धिदाता	२४.९.अ
सिद्धेश्वरलिंगीं	१०.१.ड
सिद्धेश्वरीं मिळोनि सकळीक	१२.८.ब
सुंदर तूं श्यामतनु	४४.१०५.क
सुकाळ झाला स्वानंदाचा	६४.८.क
सुख पोहे घातली	६४.७.ड
सुख सर्वदा भोगिती	५७.१.ड
सुखरूप जगज्जीवना	४४.४६.क
सुखसंतोषें बोलती	५७.२.ड
सुखें संवादती निजगजरें	३०.१०.ड
सुग्रह परी नमो	४४.४५.ब
सुवर्णाचा अश्वत्थ	३६.८.अ
सुवर्णाचा अश्वत्थ	४९.७.अ
सुवर्णाचा पिंपळ तिहीं लोकी ठाउका	२४.८.अ
सुवर्णाचा शोभत	४०.४.ड
सुषुप्तीचे जन सत्य	४४.४१.अ
सूक्ष्म अविचार बोला	४४.७०.अ
सूचना जे चमत्काराची	४४.६८.क
सूर्य लोपे तेजाकारी	४३.६.क
सूर्याचा झाला	१६.१.ड
सेज घालुनी सुमनीं	१३.७.अ
सेवंती बटमोगरे नाना परी	३०.८.ब
सोडविसी वासनामयें	४४.६९.ड
सोडील देह	६६.६.ड
सोपान आलिंगिला	११.५.क
सोपान गम्य गूढ	५७.३.क

हें शिवपीठ शिवाचें	४८.५.अ
हें संतीं जाणितलें ज्ञानें	१२.६.ब
हें सांगावें जी कृपावंता	६६.३.क
हें सांगिजो जी समर्था	७.५.अ
हें हृषिकेशी सांगावें	६६.४.ड
हें हें भूतभौतिक प्रचंड	४४.६७.अ
हेंचि ज्ञानसंजीवनी	१४.१.क
हेंचि नवल	५२.१.ड
हेचि पुरी पुरातन	८.७.ड
हेहि अवतार हरीचे	३९.७.ड
हो म्हणती तीर्थें सकळें	३६.६.अ
होईल समाधीसी होय स्थिरू	५३.६.ब
होऊनी साहाकारी	६०.१.क
होतां गातां हरीचे गुण	१५.१४.क
होती विष्णुमात ऐशी	६२.५.ब
होय म्हणती चक्रपाणि	२६.६.ब

ग्रंथ व हस्तलिखिते यांविषयी विनम्र आवाहन

ग्रंथ व हस्तलिखिते ही ज्ञानाचा खजिना आहेत, अनेक घरात बंदिस्त कपाटात हा दुर्मिळ खजिना धुळीत लोप पावत आहे. आम्ही आपणांस विनम्रपणे आवाहन करतो की, आपल्याकडे असलेले छापील व हस्तलिखित साहित्य, नियतकालिके, मासिके (जुनी,नवीन) 'संस्कृत ग्रंथालया'कडे जमा करावे. या ग्रंथालयाकडे संस्कृत वाङ्मय व संत साहित्य विषयक दुर्मिळ ग्रंथ जमा आहेत . अनेक अभ्यासक, संशोधक यांचा लाभ घेत आहेत. आपला बहुमूल्य ठेवा पुढच्या पिढीला ज्ञानासाठी मिळत राहील. तरी आपण सहकार्य करावे.ही विनंती.

इच्छुकांनी पुढील पत्त्यावर संपर्क साधावा.

गीर्वाणज्योति संस्कृत ग्रंथालय,
कारंजकरनगर, पारशी विहिरीजवळ,
विलासपूर, सातारा – ४१५ ००१
(सं.क्र. ९८२२०९७५०७)
E-mail: geerwanlib@gmail.com



गीर्वाणज्योति प्रकाशन

संस्कृत नेट/ सेट परीक्षा देणाऱ्यांसाठी सुवर्ण संधी

Subject code = 25

संस्कृत NET/ JRF/ SET

online सराव प्रश्नपत्रिका

- अभ्यासक्रमातील १० ही घटकांवर प्रश्न
- प्रश्नांची पुनरावृत्ती नाही
- प्रश्नांची तात्काळ उत्तरे
- प्रगती आलेख
- प्रतिसंच= १२ प्रश्नपत्रिका = १२०० प्रश्न
- सोडवलेली प्रश्नपत्रिका अनेकदा सोडवू शकता
- मोबाईलवर देखील प्रश्नपत्रिका सोडवू शकता

Subscribe करण्यासाठी खालील link वर click करा.

https://forms.gle/k9cEunP8ahTJXWKr5

SUBSCRIPTION FEE:

प्रति संच = रु.५००/-

एकूण ३ संच= रु.१५००/-

नमुना प्रश्नपत्रिकेसाठी खालील link वर click करा.

https://forms.gle/AHZYx35me7i1em687

पैसे भरण्यासाठी संपर्क :-
गीर्वाणज्योति प्रकाशन,
पारशी विहिरीजवळ, कारंजकरनगर,
विलासपूर, सातारा, महाराष्ट्र ४१५००१
भ्रमणध्वनी ९१+ : ९८२२०९७५०७

ONLINE PAYMENT:

ACCOUNT NAME – GEERWANJYOTI

ACCOUNT NO. 037004042209195001

IFSC - CSBK0000370

BANK NAME - CATHOLIC SYRIAN BANK (CSB)

BRANCH – SATARA

UPI- geerwanajyotiprakashan@oksbi

Gpay- 9822097507













गीर्वाणज्योति प्रकाशन, सातारा

1. मैत्री शुद्धलेखनाशी, प्रा.गजानन चव्हाण , डॉ.शिवदास जाधव
2. छात्र संस्कृत शब्दकोश, डॉ.शिवदास जाधव व डॉ. नीलेश जोशी
3. Experimental Psychology, Maragam
4. निवडक अप्रसिद्ध उपनिषदे, डॉ. नीलेश जोशी
5. भामिनी विलास: प्रास्ताविक – अन्योक्ति – विलास:,डॉ.शिवदास जाधव
6. सार्थ निघण्टुकोश,डॉ. नीलेश जोशी
7. विभक्त्यर्थ प्रकरण, डॉ.शिवदास जाधव, डॉ. नीलेश जोशी
8. संज्ञाप्रकरणम्, डॉ.शिवदास जाधव
9. महात्मा गांधीप्रणीत शिक्षण संकल्पना, प्रा. सुरेखा मत्सावार
10. The Glorious Symbols of India as UNESCO's World Heritag, Prof. Sandeep Dhikale
11. अभितः परितः, डॉ. सौ. प्रज्ञा शरद देशपांडे
12. अनन्तयात्रा , ज्योती पुजारी
13. अथातो ब्रह्मजिज्ञासा- डॉ. शैलजा बापट
14. साहित्यदर्पणः- प्रथम-परिच्छेदः- डॉ.शिवदास जाधव, डॉ. नीलेश जोशी
15. पाण्डुरङ्गाष्टकम् डॉ.शिवदास जाधव
16. श्रीकल्किस्तोत्रम् डॉ.शिवदास जाधव
17. श्रीज्ञानेश्वर महाराजांच्या समाधीचे अभंग

- Contact Us:
- Geerwanjyoti Publication,
- Karanjkarnagar, Near Parashi Vihir, Vilaspur,
- Satara, Maharashtra, India. 415001 Contact Us: Mobile: +919822097507